॥ श्रीः ॥

कालिदास-साहित्य एवं सन्दर्भ

लेखक

आचार्य डॉ. वनेश्वर पाठक, एम. ए., डी. लिट.

(उत्तरप्रदेश शासन द्वारा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित)

अध्यक्ष—संस्कृत विभाग

सेंट जेवियर्स कॉलेज, राँची (बिहार)

प्रकाशक :

ज्योति

पटना, राँची, वाराणसी

भूमिका—के दो शब्द

डॉ. भगवतशरण उपाध्याय (उज्जैन)

आचार्य डॉ. वनेश्वर पाठक ने अपनी महत्त्वपूर्ण कृति 'कालिदास—साहित्य एवं संदर्भ' की भूमिका लिखने का कार्य सौंप मुझे गौरवान्वित किया है। यह सही है कि मैंने कालिदास के साङ्गोपाङ्ग अध्ययन में एक जीवन काल लगाया है जिसके परिणाम स्वरूप मेरा magnum opus अंग्रेजी में India in Kalidasa प्रकाशित हुआ। उसी का हिन्दी रूपान्तर पीछे छपा। पर इन सब प्रयासों से अधिक आवश्यकता कालिदास सम्बन्धी एक Bibliography की थी। कालिदास देश, विदेश में इतने लोकप्रिय हैं कि उनपर पुस्तकों और लेखों के रूप में हजारों उपक्रम हुए हैं-एक जंगल ही उग आया है। पर उनको एकत्र कर प्रकाशित अबतक नहीं किया जा सका। उज्जैन में कालिदास-समारोह प्रायः बाईस वर्षों से हो रहा है। दो साल से वहाँ एक कालिदास-अकादमी कायम है, जिसका पहला काम बिब्लिओ-ग्राफी का प्रकाशन होना चाहिए था।

बिब्लिओ ग्राफी की दिशा में बहुत काम होना है। कुछ साल पूर्व नेशनल लाईब्रेरी, कलकत्ता, में डॉ. रामदुलार सिंह द्वारा बड़े परिश्रम से प्रस्तुत एक बृहद् बिब्लिओ ग्राफी देखी थी, परन्तु शायद वह प्रकाशित नहीं हुई। इसी से विशेष डॉ. पाठक के इस प्रयत्न के प्रति मेरी ममता स्वाभाविक हो गई है। आशा करूँगा कि इसका प्रकाशन शीघ्र ही होगा और विद्वानों-शोद्यार्थियों का इससे कल्याण होगा, मल्लिनाथ की 'संजीवनी' फिर चरितार्थ होगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ अत्यन्त घनी साधना से लिखा गया है। इसके निर्माण के लिए डॉ. पाठक का मैं साधुवाद करता हूँ और मैं बड़ी उत्सुकता पूर्वक इसकी प्रकाशित प्रति की प्रतीक्षा करूँगा। कालिदास के अध्ययन की दिशा में यह ग्रन्थ मील का पत्थर सिद्ध होगा।

उज्जैन — भगवतशरण उपाध्याय

२५।३।१९८१

सम्वर्द्धना

आचार्य बदरीनाथ शुक्ल

कुलपति

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

कालिदास भारत के महान् कवि एवं नाटककार हैं। भाषा वर्णनीय वस्तु और इसे प्रस्तुत करने की शैली ने इनकी कृतियों को विश्वप्रिय बना दिया है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मनुष्य की एक ऐसी जीवन-चर्चा का निर्देश किया है जो जीवन के यथोचित विकास के लिए पूरी मानवजाति के लिए उपादेय है। कालिदास की रचनाओं की विशेषताओं से आकृष्ट होकर देश-विदेश के विद्वानों ने अपनी-अपनी भाषाओं में उन्हें अनूदित किया है और उनकी आलोचना कर उनकी गरिमा को प्रकाश में लाया है। उनके ग्रन्थों के सम्बन्ध में देश-विदेश में वहुत लिखा जा चुका है।

अब यह आवश्यक हो गया था कि कालिदास तथा उनके ग्रन्थों से सम्बन्धित सभी कृतियों का विद्वत्तापूर्ण संकलन प्रस्तुत हो जिसके आधार पर उनके व्यक्तित्व और कृतियों का व्यापक अनुशीलन हो सके और उनके वैदुष्य की विश्वव्यापिनी प्रतिष्ठा का पूरा चित्र प्रस्तुत हो सके।

मुझे प्रसन्नता है कि इस आवश्यक एवं जिज्ञासु जनों के लिए अपेक्षित उपयोगी महनीय कार्य को विद्वत्प्रवर श्रीबनेश्वरपाठक ने सम्पन्न करने का सङ्कल्प किया और 'कालिदास-साहित्य एवं सन्दर्भ' नाम की पुस्तक की रचना कर साहित्य-जगत् की चिराकाङ्क्षा की पूर्ति की है। इस पुस्तक के सम्बन्ध में मैं कुछ विशेष इस लिए नहीं कहना चाहता जिससे अध्येताओं की दृष्टि मेरी पहुँच की परिधि में ही सीमित नहीं रह जाय, वे इसकी महत्ता का आकलन अपनी रुचि एवं प्रतिभा के आधार पर स्वयं कर सकें। इस ग्रन्थ को लिखने के लिए श्रीपाठकजी को धन्यवाद देने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

वाराणसी
दि. १५।३।८१

बदरीनाथ शुक्ल

कालिदास की कृतियों का विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता रही है, जिसमें उन सभी लेखों और ग्रन्थों का उल्लेख होता, जो कालिदास की रचनाओं के अनुशीलन पर आश्रित हैं। आचार्य डॉ० वनेश्वर पाठक ने इस आवश्यकता की पूर्ति वैज्ञानिक विधि से देश-विदेश में प्राप्तव्य सामग्री संजोकर की है। विद्वत्समाज उनके इस कृतित्व का ऋणी है।

आशा है, पाठक जी भविष्य में भी इस प्रकार अनुसन्धान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रचनाएँ देकर संस्कृत-प्रेमियों की सहायता करते रहेंगे।

५, नन्दनगर, वाराणसी–५
२७/१०/८१

रामजी उपाध्याय

कालिदास साहित्य विश्व का प्रमुख आकर्षण है। कवि, समालोचक, इतिहास-गवेषक और रसिकों ने विभिन्न पक्षों पर मौलिक विचार प्रकाशित किए हैं। सभी उपादेय हैं। अगले अध्ययन के लिए ये विचार आवश्यक सोपान हैं, अतः नवीन अध्येताओं को इनका व्यवस्थित रूप सुलभ कराना युगीन आवश्यकता है। इसके लिए एक ओर जहाँ विद्वान् लेखकों के धैर्य और तप की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर वैसे प्रकाशकों की। ऐसे कुछ कार्य पहले भी हुए हैं, किन्तु हिन्दी भाषा में इस ढंग का यह पहला ही कार्य है जो ग्रन्थ रूप में प्रकाशित हो रहा है। कालिदास की भाषा में यह कार्य कालिदास के अध्ययन रूपी मणि में माला की योग्यता के अपेक्षित सूचीवेध है। डॉ० वनेश्वर जी पाठक हैं इसके कृती निर्माता। संस्कृतभाषा के विद्वान् और शोध की नवीन पद्धति के वेत्ता डॉ० पाठक का यह कार्य मुझे अत्यधिक लाभप्रद और विद्वानों के लिए भी उपयोगी लगा। इसके प्रकाशन से मुझे अपनी कालिदास-ग्रन्थावली के प्रकाशन जैसी ही प्रसन्नता है।

डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
साहित्याचार्य, एम. ए., पी. एच. डी, डी. लिट.
अध्यक्ष—संस्कृत-साहित्य-विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
२७/४/८१

विनम्र निवेदन

१९७८ ई० में मैंने पूना में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या-सम्मेलन (All India Oriental Conference) के अवसर पर एक निबन्ध पढ़ा था—'कालिदासस्य साहित्यम्'। इस विशालकाय (८९ पृष्ठात्मक) निबन्ध के माध्यम से मैंने (१) कालिदास की रचनाएँ (प्रामाणिक तथ्यानुसार), (२) कालिदास की रचनाओं का कालक्रम, (३) कालिदास की रचनाओं के संस्करण (भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में), (४) कालिदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के सम्बन्ध में लिखित ग्रन्थ एवं निबन्ध (विदेशी तथा भारतीय भाषाओं में) इन विषयों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया था। कालिदास के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ० श्रीधर वासुदेव सोहनी (आई. सी. एस.) ने उस निबन्ध के प्रति अपनी विशेष अभिरुचि दिखाई थी।

गत वर्ष उज्जैन में 'कालिदास-समारोह' के अवसर पर मैंने डॉ. भगवत-शरण उपाध्याय (सम्प्रति मारिशस में भारतीय राजदूत) से अपने उक्त निबन्ध की चर्चा की। उन्होंने सहर्ष अपनी सदिच्छा व्यक्त की कि हिन्दी में इसका प्रकाशन कराया जाय। भारतीय पुरातत्त्व के यशस्वी विद्वान् डा० उपाध्याय जी ने कालिदास के अध्ययन-मनन एवम् अनुसन्धान में अपने जीवन का अधिकांश समर्पित कर दिया है और वे अभी भी इस कार्य में अश्रान्त निरत हैं। उनकी सदिच्छा से समुत्साहित होकर मैं उज्जैन से लौटने के बाद इस कार्य में लग गया। मैंने सबसे पहले अपने उक्त संस्कृत निबन्ध का हिन्दी रूपान्तर किया। उसके बाद मैं और अधिक सामग्रियों का सङ्कलन करने लगा। सामग्रियाँ बहुत मिलीं। फलतः, वह निबन्ध आज पुस्तक के रूप में प्रकाश में आ रहा है। पुस्तक के प्रकाशन की अवधि में भी सामग्रियाँ मिली हैं। विलम्ब से प्राप्त सामग्रियों का समावेशन अगले संस्करण में किया जाएगा।

कालिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र अध्ययन अतिशय श्रमसाध्य तथा समयसापेक्ष है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में विभिन्न भारतीय तथा भारतीयेतर भाषाओं में लिखे गए ग्रन्थों एवं निबन्धों की इयत्ता नहीं है।

कालिदास के सम्बन्ध में निरन्तर कार्य होते जा रहे हैं। मुझे उन सब का सङ्कलन करने में कठिनाइयाँ हुई हैं। परन्तु कालिदास के सारस्वत प्रसाद से इस पुस्तक को प्रकाशित देखकर मैं उन कठिनाइयों को भूल रहा हूँ—"क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते।"

मेरे इस लघु प्रयास को कालिदास के समान ही पूर्व सूरियों का सहारा मिला है। इस ग्रन्थ में जिन पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की शरण लेनी पड़ी है उन सभी के लेखक विद्वानों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करना मैं अपना पवित्र कर्तव्य मानता हूँ। इस प्रसङ्ग में मैं डा० भगवतशरण उपाध्याय, डा० आद्याप्रसादमिश्र, डा० रामजीउपाध्याय, डा० रमाशंकरतिवारी तथा डा० सत्यपाल·नारङ्ग का नामतः उल्लेख करना चाहता हूँ। इनकी रचनाओं से जिनका उल्लेख मैंने इस ग्रन्थ में किया है— मुझे विशेष सहायता मिली है। मैं इन महनीय मनीषियों का ऋणभार साभार स्वीकार करता हूँ।

कालिदास के सारस्वत प्रसाद के अप्रतिम पात्र डा० भगवतशरण उपाध्याय ने इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति को अपने प्रसाद से अनुगृहीत किया है और इसके लिए 'भूमिका के दो शब्द' लिखकर इसे गौरवान्वित किया है। मैं अपने अन्तःकरण की पवित्रतम भावना से डा० उपाध्याय जी के प्रति कृतज्ञ एवं नतमस्तक हूँ। काशी की पाण्डित्य परम्परा के परमोत्कृष्ट प्रतिनिधि भूतपूर्व कुलपति (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) आचार्य बदरीनाथ शुक्ल (सम्प्रति सेवा-निवृत्त) ने अपने आशीर्वचनों से, मूर्धन्य साहित्यकार एवम् इतिहास-लेखक डा० रामजी उपाध्याय एवं सनातन कवि डा० रेवाप्रसाद द्विवेदी ने अपनी सम्मतियों तथा शुभकामनाओं से इस ग्रन्थ को महत्त्व प्रदान किया है और मेरे उत्साह का सम्बर्द्धन किया है। एतदर्थ मैं इन विद्वद्विभूतियों का चिर आभारी हूँ।

मैं श्री हरिहरनारायण (ज्योति प्रकाशन, पटना) को धन्यवाद देना आवश्यक समझता हूँ। क्योंकि यह उन्हीं की तत्परता का फल है कि यह ग्रन्थ शीघ्र प्रकाश में आ सका है। श्रीहरिबाबू वस्तुतः मेरे धन्यवाद के पात्र है। इस शीघ्रता में मुझे जयन्ती प्रेस एण्ड प्रकाशन, भदैनी, वाराणसी के व्यवस्थापक का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। एतदर्थ मैं उनका साधुवाद करता हूँ। परन्तु इस शीघ्रता में त्रुटियाँ

भी हुई हैं—कुछ मुद्रण सम्बन्धी और कुछ अन्य । उन सब के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ ।

पुनश्च, मैं अपनी सभी त्रुटियों के लिए कालिदास के मर्मज्ञ विद्वानों से क्षमा प्रार्थना करता हूँ और साथ ही अनुरोध करता हूँ कि वे अपने सुझावों से मुझे अवगत कराने की अवश्य कृपा करें, ताकि मैं अपनी उन तमाम त्रुटियों को अगले संस्करण में सुधार सकूँ ।

अन्त मे, कालिदास के भावों में—

"कालिदासस्य साहित्यमगाधाब्धिसमं महत् ।
विज्ञातुं नैव शक्येते तस्य गाम्भीर्यविस्तृती ॥
उडुपेनोदधिं तर्तुं मोहादेष सुदुस्तरम् ।
कृतोद्यमो जनोऽल्पज्ञः कालिदासेन मृष्यताम् ॥
आत्मनो हार्दिकीं श्रद्धामसामर्थ्यञ्च विश्रुतम् ।
निवेदन्निदं सर्वं कालिदासं नमाम्यहम् ॥"

दीपावली, वि० सं० २०३८ ।

विनीतो लेखकः

॥ श्रीः ॥

कालिदास-साहित्य एवं सन्दर्भ

(Bibliography of Kalidasa's Literature)

विषय--सूची

(प्रथम अध्याय)

(द्वितीय अध्याय)

(तृतीय अध्याय)

(चतुर्थ अध्याय)

(पञ्चम अध्याय)

—:०:—

शुद्धि–पत्र

		अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ ३,	पद टि० ३	उद्धत	उद्धृत
,, ५	पं० २	प्रवस	प्रवर
,, ,,	पं० टि० १	as crities	as cribes
,, ६	पं० ५	स्त्रोदर	स्रोदर
,, ,,	पं० टि० ३	Gren	Bran
,, ,,	पं० १८	Provid	Proved
,, ,,	,, १६	doubbts	doubts
,, ८	पं० २१	भूमिष्ठ	भूयिष्ठ
,, ११	प०टि० १ अन्तिम पंक्ति	ratue	rature
,, ,,	,, ३ Gran	Bran	
,, १३	पं० ६, ७ मारतीयमाषा		
,, १४	पं० ८	Kumaa	Kumar
,, ,,	पं० १४	Fauch	Fauche
,, ,,	,, १६	Hippe bite	Hippolytc Fouche
,, १५	,, २०	द्वाआ	द्वारा
,, १६	,, १३	प्रसंग	इस प्रसंग
,, ,,	प० टि० ६	Zotices	Notices
,, ,,	,, ,,	3281	3289
पृ० १७	पं० टि० २	Verhanl	Verhande
,, ,,	,, ३	Sfrifen	Streifen
,, २०	,, १५	मल्लिकनाथ	मल्लिनाथ

				अशुद्ध	शुद्ध
पृ०	२०	प०टि०	१	ard	and
,,	२१	,,	१४	ई०	ई० में
,,	२२	,,	५	रधुवंश	रघुवंश
,,	२४	,,	१४	हुए है	हुए हैं
,,	२५	,,	११	हैं	है
,,	२७	,,	१२	Migh	Megh
,,	२८	,,	६	dcr	der
,,	३०	,,	१	रिसचं	रिसर्च
,,	३६	,,	१०	देववन्त	देवपन्त
,,	३६	,,	२१	मेघसौमिनी	मेघसौदामिनी
,,	३९	,,	१६	उत्कलील	उत्कलीय
,,	४१	,,	८	छेटीका.	छः टीका.
,,	४३	,,	१३	कलक्रम	कालक्रम
,,	४४	,,		Akademi	Acadcmi
,,	४६	,,	२४	प्रा०	प्रो०
,,	४६	,,		प्रकाशित	प्रकाशित है।
,,	४८	,,	३	लिखि	लिखी
,,	,,	,,	७	लिखि	लिखी
,,	,,	,,	११	है	हैं
,,	,,	,,	,,	M,	M.
,,	,,	,,	,,	A, B,	A. B.
,,	५६	पं०	१४	अनवाद	अनुवाद
,,	५७	,,	१४	ई०	ई० में
,,	६१	,,	१	प्राक्लन	प्राक्तन
,,	६५	प. टि.	२	Acadmy	Academy

	अशुद्ध	शुद्ध
पृ० ६७ प०टि० १	Robion	Rabino
,, ७५ ,, ६	मेघदूत्	मेघदूत
,, ७६ ,,	श्रो	श्री।
,, ८० ,, ११	शिदेशी	विदेशी
,, ८० ,, १३	द्रष्टष्टव्य	द्रष्टव्य
,, ८० ,, १४	पिद्वानों	विद्वानों
,, ८० ,, १५	स्त्रोत	स्रोत
,, ८० प. टि. ६ पं. ३	Junrnal	Journal
,, ८२ प. १	सौर०	शोर०
,, ८४ प. टि. ६	Shriharsho	Shri Haroha
,, ८५ पं. २	गोर्डेस्टि	गोर्डस्ट
,, ८५ ,, ५	दास	दासि
,, ६२ ,, ३	राइटिङ्गस	राइटिङ्ग्स
पृ० ८८ प. टि. ८	XVII	XXII
,, १०० प. ६	कृष्णा	कृष्ण
,, १०२ ,, ७	जन्मभूः	जन्मभूः
,, १०७ ,, २	२०३६ ई०	२०३६
,, ,, ,, ४	राधा	राद्या
,, ,, ,, ४	हरीश्च	हरींश्च
,, ,, ,, ४	१७८	१०८
,, ,, ,, ४	अली	अमी
,, १०८ प. टि. ७	शुश्रूषत्व	शुश्रूषस्व
,, ,, ११	महृयदेया	सहृदया

कालिदास-साहित्य एवं सन्दर्भ

प्रथम अध्याय

(क) कालिदास की कृतियाँ (प्रामाणिक तथ्यानुसार)

महाकवि कालिदास के जीवनवृत्त के समान उनकी कृतियों के सम्बन्ध में भी विद्वान् आलोचकों के मन में अभी तक सन्देह बना हुआ है। यद्यपि शोध-पूर्ण निबन्धों तथा ऐतिहासिक अन्वेषणों के द्वारा निश्चय तक पहुँचने का प्रयास किया जा रहा है तथापि सन्देह तथा मतभेद का सर्वथा निराकरण नहीं हो सका है। इस सन्दिग्धबुद्धि तथा मतभेद के दो मुख्य कारण हैं— (१) संस्कृतसाहित्य के इतिहास में कालिदास यह नाम तथा उपनामधारी नौ कवियों की स्थिति, और (२) कालिदास की कृति के रूप में अनेक रचनाओं की प्रसिद्धि। कालिदास इस नाम तथा उपनाम से प्रसिद्ध नौ कवि निम्नलिखित हैं :—

(१) उज्जयिनी के राजा हर्ष विक्रमादित्य (ख़ीस्तपूर्व षष्ठ शतक) के सभाकवि तथा मालविकाग्निमित्र-विक्रमोर्वशीय-अभिज्ञानशकुन्तल इस नाटकत्रय तथा सेतुबन्ध महाकाव्य के रचयिता मातृगुप्त उपनामधारी कालिदास।

(२) मालव संवत् के प्रवर्तक मालवनरेश विक्रमादित्य (ख़ीस्तपूर्व प्रथम शतक) के सभाकवि तथा कुमारसम्भव-रघुवंश-मेघदूत इस काव्यत्रय के रचयिता मेधारुद्र उपनामधारी दीपशिखाकवि कालिदास।

(३) कामकोटिपांतम के मूकशङ्कर (४७० ई०) के शिष्य तथा ऋतुसंहार-शृङ्गारतिलक-श्यामलादण्डक-नवरत्नमाला इत्यादि ग्रन्थों के रचयिता कोटिजित उपनामधारी कालिदास।

(४) धाराधिपति मुञ्ज (९५०-१००५ ई०) के समकालीन तथा नवसाहसाङ्क-चरित महाकाव्य के रचयिता पद्मगुप्त उपनामधारी परिमलकवि कालिदास।

(५) यमककवि इस नाम से प्रसिद्ध तथा नलोदयकाव्य के रचयिता कालिदास।

(६) चम्पूभागवत के रचयिता नवकालिदास।

(७) सम्राट् अकबर की सभा के समस्यापूर्तिकवि कालिदास-अकबरीय।

(८) लम्बोदर प्रहसन के रचयिता कालिदास ।
(९) संक्षेपशङ्करविजय के रचयिता माधव उपनामधारी अभिनवकवि कालिदास'[१] ।

महाकवि राजशेखर ने तीन कालिदासों का उल्लेख किया है—

"एको न जीयते हन्त कालिदासो न केनचित् ।
शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी नु किम् ॥"

सम्भवतः राजशेखर की इस 'कालिदासत्रयी' का अभिप्राय मेघदूत-कुमारसम्भव-रघुवंश यह 'कालिदासकाव्यत्रयी' है ।

संस्कृतसाहित्य में कालिदास की बढ़ती हुई अतिशय ख्याति को देखकर अनेक कवियों ने कालिदास यह उपनाम धारण किया है और कालिदास के नाम से ही अपनी रचनाएं की हैं । प्रायः शृङ्गारपरक उत्कृष्ट रचनाएँ, जिनके लेखक अज्ञात हैं, कालिदास की ही मान ली गई हैं । निम्नलिखित ३९ रचनाएँ कालिदास-कृत मानी जाती हैं :—

(१) शाकुन्तल, (२) विक्रमोर्वशीय, (३) मालविकाग्निमित्र, (४) रघुवंश, (५) कुमारसम्भव, (६) मेघदूत, (७) कुन्तलेश्वरदौत्य, (८) ऋतुसंहार, (९) अम्बास्तव, (१०) कल्याणस्तव, (११) कालीस्तोत्र, (१२) काव्यनाटकालङ्कार, (१३) गङ्गाष्टक (१) (१४) गङ्गाष्टक (२), (१५) घटकर्परकाव्य[२], (१६) चण्डिकादण्डकस्तोत्र, (१७) चर्चास्तव, (१८) ज्योतिर्विदाभरण, (१९) दुर्घटकाव्य, (२०) नलोदय, (२१) नवरत्नमाला, (२२) पुष्पबाणविलास, (२३) मकरन्दस्तव, (२४) मङ्गलाष्टक, (२५) महापद्याष्टक, (२६) राक्षसकाव्य, (२७) रत्नकोष, (२८) लक्ष्मीस्तव, (२९) लघुस्तव, (३०) विद्वद्विनोदकाव्य, (३१) वृन्दावनकाव्य, (३२) वैद्यमनोरमा, (३३) शुद्धचन्द्रिका, (३४) शृङ्गारतिलक, (३५) शृङ्गाररसाष्टक, (३६) शृङ्गारसारकाव्य, (३७) श्यामलाष्टक, (३८) श्रुतबोध, (३९) सेतुबन्ध[३] ।

---

१. श्री टी. एस. नारायण शास्त्री ने इन नौ कालिदासों का निर्देश किया है । (महाकविकालिदास-डॉ० रमाशङ्कर तिवारी, पृ० ४ पदटिप्पणी) ।

२. 'घटकर्परकाव्य' कालिदास की रचना है, यह अभिनवगुप्त को भी अभिमत है— (डॉ० के० सी० पाण्डेय—'ए हिस्टॉरिकल ऐंड फिलॉसोफिकलस्टडी ऑफ कालिदास' पृ० ६५) घटकर्परकाव्यम् (कालिदासविरचितम्) श्रीदेवदत्त शास्त्री द्वारा सम्पादित, प्रकाशटीकासहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्राप्य है ।

३. इन ३९ पुस्तकों का उल्लेख डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ने अपने ग्रन्थ 'कालिदास' (जीवन और साहित्य) में किया है ।

श्रीरञ्जनसूरिदेव ने कालिदास की कृति के रूप में प्रसिद्ध १६ रचनाओं का उल्लेख किया है। उनमें से १५ रचनाएँ तो ऊपर लिखी हुई रचनाओं में ही हैं; किन्तु उन्होंने 'प्रश्नोत्तरमाला' नामक किसी ग्रन्थविशेष की भी चर्चा की है। परन्तु उनके मत में भी प्रसिद्ध सात रचनाएँ ही कालिदास की हैं; शेष रचनाएँ सन्दिग्ध हैं[1]।

डॉ० एस० के० दे ने कालिदास की २० सन्दिग्ध रचनाओं का संख्या-निर्देश किया है; किन्तु उन्होंने उन रचनाओं के नाम नहीं दिए हैं। उन्होंने केवल 'यमककाव्य' (नलोदयकाव्य) तथा 'राक्षसकाव्य' की चर्चा की है। परन्तु उन्होंने कालिदास की सुप्रसिद्ध सात रचनाओं–ऋतुसंहार, कुमारसम्भव, मेघदूत, रघुवंश, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशकुन्तल–को ही प्रामाणिक रूप में स्वीकार किया है। 'ऋतुसंहार' कालिदास की रचना नहीं है, अथवा यह कालिदास के कवि की अपरिपक्वावस्था की रचना है, यह कुछ लोगों का मत है; इस मत का भी उन्होंने प्रबल तर्कों से निराकरण किया है[2]।

(१) संस्कृत काव्यों के प्राचीनतम टीकाकार मल्लिनाथ ने 'ऋतुसंहार' की टीका नहीं की है। उन्होंने रघुवंश की टीका के आरम्भ में कालिदास के रघुवंश, कुमारसम्भव और मेघदूत इन्हीं तीन काव्यों की चर्चा की है; जिन पर उन्होंने टीकाएँ लिखी हैं।

(२) किसी काव्यशास्त्री ने ऋतुसंहार के श्लोकों को उदाहरण के रूप में ग्रहण नहीं किया है; जैसा कि उन्होंने कालिदास के उपर्युक्त काव्यत्रय से ग्रहण किया है[3]।

(३) किसी संग्रह-पुस्तक में भी ऋतुसंहार के श्लोक संगृहीत नहीं हैं।

ये तथा इसी प्रकार अन्य युक्तियाँ भी 'ऋतुसंहार कालिदास की रचना नहीं है' इस मत के समर्थन में प्रस्तुत की जाती हैं।

(१) ऋतुसंहार कालिदास के कवि की किशोरावस्था की रचना है।

(२) वह कालिदास की प्रथम काव्यरचना है।

---

१. मेघदूत—एक अनुचिन्तन, भूमिका पृ० ५।

२. हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर, पृ० १२१-१२२

३. केवल वत्सभट्टि ने अपने 'मन्दसोर' अभिलेख में 'ऋतुसंहार' के दो श्लोक उद्धत किए हैं।

(३) इसमें कालिदास की काव्यकला का परिपाक नहीं दीख पड़ता। कुछ आलोचकों ने ऋतुसंहार के सम्बन्ध में इस प्रकार के मत भी प्रस्तुत किए हैं[१]।

एस० एच० स्टेनबर्ग द्वारा सम्पादित 'कैसल्स इनसाइक्लोपीडिया ऑफ लिटरेचर' (प्रथम भाग, पृ० २९२) में कालिदास के उपर्युक्त सात ग्रन्थों का ही नामतः उल्लेख किया गया है। डॉ० कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी के निर्देशन में सम्पादित 'दि हिस्ट्री ऐण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपुल' नामक ग्रन्थ (दि क्लैसिकल एज, भाग) में कालिदास की उपर्युक्त सात रचनाओं का ही उल्लेख है। डॉ० आर० डी० करमरकर ने कालिदास की रचनाओं का—अभिव्यक्तिसाम्य, शब्दसाम्य, भावसाम्य, लोकोक्तिप्रयोगसाम्य आदि दृष्टिकोणों से तुलनात्मक विवेचन कर यह निश्चय किया है कि ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसम्भव, रघुवंश, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशकुन्तल ये सात (सात ही) ग्रन्थ कालिदास की (कालिदास की ही) रचनाएँ हैं। ऋतुसंहार के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है—As regards the Ritu Samhara, one can not be sure, but the possibility is that it also has come from the pen of Kalidasa[२] ?"

डॉ० सी० कुन्हन राजा के मतानुसार कालिदास की छः रचनाएँ ही प्रामाणिक रूप में स्वीकार्य हैं। ऋतुसंहार के सम्बन्ध में उनके मन में भी सन्देह है। कालिदास के नाम से प्रसिद्ध अन्य रचनाएँ कालिदास उपनामधारी अन्य कवियों की हैं यह उनका विचार है[3]।

डॉ० वी० राघवन् के मतानुसार कालिदास की रचनाएँ आठ हैं—

---

१. हिलेब्रांत (Kalidasa, Berlin, 1921, P. 66), कीथ (J. R. A. S. 1912 P. 1060-70; J. R. A. S. 1913, P. 410-12: H. S. L., P. 240-42). जे. नोबिल (J. R. A. S. 1913, P. 410-10), हरिचन्दशास्त्री L. Arts Poetique de L[२] India, Paris, 1917, P. 240-42) प्रभृति विद्वान् इस मत के उपस्थापक हैं।

२. एक्सटेंशन लेक्चर्स सीरीज—४, पृ० १८–२३

३. सर्वे ऑफ संस्कृत लिटरेचर, कालिदास, पृ० ९५–१२७

ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसम्भव, रघुवंश, कुन्तलेश्वरदौत्य[1], मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशकुन्तल। कालिदास ने प्रवससेनकृत 'सेतुबन्ध' नामक प्राकृतकाव्य का संशोधन किया है, यह किसी का मत है, इसका भी निर्देश डॉ० राघवन् ने किया है[2]। 'कालिदास ग्रन्थावली' के सम्पादक श्रीउत्पलेन्द्र मुखोपाध्याय[3], श्रीसीताराम चतुर्वेदी, डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी प्रभृति विद्वानों ने निश्चय किया है कि कालिदास की उपर्युक्त सात ही (कुन्तलेश्वरदौत्य को छोड़कर) रचनाएँ निःसन्दिग्ध हैं। वस्तुतः अविच्छिन्न परम्परा से प्रचलित उपर्युक्त सात रचनाएँ ही कालिदासकृत हैं, यह बहुमत द्वारा स्वीकृत है। श्री एस० पी० पण्डित ने प्रबल तर्कों के द्वारा प्रचलित परम्परा का ही समर्थन किया है[4]।

डॉ० कीथ, वेबर, विन्टरनित्स, मैक्समूलर, मैकडोनेल प्रभृति पाश्चात्य तथा प्रो० कृष्णमाचारियर, प्रो० बलदेवप्रसाद उपाध्याय, श्री वाचस्पति गैरोला

---

१. कुन्तलेश्वर के सम्बन्ध में डॉ० राघवन् ने लिखा है—The Poem called the Kuntaleshwar dautya (on an embassy bitween a Vikramaditya and a Kuntal King with which Kalidasa was intrusted) which Kshemendra the critic of the 11th century as critics to Kalidasa. (V. Raghawan–Sanskrit Literature XVI Kalidasa. Publication division, Ministry of Information and Broad Casting. P. 65.)

क्षेमेन्द्र ने 'औचित्यविचारचर्चा' के 'अधिकरणौचित्य' के प्रसङ्ग में यह निर्देश किया है—'अधिकरणौचित्यं यथा कुन्तलेश्वर इत्यादि।" भोजकृत 'शृङ्गारप्रकाश' के अष्टम प्रकाश में कुन्तलेश्वरविषयक कालिदास और विक्रमादित्य के उत्तर-प्रत्युत्तर उद्धृत किए गए हैं—"कालिदासः 'किं कुन्तलेश्वरः करोति' इति विक्रमादित्येन पृष्टः, उक्तवान्—"असकलहसितत्वात्……पिबति मधुसुगन्धिन्याननानि प्रियाणाम्", इदमेवोहयित्वा विक्रमादित्यः प्रत्युवाच—"पिबतु मधुसुगन्धीन्याननानि प्रियाणाम्, मयि विनिहितभारः कुन्तलानामधीशः।" राजशेखर की काव्यमीमांसा के ग्यारहवें अध्याय में भी यह पद्य उदाहृत है।

२. वही पृ० ६६

३. श्रीउत्पलेन्द्र मुखोपाध्याय द्वारा सम्पादित, वसुमती कार्यालय, कलकत्ता से प्रकाशित, महाकविकालिदासग्रन्थावली (मूल उ बंगानुवाद सहित) सम्भवतः सर्वप्राचीन कालिदासग्रन्थावली है।

४. इन्ट्रोडक्शन टु मालविकाग्निमित्र।

प्रभृति भारतीय विद्वानों ने कालिदास की सात रचनाएँ ही प्रामाणिक रूप में स्वीकार की हैं। परन्तु यह सत्य है कि 'ऋतुसंहार' को कालिदास की रचना मानने में विद्वान् एकमत नहीं हैं।

डॉ० कीथ[1], मैकडोनेल[2], हिलेब्रांत[3], हुल्त्स (Haltzch), किल्हॉर्न (Kilhorn), बुलर (Buhler), स्त्रोदर (Von Schroeder) प्रभृति विद्वान् ऋतुसंहार को कालिदास की रचना मानते हैं। वाल्टररुबे[4], नोबिल[5], हरिचन्द[6] आदि इस विषय में सन्देह व्यक्त करते हैं।

मालविकाग्निमित्र को भी कालिदास की रचना मानने में कुछ लोग सन्दिग्धबुद्धि दीख पड़ते हैं। मालविकाग्निमित्र में कालिदास की नाट्यकला का विकसित रूप न देखकर विल्सन ने इसे कालिदास की रचना मानने में सन्देह व्यक्त किया है। किन्तु वेबर तथा एस० पी० पण्डित ने इस सन्देह का निराकरण किया है। कीथ के मत में मालविकाग्निमित्र कालिदास की निःसन्देह प्रथम नाट्य-कृति है। उन्होंने विल्सन द्वारा उपस्थापित सन्देह और वेबर द्वारा किए गए सन्देह-निराकरण का भी उल्लेख किया है—

"The Malavikagni mitrn is unquestionably the firat dramatic work of Kalidasa.........the merits of the poet are for less clearly exhibited here than his other play, but the identity of anthroship is unquestinable and was long ago provid by Webar against the doubbts of wilson[7]".

विक्रमोर्वशीय के प्राकृत पद्य कालिदासकृत हैं, इस विषय में भी कुछ लोगों को सन्देह है। क्योंकि ऐसी अपभ्रंशभाषा का प्रयोग वैसे प्राचीन नाटक में सम्भव नहीं है। और दूसरी बात यह है कि विक्रमोर्वशीय की उत्तर भारतीय प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के चतुर्थ अङ्क में बहुत-से ऐसे अपभ्रंशपद्य हैं जो दक्षिण

---

1. Keeth—J. R. A. S. 1912, P. 1060-70/1913, P. 410–12
   डॉ० कीथ के अनुसार कालिदास ने ऋतुसंहार की रचना मालविकाग्निमित्र से पीछे की थी।
2. Macdonell—History of Sanskrit Literature, P.337
3. Hille Grandt—Kalidasa. P. 66
4. Walter ruben—Indiaca III, P. 6
5. Nobel—J. R. A. S. 1913, P. 401–9
6. Harichand—Kalidasa et Art Poetique de 1' 1'nde, P. 240
7. The Sanskrit Drama–The three dramas–Malavikagnimitra

भारतीय हस्तलिखित प्रतियों में नहीं मिलते। अतः वे पद्य कालिदासकृत नहीं हैं, यह कुछ विद्वानों का मत है। परन्तु गद्य-पद्यों में अपभ्रंश के प्रयोग में इस प्रकार का अन्तर तो मालतीमाधव, बालरामायण, प्रसन्नराघव और महानाटक में भी दीख पड़ता है अतः उपर्युक्त कल्पना का कोई युक्ति-संगत आधार नहीं मिलता इसलिए कीथ ने उक्त मत का निराकरण किया है[1]। डॉ० एस० के० डे द्वारा सम्पादित मेघदूत की प्रस्तावना में कालिदास की सात रचनाएँ प्रामाणिक रूप में मानी गई हैं—

"There is however, general agreement about Kalidasa's authorship of the Following works—Abhi, Vikrama, Malavi, Raghu, Kumar, Megha and Ritu [2]".

कालिदास की इन सात रचनाओं की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में एक यह तर्क भी विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञानशकुन्तल में कालिदास ने अपने को नामतः संकेतित किया है। अतः यह स्पष्ट है कि यह नाटकत्रय कालिदास की ही रचना है। उनके कुमारसम्भव, मेघदूत और रघुवंश के सम्बन्ध में यह प्रसिद्धि अविच्छिन्न परम्परा से चली आ रही है कि कालिदास ने अपनी पत्नी के "अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः" इस वाक्य का अनुसरण करते हुए 'अस्ति, कश्चित्, वाक्' इन तीन पदों से आरम्भ कर क्रमशः कुमारसम्भव, मेघदूत और रघुवंश इस काव्यत्रय की रचना की। ऋतुसंहार और कुमारसम्भव के वसन्त-वर्णन में सर्वथा साम्य दीख पड़ता है; अतः यह काव्यचतुष्य और वह नाटकत्रय अर्थात् ये सात (सात ही) रचनाएँ कालिदास की (कालिदास की ही) हैं, यह प्रामाणिक रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

द्रष्टव्य—मेघदूत के प्राचीन टीकाकार दक्षिणावर्तनाथ और उनके अनुयायी मल्लिनाथ ने मेघदूत के 'दिङ्नागानां पथि परिहरन्' इत्यादि श्लोक (१४) की व्याख्या में निचुल और दिङ्नाग को कालिदास का समकालीन माना है और दक्षिणावर्त्त ने कालिदास को 'नानार्थशब्दरत्न' का रचयिता कहा है जिस पर निचुल ने 'तरला' टीका लिखी है। उन्होंने 'नानार्थशब्दरत्न' के रचयिता कालिदास को मेघदूत के रचयिता कालिदास से अभिन्न सिद्ध करने का प्रयास किया है। इससे विदित होता है कि कालिदास ने 'नानार्थशब्दरत्न' की रचना की थी। परन्तु

1. The Sanskrit Drama, P. 151-52
2. Meghdutam by I. K. De, General Introduction.

दक्षिणावर्त्तनाथ का यह भ्रम है। 'नानार्थशब्दरत्न' के रचयिता भोजकालीन कालिदास हैं जो मेघदूतकार से सर्वथा भिन्न है[1]।

(ख) कालिदास की कृतियों का रचनाक्रम--

कालिदास की कृतियों का रचनाक्रम भी कालिदास-सम्बन्धी अन्य विषयों के समान मतभेदग्रस्त है। डॉ० आर० डी० करमर के मतानुसार कालिदास के काव्यों का रचनाक्रम इस प्रकार है—ऋतुसंहार, कुमारसम्भव (प्रथम तीन सर्ग), मेघदूत, कुमारसम्भव (अवशिष्ट सर्ग), रघुवंश। मेघदूत, कुमारसम्भव और रघुवंश के अन्तःसाक्ष्यों का पर्यालोचन करते हुए उन्होंने कहा है कि मेघदूत के अनेक पद्यों में शिव-पार्वती तथा कुमार-स्कन्द का उल्लेख है। इससे ज्ञात होता है कि मेघदूत की रचना के समय कालिदास के मन में कुमारसम्भव की कथा वर्त्तमान थी। इसलिए यह अनुमान किया जाता है कि कालिदास मेघदूत की रचना के समय कुमारसम्भव की रचना में भी लगे हुए थे।

रघुवंश में कुमार कार्त्तिकेय का (विभिन्न नामों से) और रति तथा काम का अनेक स्थानों में उल्लेख है—

"यो हेमकुम्भस्तननिःसृतानां स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः" (२/३६),
"अथैनमद्रेस्तनया शुशोच सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः" (२/३७),

"सुरसरिदिव तेजो वह्निनिष्ठ्यूतमैशम्" (२/३२) (अत्यादित्यं हुतवहमुखे सम्भृतं तद्धितेजः, मेघदूत), 'कुमारजन्मामृतसम्मिताक्षरम्' (३।१६), 'उमावृषाङ्कौ शरजन्मना यथा' (३।२३), 'हरेः कुमारोऽपि कुमारविक्रमः (३।२५), 'कुमारकल्पं सुषुवे कुमारम्' (५।३६), 'रतेर्गृहीतानुनयेन कामं प्रत्यर्पितस्वाङ्गमिवेश्वरेण' (६।२), 'भूमिष्ठमासीदुपमेयकान्तिर्मयूरपृष्ठाश्रयिणा गुहेन' (६।४), 'स्कन्देन साक्षादिव देवसेनाम्' (७।१) इत्यादि। इससे यह विदित होता है कि रघुवंश की रचना करते समय कालिदास के मन में यह बात थी कि कुमारसम्भव की कथावस्तु पाठकोंको सुपरिचित है।

श्रीकरमर के अनुसार कालिदास के नाटकों का रचनाक्रम इस प्रकार है—मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशकुन्तल। इन नाटकों में कालिदास की नाट्यकला और प्रतिभा का उत्तरोत्तर विकास दीख पड़ता है।

१. डॉ० आद्याप्रसाद मिश्र--कालिदाससाहित्यम्, पृ० ६७-६८

मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना से ज्ञात होता है कि उस समय तक कवि को अपनी नाट्यक्षमता का विश्वास नहीं था। इसलिए उसने अपने पूर्ववर्त्ती कवियों का सादर उल्लेख किया है—"प्रथितयशसां भाससौमिल्लकविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य कथं ते वर्त्तमानस्य कवेः कालिदासस्य कृतौ बहुमानः।" कवि की 'पुराणमित्येव न साधु सर्वम्' इस उक्ति से भी प्रतीत होता है कि उसने अपने नाटक में सर्वप्रथम नवीन कथावस्तु उपनिबद्ध की है। इससे यह अनुमान किया जाता है कि 'मालविकाग्निमित्र' कालिदास की प्रथम नाट्यरचना है।

विक्रमोर्वशीय में कालिदास ने पूर्ववर्त्ती कवियों का संकेतमात्र किया है, उनका नामतः उल्लेख नहीं किया है—"मारिष! बहुशस्तु परिषदा पूर्वेषां कवीनां दृष्टाः प्रयोगबन्धाः" इत्यादि। इससे ज्ञात होता है कि कालिदास उस समय तक भी अपनी नाट्यक्षमता के प्रति पूर्णतया विश्वस्त नहीं थे।

अभिज्ञानशकुन्तल में कालिदास ने पूर्ववर्त्ती कवियों अथवा नाटककारों की चर्चा नहीं की है। उन्होंने केवल अपने नाम का ही निर्देश किया है—"कालिदासग्रथितवस्तुना नवेन नाटकेन" इत्यादि। इससे ज्ञात होता है कि कालिदास उस समय तक अपनी नाट्यक्षमता के प्रति पूर्ण विश्वस्त हो चुके थे। अभिज्ञानशकुन्तल के अन्तिम श्लोक में उन्होंने सर्वशक्तिमान् स्वयम्भू शङ्कर से अपने पुनर्जन्म की समाप्ति के लिए प्रार्थना की है—"ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः।" इससे यह प्रतीत होता है कि अभिज्ञानशकुन्तल कालिदास की अन्तिम नाट्यरचना है।

निष्कर्ष—डॉ० करमरकर के अनुसार कालिदास की रचनाओं का क्रम इस प्रकार है—ऋतुसंहार, कुमारसम्भव (प्रथम तीन सर्ग), मालविकाग्निमित्र, मेघदूत, कुमारसम्भव (अवशिष्ट भाग), विक्रमोर्वशीय, रघुवंश, अभिज्ञानशकुन्तल[1]। उन्होंने मालविकाग्निमित्र तथा मेघदूत के वस्तुवर्णन आदि की समता

1. "The probable order of the works of Kalidasa is, therefore, as follows—Ritu Samhara, Kumara (Beginning), Malvikagnimitra, Meghaduta, Kumara Sambhava, Vikramorvashiya, Raghuvansha and Shakuntala. It is probable that the poet was engaged on more than one work at one and the same time, but the above we think, is a fairly correct representative of the order in which the various works were written by the poet". Kalidasa P. 152.

का पर्यालोचन कर यह निश्चय किया है कि इन दोनों की रचना एक ही साथ हुई है[1]। इसी प्रकार कुमारसम्भव तथा विक्रमोर्वशीय[2] और रघुवंश एवम् अभिज्ञानशकुन्तल[3] भी साथ ही साथ लिखे गये हैं, यह उनका अभिमत है।

डॉ० एस० के० डे के मतानुसार मालविकाग्निमित्र कालिदास की अपरिपक्व नाट्यकला की कृति नहीं है। इसमें उत्कृष्ट नाटक के सभी गुण विद्यमान हैं। कालिदास ने अपने तीनों नाटकों में समान रूप में शिष्टता एवं नम्रता का प्रदर्शन किया है और तीनों नाटकों को अपूर्व एवं नवीन कथावस्तुओं से ग्रथित कहा है। अतः मालविकाग्निमित्र उनकी प्रथम नाट्यरचना है, यह निश्चय करना कठिन है[4]। प्रो० वी० हेनरी ने मालविकाग्निमित्र की नाट्यकला की अतिशय प्रशंसा की है[5]। के० आर० पिशारोती इस नाटक को किसी राजपरिवार का प्रच्छन्न व्यङ्ग्यकाव्य मानते हैं। डॉ० डे के अनुसार कालिदास की रचनाओं का क्रम इस प्रकार है—ऋतुसंहार, कुमारसम्भव, रघुवंश, मेघदूत, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशकुन्तल[6]।

डॉ० चन्द्रबली पाण्डेय ने अपने 'कालिदास' नामक ग्रन्थ में कालिदास की रचनाओं का क्रम इस प्रकार निर्धारित किया है—ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्र, कुमारसम्भव, विक्रमोर्वशीय, मेघदूत, रघुवंश, अभिज्ञानशकुन्तल। श्री सी० कुन्हनराजा के अनुसार रघुवंश कालिदास की पहली काव्यरचना है। रघुवंश के आरम्भ में किया गया वृहत् विनयप्रदर्शन यह सूचित करता है कि रघुवंश उनकी काव्यरचना का प्रथम प्रयास है। मालविकाग्निमित्र की रचना के विषय में श्रीकुन्हनराजा को सन्देह है कि वह रघुवंश से पहले की रचना है। वे

---

1. "We think that Malavikagnimitra and Meghaduta go together".
2. "Similarly the Kumarsambhava and the Vikrmorvashiya go together". Kalidasa P. 251.
3. "It is to prove that Raghu and Shakuntala go together". Kalidasa, P. 152.
4. S. K. De—History of Sanskrit Literature, P. 136-37
5. V. Henry—Les Litterature de Inde, P. 305.
6. S. K. De –History of Sanskrit Literature, P. 137.

रघुवंश को अष्टादशसर्गात्मक ही मानते हैं[1]।

श्री हूथ, विलियम (ग्रैबोस्का) और हिलेब्रांत विक्रमोर्वशीय को कालिदास की अन्तिम नाट्यकृति मानते हैं[2]।

डॉ० कीथ मालविकाग्निमित्र को कालिदास की प्रथम नाट्यरचना, विक्रमोर्वशीय को द्वितीय तथा अभिज्ञानशकुन्तल को अन्तिम नाट्यरचना मानते हैं। "The Malvikagnimitra is unqestionably the first dramatic work of Kalidas............The Vikramorvashiya, by many reckoned as the last work in drama of Kalidasa, seems rather to fall in the interval between the youthful Malavikagnimitra and the mature perfection of the Shakuntala." (Sanskrit Drama, P. 147-49).

डॉ० कीथ के अनुसार कालिदास की रचनाओं का क्रम इस प्रकार है—ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्र, मेघदूत, कुमारसम्भव, रघुवंश, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशकुन्तल[3]।

---

1. Raghuvansha is an epic poem in eighteen cantos.........It is perhaps one of Kalidasa's earliest composition. We do not know whether it is his earliest composition or whether the drama Malavikagnimitra procceded it. The probability is that he started this epic as his first attempt at his poetry............ This long prelude to the poem indicates that this was his first attempt at writing poetry." (Survey of Sanskrit Literatu e, P. 115.)
2. Huth—op cit., P. 63 f.
   Mnee de William—Grabowska, A. I. I. C. P. 312
   Hille Grandt—Kalidasa, 1921, P. 87
3. Keeth—History of classical Sanskrit Literature—the three dramas.

—: x :—

द्वितीय अध्याय

(क) कालिदास की कृतियों के संस्करण (विभिन्न भाषाओं में)

(१) ऋतुसंहार—कालिदास का 'ऋतुसंहार' व्यापक रूप में अध्ययन का विषय नहीं है। अतः अधिक लोकप्रिय नहीं होने के कारण इसके संस्करणों की संख्या अधिक नहीं है। विदेशी भाषाओं में इसके संस्करण निम्नलिखित हैं :—

(क) आंग्लभाषा-संस्करण—

(१) सर विलियम जोन्स द्वारा कलकत्ता से १७९२ ई० सम्पादित।

(२) अमेरिकावासी आर्थर विलियम रायडर द्वारा सम्पादित[1]।

(३) श्री एच० क्रेनबोर्ग (Herman Kreynborg) द्वारा हनोवर (Hannover) से १९२४ ई० में सम्पादित[2]।

(४) श्री ई० पी० मैथर्स (E. P. Mathers) द्वारा लन्दन से १९२९ ई० में सम्पादित।

(५) श्री एम० आर० काले द्वारा सम्पादित (चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्राप्य)।

(६) श्री आर० एस० पण्डित द्वारा अंग्रेजी अनुवाद आदि के साथ सम्पादित।

(७) श्री सत्यं जयति द्वारा अंग्रेजी अनुवाद के साथ सम्पादित।

(८) वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री द्वारा बम्बई से १९२२ ई० में सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद सहित।

(ख) जेचभाषा-संस्करण—

(१) ऋतुसंहार ट्रांसलेटेड इन टु जेच लैंग्वेज (Czech Language)

1. Arther Wiliam Ryder-Kalidasa (Translation of Shakuntala and other works) Published by J. M. Dentanel and Sons Ltd. and E.P. Dutton and Co. New York in 1912 A.D. and by Every man's Library in 1920 and 1928 A. D, (Reprint).
2. Ritu Samhara; the seasons (A descriptive poem by Kalidasa) with introduction original Sanskrit text in Bengali character.

(ग) लैटिनभाषा-संस्करण—

(१) श्री बोलेन (P. von Bohlen) द्वारा लिपसिग (Liepzing) से १८४० ई० में सम्पादित लैटिनपद्यानुवाद।

(घ) जर्मनभाषा-संस्करण :—

(१) श्री बोलेन द्वारा लिपसिग से १८४० ई० में सम्पादित जर्मनपद्यानुवाद।
(तामिल) (१) ऋतुसंहार तामिलगद्यानुवाद।

(सिंहली) (१) ऋतुसंहारकाव्य सिंहल भाषा में अनूदित।

'ऋतुसंहार' भारतीयभाषा (संस्कृत) संस्करण निम्नलिखित हैं—

(१) श्री पणसीकर (W. L. Pansikar) द्वारा मणिराम टीकासमेत सम्पादित तथा निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से १९०६ ई० में प्रकाशित प्रथम संस्करण और वहीं से १९२२ ई० में प्रकाशित उसी का द्वितीय संस्करण।

(२) ऋतुसंहार टीका—मणिरामकृत तथा सीताराम सहगल द्वारा सम्पादित।

(३) ,, —अमरकीर्तिसूरिकृत तथा ,, ,,

हिन्दी (१) 'प्रभा' हिन्दी टीका से युक्त वाराणसी से प्रकाशित।

(२) श्री रांगेयराघव द्वारा सम्पादित हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र सस्करण[1]।

(३) लालासीताराम द्वारा हिन्दी अनुवाद-सहित रामनारायणलाल, प्रयाग से सम्पादित।

(२) कुमारसम्भव :—कुमारसम्भव महाकाव्य के विदेशीभाषा-संस्करण :—

(क) आंग्लभाषा-संस्करण—

(१) आर. टी. एच. ग्रिफिथ (R. T.H, Greffith) ने कुमारसम्भव का आंग्लभाषानुवाद १८७९ ई० में लन्दन से प्रकाशित किया।

(२) एम. आर. काले ने भी इसका आंग्लभाषानुवाद सम्पादित किया है।

---

१. चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्राप्य।

(३) अमेरिकानिवासी आर्थर विलियम राइडर ने लन्दन तथा न्यूयार्क से इसका आंग्लभाषानुवाद सम्पादित किया है[१]।

(४) रंगलाल बनर्जी द्वारा अंग्रेजी अनुवाद के साथ सम्पादित।

(५) के. एम. बनर्जी द्वारा अंग्रेजी अनुवाद आदि के साथ सम्पादित[२]।

(६) शारदारञ्जनराय द्वारा अंग्रेजी अनुवाद तथा मल्लिनाथी टीका (सञ्जीवनी) के साथ कोहनूर प्रिन्टिङ्ग प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित।

(७) डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री द्वारा सम्पादित तथा साहित्य अकादमी नई दिल्ली से प्रकाशित—The Kumaa Sambhava of Kalidasa (critically edited).

(ख) लैटिनभाषा-संस्करण—

(१) ए. एफ. स्तेंस्लर (A. F. Stenzler) ने इसका लैटिनभाषानुवाद-सहित (१-७ सर्ग तक) संस्करण बर्लिन से १८३८ ई० में सम्पादित किया।

(२) श्री फौचे (M. Hippolyte Fauch) द्वारा सम्पादित।

(ग) फ्रेंचभाषा-संस्करण—

(१) श्री फौचे (M. Hippcldte Fauch) द्वारा सम्पादित।

(घ) रूसीभाषा-संस्करण :—कुमारसम्भव का रूसीभाषा-संस्करण लेनिनग्राड के प्राच्यविद्यासंस्थान में प्राप्य है[३]।

कुमारसम्भव के भारतीयभाषा संस्करण—
संस्कृत-संस्करण—

(१) मल्लिनाथ (सञ्जीवनी) तथा—

(२) अर्जुनगिरि कुमारसम्भव के प्राचीनतम टीकाकार हैं।

---

१. Kalidasa (Translation of Sakuntala and other works) पूर्व पृष्ठ की पदटिप्पणी द्रष्टव्य।

2. Thacker spink & Co. London, Calcutta, 1867.

३. पटना (बिहार-भारत) से प्रकाशित 'आर्यावर्त' नामक दैनिक हिन्दी समाचार-पत्र (दिनांक ४-३-१९७८ ई०, द्वितीय पृष्ठ, सप्तम स्तम्भ) में भी कुमार-सम्भव तथा गीतगोविन्द के रूसीभावानुवादों का उल्लेख है।

(३) विट्ठलशास्त्री द्वारा १८६६ ई० में सम्पादित ८-१७ सर्गात्मक संस्करण[1]।

विशेष—कुमारसम्भव, प्रथम सर्ग से सप्तम सर्ग तक ही कालिदास की रचना है, यह कुछ विद्वानों का मत है। ए. एफ. स्तैंस्लर ने कुमारसम्भव के उतने सर्गों तक का ही संस्करण सम्पादित किया है।

(४) श्री एन. बी. पर्वणीकर, के. पी. परब तथा डब्ल्यू. एल. पणशीकर (वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पणशीकर) द्वारा मल्लिनाथटीका-सहित १-८ सर्गात्मक संस्करण और सीताराम की टीका के साथ ९-१७ सर्गात्मक संस्करण निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से १९३० तथा १९३२ ई० में प्रकाशित।

(५) कुमारसम्भव मल्लिनाथ, चरित्रवर्द्धन तथा सीताराम की टीकाओं के साथ गुजराती प्रिण्टिङ्ग प्रेस बम्बई से १८९८ ई० में प्रकाशित।

(६) टी. गणपति शास्त्री द्वारा अर्जुनगिरि तथा नारायण टीका के साथ एक से आठ सर्ग तक त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सीरीज, मद्रास से १९१३-१४ ई० में प्रकाशित।

अन्य प्राचीन टीकाओं के संस्करण—मैथिल टीकाकार जगद्धर (कुमारसम्भव-रसदीपिका के लेखक, चौदहवीं शताब्दी में वर्त्तमान), मैथिल टीकाकार दिवाकर उपाध्याय (१३८५ ई० से पूर्व में वर्त्तमान), मेघदूत की टीका (श्लोक-संख्या ७०) में भरतमल्लिक द्वारा उद्धृत बृहस्पति मिश्र (कुमारसम्भवव्याख्या)[2] ऑफ्रेच द्वाआ संकेतित[3] भगीरथ मिश्र (भगीरथकवि), १७५० ई० में विद्यमान बंगाली टीकाकार भरतमल्लिक (भरतसेन-सुबोधा टीका) मेघदूत की 'शिशुहितैषिणी' टीका के लेखक श्रीवत्सव्यास, दशम शताब्दी में वर्त्तमान बल्लभदेव[4], १६५३ ई० में स्थित जैनटीकाकार विजयसूरि (विजयगणि), मेघदूत के टीकाकार हरिदास मिश्र (कुमारकाव्यार्थदीपिका), चारित्रवर्द्धन (कुमारसम्भवचारित्रवर्द्धिनी), गंगाधरशास्त्री (कुमारसम्भवपुंसवनी), गोपालानन्द

१. पण्डित ओल्ड, सीरीज, १-११।
२. कुमारसम्भवव्याख्या, मिथिला-संस्कृत-पुस्तक-सूची, भाग २।
3. An frech I. P. 394 b.
४. वल्लभदेव कुमारसम्भव के सम्भवतः प्रथम टीकाकार हैं।

(कुमारसम्भवसारावली)[१] दक्षिणावर्तनाथ (कुमारसम्भवदीपिका[२]), जयसिंह (कुमारसम्भवव्याख्या[३]), कुमारसम्भवपदान्वय[४], विद्यामाधव (कुमारसम्भव-दीपिका)[५], कविनारायण (कुमारसम्भवदीपिका[६]), लक्ष्मीवल्लभ (कुमार-सम्भवार्थालापनिका), जिन समुद्रसूरि (कुमारसम्भवटीका), हरिचरणदास (कुमारसम्भवटीका-देवसेना), प्रेमचन्द्र (कुमारसम्भवटीका), रघुपति (कुमार-सम्भवटीका[७]), नवनीतराम (कुमारसम्भवव्याख्या[८]) और पं० अविनाशचन्द्र (कुमारसम्भवम् संस्कृत टीकासहितम्) द्वारा सम्पादित संस्करण विशेष उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक संस्करण :—उपर्युक्त टीका-संस्करणों के अतिरिक्त अन्य भी बहुत-से संस्कृत-टीका-संस्करण हैं जो एक ही साथ सम्पूर्ण काव्य के हैं, अथवा आरम्भ से आठ सर्गों तक के हैं या एक-दो-तीन सर्गों के आंशिक रूप में हैं। ये आंशिक संस्करण वाराणसी आदि विभिन्न स्थानों से प्रकाशित हैं और विश्वविद्यालयों में पाठ्यग्रन्थ के रूप में निर्धारित हैं। प्रसंग में डॉ० वनेश्वर पाठक द्वारा विस्तृत भूमिका आदि के साथ सम्पादित तथा सुबोधग्रन्थमाला, राँची से प्रकाशित कुमार-सम्भव के तृतीय तथा पञ्चम सर्गों की 'सुप्रभा' टीका तथा सुबोधग्रन्थमाला, राँची से ही प्रकाशित डॉ० अयोध्याप्रसाद सिंह—डॉ० चन्द्रकान्त शुक्ल द्वारा सम्पादित कुमारसम्भव-पञ्चम सर्ग की व्याख्या आदि छात्रोपयोगी संस्करण विशेष उल्लेख्य हैं।

विशेष ज्ञातव्य :—श्री विट्ठलशास्त्री द्वारा सम्पादित कुमारसम्भव के आठवें सर्ग से सतरहवें सर्ग तक तथा सीताराम द्वारा सम्पादित[९] नवम सर्ग से सप्तदश सर्ग तक के टीका-संस्करणों का मूल स्रोत आज तक उपलब्ध नहीं है अतः हरिचन्द्र

---

१. एग्लिङ्गकृत संस्कृत-पुस्तक-सूची, वाल्यूम ६, क्र० सं० ३७५७, पृ० १४१८।
२. गवर्नमेण्ट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी, मद्रास।
३. गवर्नमेण्ट ,, ,, ,, ,,
४. लेखक अज्ञात ,, ,, ,, ,,
५. ,, ,, ,, ,, ,,
६. ,, ,, ,, ,, ,,
७. मिथिला-संस्कृत-पुस्तक-सूची भाग २।
८. ,, ,,
९. केवल आर. एल. मित्र ने एक ऐसी हस्तलिखित प्रति का उल्लेख किया है—K. L. Mitra—Zotices X no. 328), P. 38.

शास्त्री[1], जैकोबी[2] वेबर[3] प्रभृति विद्वानों ने कुमारसम्भव के नवम सर्ग से सप्तदश सर्ग तक के सभी सर्गों को पीछे से जोड़ा हुआ माना है। कुमारसम्भव के कुछ प्राचीनतम संस्करणों में आरम्भ से सात ही सर्ग मिलते हैं। किन्तु अष्टम सर्ग पर भी प्राचीन टीकाकार मल्लिनाथ तथा अर्जुनगिरि की टीकाओं को देखकर और उस सर्ग में कालिदासकृत शिव-पार्वती के शृंगारिक वर्णन को मम्मटादि आचार्यों के द्वारा दोषदृष्टि से देखा हुआ विचार कर अष्टम सर्ग को भी कालिदास की ही रचना माना जाता है। प्रो० शिवप्रसाद भट्टाचार्य ने भी यह विवादास्पद प्रश्न उठाया है[4]। विवादों के रहते हुए भी यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ये सर्ग (नवम से सप्तदश तक) चौदहवीं शताब्दी से पहले के ही जोड़े हुए हैं।

तामिल भाषा-संस्करण—

(१) वी. एस. वेङ्कटराघवाचार्य द्वारा लिटिल फ्लावर कम्पनी, मद्रास से १९५२ ई० में सम्पादित प्रथम, द्वितीय तथा पञ्चम सर्ग का तामिल पद्यानुवाद।

(२) वी. एस. रंगनाथ द्वारा भारतदेवी से १९५० ई० में सम्पादित पञ्चम सर्ग का तमिल अनुवाद।

हिंदी भाषा-संस्करण—

(१) पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रयाग से १९२३ ई० में सम्पादित कुमारसम्भव हिन्दी-अनुवाद।

(२) पं० श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा चौखम्बा संस्कृत सीरीज (सं० ९०), वाराणसी से प्रकाशित हिन्दी-पद्यानुवाद।

(३) श्री प्रद्युम्न पाण्डेय द्वारा चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्रकाशित 'प्रकाश' हिन्दी टीका-सहित कुमारसम्भव का सम्पूर्ण संस्करण।

(४) राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली से प्रकाशित कुमारसम्भव की सम्पूर्ण हिन्दी व्याख्या।

(५) मल्लिनाथ तथा सीताराम की टीका के साथ ८-१७ सर्गों तक वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई से १८९५ ई० में प्रकाशित।

---

1. Kalidasa et L' Art Poetique de L' Inde, Paris 1917. P. 2356.
2. Verhanl d. v. Orient Kangress, Berlin 1881, II P. 133-56.
3. Z. D. M. G. XXVII P. 174 f, and in Ind. Strifen III P. 217 f.
4. Proceedings of the 5th oriental conference vol. I. P. 43-44.

(६) उपर्युक्त टीकाओं के साथ ८-१७ सर्गों तक तारानाथ भट्टाचार्य द्वारा वाल्मीकि प्रेस कलकत्ता से वि० सं० १९२७ में प्रकाशित।

(७) मल्लिनाथ की सञ्जीवनी टीका के साथ अंग्रेजी अनुवाद सहित कोहनूर प्रिंटिंग प्रेस कलकत्ता से १९२७ ई० में प्रकाशित।

रघुवंश महाकाव्य—

कालिदास के काव्यों में 'रघुवंश' सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है। प्रायः सभी विदेशी विश्वविद्यालयों में संस्कृत शिक्षार्थियों के लिए यह महाकाव्य (आंशिक रूप में) पाठ्य ग्रंथ के रूप में निर्धारित है। भारतवर्ष के सभी विश्वविद्यालयों में यह महाकाव्य पढ़ाया जाता है। इसीलिए इसके संस्करणों की अधिकता है।

विदेशी भाषा-संस्करण :—

(क) लैटिन भाषा-संस्करण :—

(१) श्री ए. एफ. स्तेंस्लर (A. F. Stenzler) द्वारा सम्पादित तथा १८६२ ई. में लन्दन से प्रकाशित लैटिन भाषा अनुवाद।

(ख) आंग्ल भाषा-संस्करण :—

(१) श्रीगोपालरघुनाथनन्दर्गीकर द्वारा मल्लिनाथी टीका के साथ संपादित तथा १८९७ ई० में बम्बई से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(२) अमेरिका निवासी आर्थर विलियम रायडर द्वारा रघुवंश का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में लन्दन तथा न्यूयार्क से प्रकाशित[1]।

(३) एम. आर. काले द्वारा अंग्रेजी अनुवाद के साथ सम्पादित तथा बम्बई से १९२९ ई० में प्रकाशित।

(४) हरिचरण गंगोपाध्याय तथा रामगोपाल भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित विस्तृत भूमिका आदि के साथ अंग्रेजी. अनुवाद, के. एम. गांगुली, कलकत्ता से १९०१ ई० में प्रकाशित।

---

1. Raghuvansha with English Translation (in the vol. "Translation of Shakuntala and other works.")—Every man's Library London, 1928 (Reprint) Published by K. G. Sharangapani.

(५) शंकरपाण्डुरंग पण्डित द्वारा सम्पादित विस्तृत भूमिका के साथ अंग्रेजी अनुवाद, बाँम्बे संस्कृत सीरीज से १८७४ ई० में प्रकाशित।

(६) नारायण राम आचार्य द्वारा सम्पादित तथा बम्बई से १९४८ ई० में प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(७) प्रो. आर. डी. करमरकर द्वारा सम्पादित तथा पूना से १९५४ ई० में प्रकाशित विस्तृत भूमिका-सहित अंग्रेजी अनुवाद।

(८) चण्डी प्रसाद द्वारा सम्पादित तथा रामनारायणलाल, इलाहाबाद से १९५६ ई० में प्रकाशित।

(९) शारदारञ्जनराय द्वारा सम्पादित टिप्पणी आदि सहित अंग्रेजी अनुवाद।

(१०) भवानीदत्त शास्त्री द्वारा मोरादाबाद से १९०४ ई० में प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(११) नवीनचन्द्रदास द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद।

(१२) पी. डी. एल. जाँन्सटन (P. D. L. Johnston) द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद।

(१३) कैप्टन टेल द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद (द्वादश सर्ग पर्यन्त)।
(Captain tell—catalogue of Sanskrit Mss. by Eggling, Part VII, P. 1417. serial No. 3752).

(१४) सीताराम द्वारा सम्पादित तथा नेशनल प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(१५) रघुवंश का अंग्रेजी अनुवाद 'पण्डित' पत्रिका, भाग २–४ में वाराणसी से प्रकाशित।

(ग) फ्रेंच संस्करण :—

(१) फौचे (M. Hippolyte-Fauche) द्वारा सम्पादित फ्रेंच अनुवाद।

(घ) जर्मन संस्करण :—

(१) लुईस रनु (Louis Renou) द्वारा पेरिस से १९२८ ई० में सम्पादित जर्मन अनुवाद। (Kalidasa, Le Raghuvansha, poem en XIX chants, trad du Sanskrit).

(ङ) रूसी भाषा संस्करण :—

(१) रूसी भाषा में भी रघुवंश का अनुवाद प्रकाशित हुआ है। यह संस्करण लेनिनग्राड के प्राच्य विद्यासंस्थान में प्राप्य है।

भारतीय भाषा संस्करण :—

संस्कृत—

(१) वल्लभदेव की टीका के साथ सम्पादित[1]।
(२) जनार्दन (११९३–१३८५ ई० के मध्य) की टीका के साथ सम्पादित।
(३) चरित्रवर्द्धन की टीका के साथ सम्पादित[2]।
(४) दिनकरमिश्र (१३८५ ई०) द्वारा सम्पादित[3]।
(५) मिथिलानिवासी दिवाकर उपाध्याय (१३८५ ई. से पूर्व) द्वारा सम्पादित[4]।
(६) बृहस्पति मिश्र की टीका के साथ सम्पादित।
(७) भगीरथ मिश्र (भगीरथकवि) द्वारा सम्पादित[5]।
(८) भरतमल्लिक की टीका के साथ सम्पादित[6]।
(९) मल्लिकनाथ (चौदहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) की 'सञ्जीवनी' टीका के साथ सम्पादित[7]।

---

1. B. O. R. 1. 82 ard 84 of 1883-84.
2. Annal of B. O. R. I. XV P. 109-11
3. B. O. R. I. Baroda—11364.
4. Mithila 358, Mithila 11, P. 114. I. O. No. 3480/1616 d.
5. Aufretch—1. P. 394 b.
6. A. S. P. 152. Mithila 11 P- 11, I. O. 3734,1584.
7. R. A. S. B. 4958/4028.

(१) गोपालरघुनाथ नन्दर्गिकर ने अंग्रेजी अनुवाद, टिप्पणी आदि के साथ मल्लिनाथी टीका का सम्पादन बम्बई से १८९७ ई० में प्रकाशित कराया था।

(२) कनकलाल ठक्कुर ने अपनी भावबोधिनी टीका के साथ मल्लिनाथी टीका का सम्पादन काशी से १९२६ ई० में किया था।

(३) शङ्कर पाण्डुरंग पण्डित ने अपनी टीका के साथ इसका सम्पादन बम्बई सं० सीरीज से १८७२-७४ ई० में तथा १८९७ ई० में तीन भागों में किया था।

(४) वासुदेव लक्ष्मणशास्त्री ने मल्लिनाथी टीका का सम्पादन निर्णयसागर प्रेस (सं० १०) से १९३२ ई० में किया था।

(१०) श्रीवत्सव्यास की टीका के साथ सम्पादित[1]।

(११) विजय सूरि की टीका के साथ सम्पादित[2]।

(१२) हरिदासकृत व्याख्या के साथ सम्पादित।

विशेष—ये १२ प्राचीन टीकाकार मेघदूत के भी टीकाकार हैं।

(१३) एस. पी. पण्डित द्वारा सम्पादित तथा बम्बई संस्कृत सीरीज, बम्बई से १८६९-७४ ई. में प्रकाशित।

(१४) बृहस्पतिमिश्र की रघुवंशविवेक या रघुवंशदीपिका।

(१५) हेमाद्रि की दर्पण टीका।

(१६) मल्लिकभट्ट की रघुवंशविवरण या दर्पण टीका।

(१७) चारित्रवर्द्धन की शिशुहितैषिणी टीका।

(१८) दक्षिणावर्त्तनाथ की रघुवंश टीका।

(१९) धर्ममेरु की रघुवंशटीका, ये टीका-संस्करण प्रकाशित हैं और कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में विद्यमान हैं।

(२०) कनकलालठाकुर द्वारा बनारस से १९२६ ई० सम्पादित भावबोधिनी टीका।

(२१) गौरीनाथपाठक द्वारा हिन्दी-अनुवाद के साथ काशी से १९३३ ई० में सम्पादित सुबोधिनी या गौरीनाथी टीका।

(२२) ज्वालाप्रसाद मिश्र द्वारा हिन्दी-अनुवाद सहित वेंकटेश्वरप्रेस बम्बई से १८२९ ई० में प्रकाशित भावार्थदीपिका टीका।

(२३) ब्रह्मशंकरमिश्र द्वारा चौ० सं० सीरीज (सं० ८४) वाराणसी से प्रकाशित सुधा टीका।

(२४) नारायण महेश्वर की पदार्थदीपिका टीका—(गवर्नमेंट ओरियन्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी, मद्रास)।

---

1. B. O. R. I. 748 of 1886-92 Baroda-6089 and-71
2. B. O. R. I. 443 of 1887-91.

(२५) महामहोपाध्याय शशिधर की प्रकाशटीका—डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट्स, मिथिला, भाग २)

(२६) भीमसेन दीक्षित की अलंकाररत्नावली टीका—(कैटलाग आफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी, वम्बई युनिवर्सिटी)।

(२७) रत्नचन्द की रघुवंशटीका (अपूर्ण)—(गवर्नमेंट मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी, भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीच्यूट, पूना)।

(२८) हरिदासमिश्र की प्रकाशिका टीका—(गवर्नमेंट मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी, भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीच्यूट, पूना)।

(२९) पं० रामतेजशास्त्री द्वारा सम्पादित रघुवंशम् संस्कृतटीका सहितम्।

(३०) पं० रामचन्द्रमिश्र द्वारा सम्पादित तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय से १९७९ ई० में प्रकाशित सम्पूर्ण रघुवंश मूलमात्र।

विशेष—डॉ० आद्याप्रसाद मिश्रने अपने 'कालिदास साहित्यम्' (कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय प्रकाशन १९६२ ई०) में निम्नलिखित अप्रकाशित टीकाओं का उल्लेख किया है—(१) गुणविनयगणिकृत रघुवंशटीका, (२) महामहोपाध्याय कृष्णभट्टकृत सन्देह विषौषधिटीका, (३) नवनीतकृत तत्त्वार्थदीपिका टीका (४) राजमुकुन्दकृत दुर्घटसंग्रहटीका, (५) आनन्दयतिवल्लभकृत अर्थालापनिका टीका (६) समयसुन्दरकृत पञ्जिका टीका, (७) अरुणगिरिनाथकृत प्रकाशिकाटीका, (८) नारायणपण्डितकृत पदार्थदीपिकाटीका, (९) जयसिंहकृत विवरणटीका, (१०) गोपीनाथ तथा (११) भगीरथकृत रघुवंशव्याख्या, (१२) सुमतिविजयकृत रघुवंशटीका, (१३) दिनकरकृत सुबोधिनीटीका, (१४) विजयानन्दकृत रघुवंशव्याख्या, (१५) विजयगणिकृत विस्तरटीका और (१६) वल्लभदेवकृत रघुवंशव्याख्या।

आधुनिक संस्करण :—

(१) सञ्जीवनी, मणिप्रभा एवं विमर्श टीका के साथ सम्पूर्ण तथा आंशिक रूप में पृथक्-पृथक् प्रकाशित।

(२) सम्पूर्ण हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित।

(३) ब्रह्मशङ्करमिश्र द्वारा 'सुधा' व्याख्या के साथ पृथक्-पृथक् सर्गों में चौ. सं. सी. (सं. ८४) से १९३० ई० में प्रकाशित।

(४) श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी द्वारा पृथक्-पृथक् सर्गों में प्रकाशित।

(५) श्री शेषराजशर्मा कृत 'चन्द्रकला' व्याख्या के साथ प्रकाशित केवल १३-१४ सर्गात्मक।

(६) जितेन्द्राचार्यकृत हिन्दी टीका सहित केवल १३-१४ सर्गात्मक।

(७) डॉ० वनेश्वरपाठककृत विस्तृतभूमिका आदि के साथ हिन्दी-संस्कृत (सुप्रभा) व्याख्यासहित सुबोधग्रन्थमाला, राँची से प्रकाशित रघुवंश त्रयोदशसर्ग।

(८) रघुवंश-द्वितीय सर्ग की व्याख्याएँ तो बहुत हैं।

(९) डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी द्वारा ईश्वरसूरि के पुत्र भट्टहेमाद्रि १५०० ई० द्वारा प्रणीत 'दर्पण' टीका के साथ सम्पादित—१९७३-७४.

(१०) मल्लिनाथी टीका के साथ रघुवंश का सम्पूर्ण नवीनतम संस्करण श्रीधारादत्तमिश्रकृत संस्कृत-हिन्दी, व्याख्या सहित मोतीलालबनारसीदास से १९७५ में प्रकाशित।

(हिन्दी)

(१) राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा सम्पादित, आगरा से १८७८ ई० में प्रकाशित हिन्दी-अनुवाद।

(२) रामप्रसादसारस्वत द्वारा सम्पादित, आगरा से १९३७ ई० में प्रकाशित हिन्दी अनुवाद।

(३) पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित, काशी से १९२३ ई० में प्रकाशित हिन्दी-अनुवाद।

(४) लाला सीताराम द्वारा सम्पादित, रामनारायणलाल, प्रयाग से प्रकाशित हिन्दी-अनुवाद।

(५) चौखम्बा सं० सीरीज (सं०५१) वाराणसी से १९५३ में प्रकाशित हिन्दी-अनुवाद।

(६) इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से प्रकाशित रघुवंश का सम्पूर्ण हिन्दी रूपान्तर।

(७) सरयू प्रसाद मिश्र द्वारा सम्पादित रघुवंश का हिन्दी पद्यानुवाद।

(तमिल) :—

(१) अरसकेसरी द्वारा सम्पादित, १९१५ ई० में प्रकाशित रघुवंश का तमिलपद्यानुवाद ।

(२) वी. एस. वेङ्कट राघवाचार्य तथा वी. एस. रङ्गनाथन द्वारा सम्पादित, लिटिल फ्लावर कम्पनी, मद्रास से १९५२ ई० में तमिलभाषा में प्रकाशित रघुवंश व्याख्या ।

(३) रघुवंश का तमिल-अनुवाद १८९० ई० में प्रकाशित ।

(४) डी. टी. ताताचार्य द्वारा सम्पादित तथा श्री वेङ्कटेश्वर ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट, तिरुपति से प्रकाशित रघुवंश की तमिल-व्याख्या ।

मेघदूत

लोकप्रियता की दृष्टि से मेघदूत का भी, संस्कृत साहित्य में, महत्वपूर्ण स्थान है। 'माघे मेघे गतं वयः' यह उक्ति प्रचलित ही हैं। एक विशिष्ट काव्य-रचना-शैली (दूतकाव्य-शैली) का प्रवर्त्तक होने के कारण भी संस्कृत साहित्य में इसका विशिष्ट स्थान है। प्रायः सभी भाषाओं में इसके विभिन्न संस्करण प्राप्य हैं। कई भाषाओं में इसके पद्यात्मक अनुवाद भी हुए है। कुछ कवियों ने तो इसके पद्यों के चरणों को भी अपने पद्यों में समस्यापूर्ति के रूप में समावेशित किया है[1]। मेघदूत के जितने संस्करण हैं उतने और किसी संस्कृत काव्य के नहीं हैं। मेघदूत पर भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में लिखी गई टीकाओं तथा इसके अनुवादों की सम्मिलित संख्या १५० से भी अधिक है। इसके संस्करण इस प्रकार हैं :—

विदेशीभाषासंस्करण—

(क) आंग्लभाषा संस्करण—

(१) होरेस हेमैन विलसन (नवस्थापित 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बेंगाल' के प्रथम सचिव) ने मेघदूत के मूल पाठ के साथ इसका पद्यानुवाद हिन्दुस्तानी प्रेस कलकत्ता से १८१३ ई० में प्रकाशित कराया था[2]।

---

१. जैनकवि जिनसेन का 'पार्श्वाभ्युदय' द्रष्टव्य है।

2. **H. H. Wilson (Horace Heyman Wilson)—The Meghaduta Cloud messenger: A Poem in the Sanskrit Language by Kalidasa.**

विशेष—विदेशी भाषाओं में मेघदूत का यह प्रथम संस्करण है। इस संस्करण के सम्पादन में विलसन ने मेघदूत की तीन हस्तलिखित प्रतियों को आधार ग्रन्थ के रूप में ग्रहण किया था—दो पेरिस से प्राप्त और एक कोपेनहेग से प्राप्त। इस संस्करण के माध्यम से मेघदूत का प्रथम परिचय प्राप्त कर जर्मन कवि गेटे ने कहा है—'ऐसे ग्रन्थ का प्रथम परिचय हमारे जीवन की एक शाश्वतघटना है[१]।'

इस संस्करण का पुनर्मुद्रण 'ब्लैक पेरी एण्ड कम्पनी, लन्दन[२] से १८१४ ई० में हुआ था। इसका द्वितीय संस्करण 'रिचार्ड वाट्स[3], लन्दन' से १८४३ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका तृतीय संस्करण ट्रुब्नर एण्ड कम्पनी,[४] लन्दन से १८६७ ई० में प्रकाशित हुआ। विलसन के संस्करण से प्रेरित होकर अनेक विदेशी विद्वानों ने मेघदूत का अनुवाद और व्याख्या की हैं।

(२) मेघदूत का अंग्रेजी में गद्यात्मक अनुवाद कर्नल हेनरी ऐम औव्री ने विलियम्स एण्ड नार्गेट, लन्दन[५] से १८६८ ई० प्रकाशित कराया था[६]।

(३) मेघदूत का दूसरा अंग्रेजी गद्यात्मक अनुवाद जार्ज ए. जैकब ने पूना से १८७० ई० में प्रकाशित कराया था।

(४) मेघदूत का तीसरा अंग्रेजी पद्यानुवाद थामस क्लर्क ने ट्रुब्नर एण्ड कम्पनी, लन्दन से १८८२ ई० प्रकाशित कराया था[७]।

(५) मेघदूत का चौथा आंग्लभाषानुवाद चार्ल्सकिंग[८] ने 'दि विज्डम ऑफ दि ईस्ट सीरीज, जौन मुरे, लन्दन[९] से १९३० ई० प्रकाशित कराया था।

---

1. "The first meeting with a work such as this is always an event in our life". (Notes to the west East Divan)
2. Black Parry and London.
3. Richard wat ts London.
4. Trubner and co. London.
5. Williams and Norgate London.
6. Clolonel Henry Aime Ouvry—The Meghaduta or Cloud Messenger by Kalidasa·
7. Thomas clerk—Meghaduta the cloud messenger, a poem by Kalidasa.
8. Charlsking.
9. The wisdom of the East series, John Murray, London.

(६) अमेरिका निवासी आर्थर विलियम रायडर ने जे० एम० देन्त एण्ड संण्स लिमिटेड, लन्दन[1] से तथा ई० पी० दत्तन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क[2] से १९१२ ई० और एवरी मैन्स लायब्रेरी[3] से १९२० एवं १९२९ ई० में मेघदूत का आंग्लभाषानुवाद[4] प्रकाशित कराया था।

(७) मेघदूत का एक दूसरा अंग्रेजी अनुवाद कोसेगार्टन ने किया है; जिसकी प्रशंसा जर्मन कवि गेटे ने की है।

(८) ई० हुल्त्स[5] ने भी मेघदूत का अंग्रेजी अनुवाद किया है; जो वल्लभदेव की पञ्जिका वृत्ति के साथ आर० ए० एस० लन्दन से १९११ ई० में प्रकाशित है।

(९) ई० मुईर (E. Muier) द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद—(Published in his "Classical Poetry of India" Vol. III, P. 90 ff.)

(१०) आर. टी. एच. ग्रीफिथ द्वारा सम्पादित इलाहाबाद से १९१३ ई० में अंग्रेजी अनुवाद—(Meghaduta or Messenger cloud.)

(११) पं० काशीनाथ बापू पाठक (K. B. Pathk) द्वारा सम्पादित, आर्यभूषण प्रेस पूना से १८९२ ई० (द्वितीय सं० १९१६ ई०) में प्रकाशित मल्लिनाथी टीका के साथ अंग्रेजी अनुवाद।

(१२) गोपाल रघुनाथ नन्दर्गीकर द्वारा सम्पादित, गोपालनारायण ऐण्ड कम्पनी बम्बई से १८९४ ई० में प्रकाशित विभिन्न पाठों के साथ गद्यात्मक अंग्रेजी अनुवाद।

(१३) डॉ० एस० के० द्वारा साहित्य अकादमी दिल्ली से १९५९ में प्रकाशित—(Meghaduta critically edited with introduction, select Bibliography, Indices etc.)

---

1. J. M. Dent and Sons, Ltd. London.
2. E.P. Dutton and and co. New york.
3. Every man's Library.
4. Arthur william Ryder—Kalidasa (translation of Shakuntala and other works, viz, Raghu Kumar. Megha and Ritu Samhara).

5 E. Hultzsch

(१४) डॉ० जे० बी० चौधरी द्वारा सम्पादित, प्राच्यवाणी कलकत्ता से १९५१ ई० में प्रकाशित, विभिन्न पाठों एवं भरतमल्लिक की टीका के साथ अंग्रेजी अनुवाद।

(१५) पण्डितपत्रिका बनारस से १८६७ ई० में प्रकाशित गद्यात्मक अंग्रेजी अनुवाद।

(१६) एम० आर० काले द्वारा बम्बई से प्रकाशित आलोचनात्मक अंग्रेजी-अनुवाद।

(१७) पृथिवी प्रकाशन असी, वाराणसी से प्रकाशित अंग्रेजी पद्यानुवाद—क्लाउड मेसेंजर।

(ख) (लैटिन संस्करण)—

(१) एच० बी० कोनिग द्वारा बोन से १८४१ ई० में प्रकाशित—(Kalidasa's Mighaduta et Shringartilaka (Text with notes and glossory in Latin.)

(ग) जर्मनभाषा संस्करण—

(१) जर्मन भाषा में मेघदूत का प्रथम संस्करण जौन गिल्डेमिस्टर ने बोन से १८४१ ई० में प्रकाशित कराया था[1]। गिल्डेमिस्टर का यह संस्करण एच. एच. विलसन से प्राप्त मेघदूत के तीन हस्तलिखित ग्रन्थों (देवनागरी लिपि में लिखित एक तथा बंगला लिपि में लिखित दो) के साथ प्रकाशित है। इसमें शृङ्गारतिलक के २३ पद्य भी सम्मिलित हैं। इस संस्करण में मेघदूत के नवीन शब्दों का लैटिनभाषा में अनुवाद भी किया गया है।

(२) मेघदूत का दूसरा जर्मन संस्करण जौन हेबर्लिन[2] ने अपने काव्यसंग्रह में केवल मूल ग्रन्थ को ही विलसन के ग्रन्थ के आधार पर संगृहीत कर डब्ल्यू थैक्कर एण्ड कम्पनी, कलकत्ता[3] से १८४७ ई० प्रकाशित कराया था। जौनहेबर्लिन के संस्करण के आधार पर ही दीनानाथन्यायरत्न ने अपने काव्यसंग्रह में मेघदूत का संस्करण काव्यप्रेस कलकत्ता से १८६९

1. J. Gildemiester—Kalidasa Meghaduta et Shringar tilaka. ex rceensione.
2. John Haeberlin.
3. W. Thacker and Co. Calcutta.

ई० में, और जीवानन्दविद्यासागर ने अपने काव्यसंग्रह में नूतन भारत-प्रेस, कलकत्ता से मेघदूत का संस्करण प्रकाशित कराया है।

(३) मेघदूत का तीसरा जर्मन संस्करण प्रो० मेक्समूलर ने कोनिंगसबर्ग[1] से १८४७ ई० में प्रकाशित कराया था[2]।

(४) मेघदूत का चौथा जर्मन संस्करण सी० स्कुत्स[3] ने 'कालिदासाज वोल्केन बोट[4] के नाम से बेलफील्ड[5] से १८५९ में प्रकाशित किया था।

यह प्रथम जर्मन गद्यानुवाद है। यह संस्करण विल्सन के संस्करण पर आवृत है।

(५) मेघदूत का पाँचवाँ जर्मन संस्करण एडोल्फ फ्रेडरिक स्तेन्सलर[6] ने ब्रेस्ला[7] से १८७४ ई० में प्रकाशित कराया था। इस संस्करण में स्तेन्सलर ने गिल्डेमिस्टर से प्राप्त उपर्युक्त तीनों ग्रन्थों के साथ एक और बंगला लिपि में लिखे हुए हस्तलिखित ग्रन्थ का उपयोग किया है जो उन्हें बर्लिन से प्राप्त था[8]।

(६) मेघदूत का छठा जर्मन संस्करण लुडविग फ्रिज[9] ने केमनिज[10] से १८७९ ई० में प्रकाशित कराया था।

(७) मेघदूत का सातवाँ जर्मन संस्करण डिन, बर्लिन से प्रकाशित है—
Zur Text kritik von Kalidasa Meghaduta—Din, Berlin.

(८) मेघदूत का आठवाँ जर्मन संस्करण हरमन बेख ने बर्लिन से १९०७ ई० में सम्पादित किया था—(Ein Beitrag zur text kritik von Kalidasas Meghaduta (Diss)—Herman Beckh, Berlin 1907)

---

1. Koningsberg.
2. मैक्समूलर के संस्करण का नाम है—Meghaduta oder der Walken bote.
3. C. Schutz.
4. Kalidasa's Wolken bote.
5. Beilefield.
6. A. F. Stenzler.
7. Breslau.
8. Berlin, Chambers 152.
9. Ludwing Fritz—Meghduta, das its, der wolken bote.
10. Chemnitz.

(९) मेघदूत का नौवाँ जर्मन संस्करण श्री बेख ने बर्लिन से १९०७ में तिब्बती संस्करण के साथ सम्पादित किया था—(Die tibetische Ubersetrung von Kalidasas Meghaduta)

(ग) फ्रेंचभाषासंस्करण—

(१) मेघदूत का प्रथम फ्रेंचभाषा-संस्करण हिपोफोचे ने सम्पादित किया था जो पेरिस से १८५९-ई० मे प्रकाशित हुआ था[1]। इसका पुनः प्रकाशन पेरिस से ही १९६५ ई० में हुआ[2]।

(२) मेघदूत का द्वितीय फ्रेंच संस्करण कर्नल हेनरी ऐम औव्री ने विलियम एण्ड नौर्गेट, लन्दन से १८६९ ई० में प्रकाशित कराया था[3]।

(३) मेघदूत का तृतीय फ्रेंच संस्करण ए. गुरीनो ने पेरिस से १९०२ ई० में प्रकाशित किया था[4]।

(४) मेघदूत का एक फ्रेंच संस्करण पेरिस से १९६६ ई० में प्रकाशित हुआ था—(Le Nuager Messager Poeme, Tradnit du Sanskrit apned's I, explication de P. E. Faucauz).

(घ) इतालियन भाषा-संस्करण—

(१) इतालियन भाषा में मेघदूत का अनुवाद एफ. ए. पुल्ले ने फिरेंज से १८९७ ई० में प्रकाशित कराया था[5]।

(२) मेघदूत का एक दूसरा इतालियन संस्करण फिरेंज से ही १८९७ ई० में प्रकाशित हुआ था—(Meghaduta o la nube messaggera. Tradotto. da Giovanni Flechia.—C. Carnesecchic Fizli, Firenze 1897)

(ङ) रुसी भाषा-संस्करण—

(१) रुसी (उक्रैनियन) भाषा में मेघदूत का गद्यानुवाद 'ओल्वाको वेस्तनिक' अथवा 'मेघदूत और दि क्लाउड मेसेन्जर' के नाम से प्रो. पाल रित्तेर ने

---

1. Hippolyte Fauche—Librairie de A. Durand, Paris.
2. Librairie Internationale.
3. Colonel Henry Aim ouvery—Le Meghduta on le Nuage Messenger. William Norgate London.
4. A. Guerinot—Meghduta Le Nuage Messanger.
5. F. A. Pulle, Firenze.

'उक्रैनियन् सोसायटी ऑफ ओरियन्टल रिसर्च खारकोव[1]' से १९२८ ई० में प्रकाशित कराया था।

इस संस्करण में मेघदूत पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा बंगला भाषा में लिखित निबन्ध भी समाविष्ट है। इस अनुवाद के सम्पादन में प्रो. रित्तेर ने श्रीगोडन्लेन तथा परब द्वारा सम्पादित मल्लिनाथीटीकासहित मेघदूत का, गिल्डेमिस्टर के संस्करण का, तिब्बती भाषानुवाद का तथा भारत और युरोप में प्रकाशित अन्य संस्करणों का भी उपयोग किया है। इस अनुवाद के आरम्भ में प्रो. रित्तेर ने रुसी पाठकों की सुविधा के लिए मन्दाक्रान्ता छन्द के रुसी रूपान्तर की संगीतलिपि का भी प्रयोग किया है। प्रो. रित्तेर ने मेघदूत को 'रालेजिचेश्की इ स्त्रान्तनी मोनोलॉग' (करुणापूर्ण सन्तप्त हृदय का स्वगतोद्‌गार) कहा है।

(च) चीनीभाषा संस्करण—

(१) चीनी भाषा में मेघदूत का संस्करण पेकिंग से १९५६ ई० मे प्रकाशित हुआ है; जिसका समर्थन इस समय 'सिनिआन्यूज' नामक एक समाचार समिति ने किया है।

(छ) जापानी भाषा-संस्करण—

(१) जापानी भाषा में मेघदूत का अनुवाद क्योतो विश्वविद्यालय, जापान के संस्कृत प्राध्यापक एच. वयुमुरा (हिन्दी भाषा में हृदय कुमार नाम से विख्यात) ने किया है।

(ज) तिब्वती भाषा-संस्करण—

(१) तिब्वती भाषा में मेघदूत का संस्करण तंजोर में प्राप्त हुआ है। इस संस्करण का जर्मनभाषानुवाद डॉ० एच० वेख (हरमनबेख) ने १९०७ ई० में बर्लिन से प्रकाशित किया है। इस तिब्बती संस्करण पर डॉ० बेख ने शोधकार्य किया है। उनका शोधग्रन्थ[2] बर्लिन विश्वविद्यालय से १९०७ ई० में प्रकाशित है। डॉ० बेख ने उस शोधग्रन्थ में तिब्बती संस्करण का समय तेरहवीं शताब्दी लिखा है।

---

1. Prof. Paul Ritter—Ukrainian Society of oriental Research, Kharkov.
2. Die tibetische Uberstrung von Kalidasas Meghduta. Nach dem roten und schwarzen Tanjur herausgegeben und ins Deutsche Ubertrgen von (in tibetan script).

(झ) नेपालीभाषा-संस्करण—

(१) नेपाली भाषा में मेघदूत का पद्यानुवाद 'मेघदूतच्छाया' के नाम से प्रकाशित है। इसके प्रकाशक श्रीचक्रपाणि शर्मा हैं। प्रो० मैकडोनेल ने भी अपने प्रतिवेदन में नेपालीभाषा में लिखित मेघदूत की एक प्रति का उल्लेख किया है। इसका रचनाकाल १३६४ ई० है। यह प्रति नेपाल के महाराजपुस्तकालय में प्राप्य है।

(ञ) स्वेडिश-भाषा-संस्करण —

(१) एच. एज्रीन ने मेघदूत का स्वेडिशभाषानुवाद मालमो, गेटवर्ग से १८७५ ई० में सम्पादित किया था—(Malubudet Meghaduta) Etl indiskt skuldestycke (मेघदूत भारतीय कविता-अनुवाद और टिप्पणी in Swedish). Malmo, Gate barg, 1875.)

(ट) डेनिशभाषा-संस्करण—

(१) पी. मरकुसेन ने मेघदूत का डेनिश संस्करण १८८२ ई० में सम्पादित किया था। (O sky budet en indisk Elegi Metrisk over sat. P. Markussen—Kjeben huun, 1882).

(ठ) जेचभाषा-संस्करण—

(१) प्रो. जोसेफ जुबैती तथा जोरोमिर बोरेस्की ने मेघदूत का जेचभाषा अनुवाद प्रकाशित किया था।

(ञ) सिंहलीभाषासंस्करण—

(१) सिंहली भाषा में मेघदूत का एक अनुवाद कानड़ीनिवासी श्रीगुणतिलक को मिला है और वह मूलपाठ के साथ टी. बी. पानबोके तथा जी. जे. ए. स्कीन द्वारा कोलम्बो से १८९३ ई० में प्रकाशित हुआ है। यह सिंहलीभाषानुवाद[1] मेघदूत का भावानुवाद[2] है।

विशेष :—आचार्यललिताप्रसाद शुक्ल द्वारा १९५८ ई० में सम्पादित मेघदूत की भूमिका से ज्ञात होता है कि डेनिश, फ्रेञ्च, इटालियन, स्वेडिश,

---

1. A Sanskrit poem by Kalidasa.
2. Paraphrase.

पोलिश, हंगेरियन, ईरानी आदि विदेशी भाषाओं में मेघदूत के बहुत-से अनुवाद किए गए हैं।

(ङ) भारतीय (संस्कृतेतर) भाषा-संस्करण—
(तेलगुभाषा-संस्करण)—

(१) तेलगु भाषा में मेघदूत के संस्करण (१९०८ ई०) का उल्लेख डॉ० हुल्त्स ने किया है।

(२) मेघदूत का एक तेलगुभाषा-संस्करण विवेकादर्श प्रेस, मद्रास से १८७६ ई० में प्रकाशित है।

(३) मेघदूत का एक दूसरा तेलगुभाषा-संस्करण विबुधमनोहारिणी प्रेस, मद्रास से १८७६ ई० में प्रकाशित है।

(४) मेघदूत का एक तीसरा तेलगुसंस्करण आदिसरस्वतीनिलय प्रेस, मद्रास से १८७७ ई० में प्रकाशित है।

(५) दामेरा राजगोपालराव ने १९५२ ई० में मेघसन्देश का तेलगु काव्यानुवाद प्रकाशित किया था।

(तमिलसंस्करण)—

(१) श्री के. सन्थनम (भूतपूर्व राज्यपाल, विन्ध्य प्रदेश) मेघदूत का तमिल अनुवाद १९५८ ई० में प्रकाशित कराया था।

(२) मेघदूत का तमिल पद्यानुवाद।

(कन्नड़भाषा-संस्करण)—

(१) कन्नड़ भाषा में मेघदूत का संस्करण श्रीकोलारदनारायणशास्त्रिगल ने विचारदर्पण प्रेस बेंगलोर से १८७६ ई० में प्रकाशित किया है।

(२) सुब्रह्मण्यशास्त्री ने मेघसन्देश का एक कन्नड़ अनुवाद शिमोगा कर्नाटक संघ से १९३१ ई० में प्रकाशित कराया था।

(३) मेघसन्देश का एक दूसरा कन्नड़ अनुवाद एस. बी. परमेश्वरभट्ट ने शारदा मन्दिर मैसूर से १९५० ई० में प्रकाशित कराया था।

(मलयालम संस्करण)—

(१) मेघदूत का मलयालम अनुवाद ए. आर. राजराजा वर्मा ने कमलालय बुकडिपो त्रिवेन्द्रम से १९५० ई० में सम्पादित किया था।

(२) मेघसन्देश का दूसरा मलयालम अनुवाद कुट्टीकृष्णमरार ने कोझीकोडे, मद्रभूमि से १९५३ ई० में प्रकाशित किया था।

(बंगलाभाषा-संस्करण)—

(१) बंगलाभाषा में मेघदूत का प्रथम संस्करण सनातनगोस्वामी (श्रीचैतन्य के शिष्य) द्वारा (पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में) लिखित तात्पर्य-दीपिका टीका के साथ और शाश्वत (१३३० ई०) द्वारा लिखित कविप्रिया टीका के साथ जैनेन्द्रविमल चौधुरी ने १९५१ ई० में कलकत्ता से प्रकाशित किया है।

(२) मेघदूत का दूसरा बंगला-संस्करण भरतमल्लिक[1] द्वारा लिखित सुबोधा टीका के साथ जैनेन्द्रविमल चौधुरी ने प्राच्यवाणीमन्दिर सीरीज कलकत्ता से १९५१ ई० में प्रकाशित किया है।

भरतमल्लिक ने कालिदास की अन्य रचनाओं पर भी टीकाएँ लिखी हैं।

(३) मेघदूत का तीसरा वङ्गीय संस्करण कविरत्नचक्रवर्ती की अर्थबोधिनी टीका के साथ कलकत्ता से १८५० ई० में प्रकाशित है।

(४) श्रीप्राणनाथपण्डित (सम्भवतः कश्मीरी ब्राह्मण) ने मेघदूत का बंगला भाषा में पद्यात्मक अनुवाद किया है। यह संस्करण मल्लिनाथी टीका के साथ वाल्मीकि प्रेस से १९७१ ई० में प्रकाशित है। इस संस्करण में घटकर्परकाव्य भी संलग्न है।

विशेष :—लालमोहनभट्टाचार्य ने निम्नलिखित वङ्गीय संस्करणों का निर्देश किया है—

(१) नव्या (अथवा सुबोधा) टीका के साथ भरत द्वारा सम्पादित।
(२) मालती (अथवा सुगमा) टीका के साथ कल्याणमल्ल द्वारा सम्पादित।
(३) संगता टीका के साथ हरगोविन्द द्वारा सम्पादित।
(४) सौदामिनी टीका के साथ मकरन्द मिश्र द्वारा सम्पादित।
(५) मुक्तावली टीका के साथ रामनाथ तर्कालंकार द्वारा सम्पादित।
(६) दीपिका टीका के साथ सनातन द्वारा सम्पादित।

---

१. श्रीविमलचौधुरी के मतानुसार भरतमल्लिक का समय १६७५ ई० है। एस. के. दे तथा राजेन्द्रमित्र (Notices VI, P. 45) के अनुसार भरतमल्लिक का समय १८वीं शताब्दी है।

(७) चिन्तामणि टीका के साथ चिन्तामणि द्वारा सम्पादित ।
(८) दीप टीका के साथ वाचस्पति द्वारा सम्पादित ।
(९) कौमुदी टीका के साथ तीर्थकीर्ति द्वारा सम्पादित ।
(१०) ज्योत्स्ना टीका के साथ हरिदास द्वारा सम्पादित ।
(११) मुकुर टीका के साथ कृष्णदास द्वारा सम्पादित ।
(१२) रसदीपिका टीका के साथ गदाधर द्वारा सम्पादित ।
(१३) माधुरी टीका के साथ राधामाधव द्वारा सम्पादित ।

ये संस्करण 'इन्डिया आफिस[1]' तथा 'एसियाटिक सोसायटी आफ बेंगाल' में प्राप्य हैं ।

आफ्रेच की संस्कृतग्रन्थसूची[2], विल्सन द्वारा सम्पादित मेघदूत-द्वितीय संस्करण की भूमिका[3], कोलब्रूक तथा जे. एगलिंग की हस्तलिखित संस्कृतग्रन्थसूची[4], इन्डिया आफिस लायब्रेरी, तथा लालमोहन भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित मेघदूत-द्वितीय संस्करण (संस्कृत प्रेस डिपाजिटरी ३० कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता से १९४४ ई० में प्रकाशित) की भूमिका से मेघदूत के प्राचीन वङ्गीय संस्करणों का परिचय प्राप्त होता है ।

मेघदूत के अर्वाचीन वङ्गीय संस्करण विशेष उल्लेख्य हैं—

(१) यामिनीकान्त साहित्याचार्य द्वारा अनूदित, प्रवासी प्रेस कलकत्ता से प्रकाशित।

(२) कलकत्ता निवासी जे. के. शर्मा द्वारा अनूदित ।

(३) शारदारञ्जन-कुमुदरञ्जन द्वारा सम्पादित, कलकत्ता से १९२८ ई० में प्रकाशित ।

(४) रघुनाथसुकुल द्वारा सम्पादित, बनर्जी प्रेस कलकत्ता से १८७९ ई० में प्रकाशित ।

(५) राजकृष्ण मुखर्जी द्वारा सम्पादित, संस्कृत प्रेस डिपाजिटरी कलकत्ता से १८८२ ई० में प्रकाशित ।

---

1. India office Library, M. S. No. 3774/1584.
2. Aufretch—Catalogus Codicum Sanscriti Corum, Bodieance, Oxford 1864 No. 218.
8. London 1843.
4. Colebrooke and J. Eggeling—Catalogue of Sanskrit manuscripts, VII, London, 1904, P, 1442.

(६) सतीशचन्द्र राय द्वारा कलकत्ता से १९०६ ई० में सम्पादित।
(७) सतीशचन्द्र सेन द्वारा गोपालपुर से १९१३ ई० में सम्पादित।
(८) सत्येन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा विक्टोरिया प्रेस कलकत्ता से प्रकाशित।
(९) वरदाचरण मित्र द्वारा कलकत्ता से १८९३ ई० में सम्पादित।
(१०) महेशचन्द्र भट्टाचार्य द्वारा छात्रपुस्तकालय कलकत्ता से १९३८ ई० में प्रकाशित।
(११) द्विजेन्द्र लाल ठाकुर द्वारा सम्पादित।
(१२) प्यारीमोहन सेनगुप्त द्वारा सम्पादित।

मेघदूत के इन वंगला–अनुवाद संस्करणों के अतिरिक्त निम्नलिखित वंगला पद्यानुवाद संस्करण भी उल्लेखनीय हैं —

(१) जगदीश्वर गुप्त द्वारा कलकत्ता से १८८५ ई० में सम्पादित।
(२) किशोरीमोहन सेनगुप्त द्वारा कलकत्ता, बसक प्रेस से १९०३ ई० में सम्पादित।
(३) क्षितीश नाथ घोष द्वारा कलकत्ता से १९५२ ई० में प्रकाशित।
(४) नरेन्द्र देव द्वारा कलकत्ता से १९४३ ई० में सुन्दर रंगीन चित्रों के साथ सम्पादित।
(५) नितांईचन्द्र शील द्वारा चिनसुरा से १९१० ई० में सम्पादित और
(६) प्राणनाथ पण्डित द्वारा कलकत्ता से १८७२ ई० में सम्पादित।

(हिन्दी भाषा-संस्करण)—

(१) राजालक्ष्मण सिंह[1] तथा
(२) राय देवीप्रसाद पूर्ण ने मेघदूत का व्रजभाषा में पद्यात्मक अनुवाद किया है। श्री पूर्ण का पद्यात्मक अनुवाद (१९०२ ई०) 'धाराधरधावन के' नाम से प्रसिद्ध है।
(३) श्री लक्ष्मीधर बाजपेयी तथा
(४) सेठ कन्हैयालाल पोद्दार[2] ने मेघदूत का खड़ीबोली में समश्लोकी अनुवाद किया है।

---

१. राजालक्ष्मण सिंह का पूर्वमेघ १८८२ ई० में, सम्पूर्ण मेघ १८८४ ई० में और तृतीय संस्करण १८९३ ई० में प्रकाशित है।
२. मेघदूत-विमर्श।

(५) श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल तथा
(६) आचार्य केशव मिश्र[1] (भूतपूर्व अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) ने भी मेघदूत का समश्लोकी अनुवाद किया है।
(७) मेघदूत का आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत हिन्दी अनुवाद १९१६ ई० में प्रकाशित है।
(८) नागार्जुन द्वारा राजप्रकाशन, पटना से १९५५ ई० में प्रकाशित मेघदूत, हिन्दी अनुवाद।
(९) सत्यकाम विद्यालंकार द्वारा राजपाल ऐण्ड सन्स, दिल्ली से १९५६ ई० में प्रकाशित मेघसन्देश, हिन्दी-अनुवाद।
(१०) संसारचन्द्र व मोहनदेवन्त द्वारा सम्पादित मेघदूत-विस्तृत-हिन्दी-व्याख्या।
(११) डा. लक्ष्मण प्रसाद चौरसिया द्वारा अशोक प्रकाशन, प्रयाग से १९५९ ई० में प्रकाशित मेघदूत-पद्यानुवाद।
(१२) पं. ललित प्रसाद सुकुल (अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय) द्वारा वङ्गीय हिन्दी परिषद्, १५ बङ्किम चटर्जी रोड, कलकत्ता-१२ से अनेक समीक्षात्मक निबन्धों तथा राजालक्ष्मण सिंह एवं राय देवीप्रसाद पूर्ण के पद्यानुवादों के साथ सम्पादित।
(१३) बाबू श्यामसुन्दर दास द्वारा काशी से सम्पादित मेघदूत, हिन्दी-अनुवाद।
(१४) लाला सीताराम द्वारा सम्पादित, रामनारायण लाल इलाहाबाद से प्रकाशित हिन्दी-अनुवाद।
(१५) केदारनाथ शर्मा द्वारा सम्पादित, चौखम्बा संस्कृत पुस्तक-भवन, वाराणसी से प्रकाशित मेघ-सौमिनी (हिन्दी-अनुवाद)।
(१६) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा सम्पादित, राजकमल प्रकाशन, बम्बई से वि. सं. २०१० में प्रकाशित 'मेघदूत-एक अध्ययन' नामक ग्रन्थ के अन्त में मुद्रित हिन्दी अनुवाद।
(१७) श्रीरञ्जन सूरिदेव द्वारा सम्पादित तथा नागरी प्रकाशन, प्रा. लिमिटेड, पटना ४, से प्रकाशित 'मेघदूत—एक अनुचिन्तन' नामक गन्थ में विस्तृत भूमिका आदि के साथ मुद्रित हिन्दी-व्याख्या।

(मराठीसंस्करण)—

(१) मेघदूत का संक्षिप्त मराठी अनुवाद श्रीराम गोसेवी ने बोरा एण्ड कम्पनी लिमिटेड बम्बई से १९५६ ई० में सम्पादित किया था।

---

१. भारतकला-भवन, काशी से सं० १९९२ ई० में प्रकाशित।

(२) मेघदूत का दूसरा मराठी अनुवाद सी. डी. देशमुख ने जनराज प्रकाशन पूना मे १९५२ ई० में प्रकाशित कराया था।

(३) गणेश निल्कनाथ कात्रे ने कोल्हापुर से १९५५ ई० में मेघदूत का मराठी अनुवाद संस्कृत के छन्दों में ही सम्पादित किया था।

(४) कुसुमराज ने पोपुलर बुकडिपो बम्बई से १९५५ ई० में मेघदूत का मराठी काव्यानुवाद प्रकाशित कराया था।

(उड़ियाभाषा-संस्करण)—

(१) मेघदूत का उड़िया अनुवाद राधामोहन गदानायक ने उत्कल बुक एजेन्सी, कलकत्ता से १९५३ ई० में प्रकाशित कराया था।

विशेष :—उपर्युक्त हिन्दी-संस्करणों के अतिरिक्त श्रीजयकिशोर नारायणसिंह, श्री दिवाकर, श्री प्रभुनाथ द्विवेदी, श्री सुधाकर मिश्र तथा डॉ. रांगेय-राघव (सचित्र अनुवाद) द्वारा सम्पादित हिन्दीभाषानुवाद-संस्करण उल्लेखनीय हैं। इस प्रसंग में आचार्य बदरीदत्त शास्त्री द्वारा सम्पादित (ज्ञानदाप्रकाशन पटना से १९७५ ई० में प्रकाशित) तथा रक्षपाल-राकेश द्वारा सम्पादित हिन्दी पद्यानुवाद भी उल्लेखनीय हैं।

(मगहीभाषा-संस्करण)—

(१) विक्रम (पटना) निवासी श्री पुण्डरीक ने मेघदूत का मगही भाषा में अनुवाद किया है।

(मैथिलीभाषा-संस्करण)—

(१) श्री जगद्धर (चौदहवीं शताब्दी के पश्चात्) मैथिली लिपि में मेघदूत पर रसदीपिका टीका लिखी है।

(२) श्री दिवाकर उपाध्याय (१३८५ ई० से पूर्व) ने मैथिली लिपि में मेघदूत पर द्योतिका टीका लिखी है[1]।

(३) दत्त (दरभंगा) ने मेघदूत का मैथिली अनुवाद किया है।

(भोजपुरीभाषा-संस्करण)—

(१) इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत प्राध्यापक डॉ. राजेन्द्र मिश्र ने मेघदूत का भोजपुरी भाषा में पद्यात्मक अनुवाद किया है।

1. Mithila 3580, Mithla 11 P, 114, India office Library No. 3780/1516 a.

(मेघदूत के संस्कृत-संस्करण)

निम्नलिखित स्रोतों से मेघदूत के (संस्कृत-व्याख्या-सहित) संस्करणों का विवरण प्राप्त होता है—

आफ्रेच की संस्कृतग्रन्थसूची, विल्सन द्वारा सम्पादित मेघदूत द्वितीय संस्करण की भूमिका, कोलब्रूक तथा जे. एगलिंग की हस्तलिखित-संस्कृत-ग्रन्थ-सूची, तथा इण्डिया ऑफिस लायब्रेरी।

डॉ. ई. हुल्त्स ने मेघदूत के दस संस्करणों का उल्लेख किया है—वल्लभदेव संस्करण, मल्लिनाथ संस्करण, विद्युल्लता संस्करण, जिनसेन (पार्श्वाभ्युदय) संस्करण, नेमिदूत संस्करण, टी. बी. पानवोके द्वारा सम्पादित सिंहली संस्करण, तंजोर का तिब्बती संस्करण, विल्सन संस्करण, गिल्डेमिस्टर संस्करण और तेलगु संस्करण।

प्रो. काशीनाथ-बापू पाठक (के. बी. पाठक) ने मेघदूत के आठ संस्करणों का उल्लेख किया है। जिनसेन (पार्श्वाभ्युदय) संस्करण, मल्लिनाथ संस्करण, सरस्वतीतीर्थ संस्करण, सारोद्धारिणी संस्करण, महिमसिंहगणि संस्करण, सुमतिजय संस्करण, वल्लभ संस्करण, और विल्सन संस्करण। श्रीलालमोहन भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित मेघदूत-द्वितीय संस्करण की भूमिका में मल्लिनाथी तथा अन्य टीकाओं से युक्त बंगला लिपि में लिखित तेरह संस्करणों का उल्लेख है[1]।

मेघदूत के संस्कृतटीका-संस्करणों का विवरण इस प्रकार है—

(क) वङ्गीयसंस्करण—

श्रीलालमोहन भट्टाचार्य द्वारा निर्दिष्ट तेरह टीकाओं के अतिरिक्त उल्लेखनीय टीकाएँ—

(१) मदनमोहन तर्कालंकार के द्वारा मल्लिनाथी टीका के साथ सम्पादित, संस्कृतप्रेस कलकत्ता से १८५० ई० में प्रकाशित।

(२) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के द्वारा मल्लिनाथी टीका के साथ सम्पादित, सरस्वतीप्रेस कलकत्ता से १८६९ ई० में प्रकाशित।

---

१. यह 'वङ्गीय भाषा-संस्करण' में लिखा जा चुका है। श्रीलालमोहन भट्टाचार्य का प्रथम संस्करण कलकत्ता से १९१५ ई० में प्रकाशित हुआ था।

(३) दीनानाथ न्यायरत्न द्वारा अपने काव्य संग्रह में काव्यप्रकाश प्रेस, कलकत्ता से १८६९ ई० में प्रकाशित।

(४) अजितनाथ भट्टाचार्य न्यायरत्न द्वारा मल्लिनाथी टीका के साथ सम्पादित, कलकत्ता से १८७० ई० में प्रकाशित।

(५) जीवानन्द विद्यासागर द्वारा अपने काव्यसंग्रह में नूतनभारत प्रेस, कलकत्ता से १८७२ ई० में प्रकाशित।

(६) कविरत्न चक्रवर्ती द्वारा कलकत्ता से १८५० ई० में सम्पादित वङ्गीय लिपि में वङ्गभाषा अनुवाद सहित मेघदूतार्थबोधिनी टीका।

(७) भरतमल्लिक कृत मेघदूत, सुबोधा टीका, डॉ० जितेन्द्र विमलचौधुरी द्वारा सम्पादित तथा प्राच्यवाणी मन्दिर, कलकत्ता से १९५१ ई० में प्रकाशित।

(८) सनातन गोस्वामी कृत मेघदूत तात्पर्यदीपिका टीका, डॉ० जितेन्द्र विमल-चौधुरी द्वारा प्राच्यवाणी मन्दिर, कलकत्ता से १९५३-५४ ई० (वाल्यूम १०, ११) में प्रकाशित।

(९) शाश्वत कृत मेघदूत-कविप्रिया।

(१०) कल्याणमल्ल कृत मेघदूत-मालती।

(११) कविचन्द्र कृत मेघदूत-मनोरमा।

(१२) कृष्णादास वागीश कृत-मेघदूत टीका।

(१३) मेघदूतकौमुदी—भरतमल्लिक द्वारा उद्धृत।

(ख) उत्कलीत संस्करण—

(१) 'ब्रह्मप्रकाशिका' टीका सहित उड़ीसा-साहित्य-अकादमी, भुवनेश्वर से प्रकाशित। इस संस्करण में मेघदूत के पद्यों का अर्थ ब्रह्मपरक किया गया है।

(ग) दक्षिणात्य संस्करण—

दक्षिणावर्त्तनाथ (१३वीं शताब्दी) द्वारा लिखित प्रदीप टीका के साथ त्रिवेन्द्रम संस्कृतसीरीज से म० म० टी० गणपति शास्त्री द्वारा १९१९ ई० में प्रकाशित।

(२) मल्लिनाथ (१४वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) के द्वारा लिखित सञ्जीवनी टीका के साथ वाराणसी से १८४९ ई० में तथा उसके बाद अनेक बार प्रकाशित।

(३) पूर्णसरस्वती (१४वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) के द्वारा लिखित विद्युल्लता टीका के साथ वाणी विलास प्रेस श्रीरङ्गम से १९०९ ई० में के० वी० कृष्णमाचारियर द्वारा प्रकाशित ।

(४) परमेश्वर (१४-१५वीं शताब्दी) द्वारा लिखित सुमनोरमणी टीका के साथ त्रावणकोर विश्वविद्यालय के द्वारा त्रिवेन्द्रम से १९४६ ई० में प्रकाशित ।

(५) वभिल्लरामस्वामी शास्त्री द्वारा मल्लिनाथ टीका के साथ सम्पादित, मद्रास से १८६३ ई० में प्रकाशित ।

विशेष :—दक्षिणात्य टीकाकारों ने 'मेघदूत' के स्थान में 'मेघसन्देश' यह नाम व्यवहृत किया है । दक्षिणभारत की अधिकांश हस्तलिखित प्रतियाँ मल्लिनाथ की टीका के साथ हैं ।

मल्लिनाथ की टीका 'सञ्जीवनी' के साथ सम्पादित निम्नलिखित संस्करण विशेष उल्लेख्य हैं—

(१) बनारस से १८४९ ई० में प्रकाशित ।
(२) बनारस से १८६७ ई० में प्रकाशित ।
(३) काशी संस्कृत प्रेस से १८७७ ई० में प्रकाशित ।
(४) मदनमोहन तर्कालंकार द्वारा संस्कृत प्रेस कलकत्ता से १८५० ई० में प्रकाशित ।
(५) वाग्विश्वमुद्रा प्रेस, कलकत्ता से १८५० ई० में प्रकाशित ।
(६) विवेकादर्श प्रेस, मद्रास से (तेलगु लिपि में) १८७९ ई० में प्रकाशित ।
(७) विबुध मनोहारिणी प्रेस, मद्रास से (तेलगु लिपि में) १८७६ ई० में प्रकाशित ।
(८) आदित्य-सरस्वती-निलय प्रेस मद्रास से (तेलगु लिपि में) १८७७ ई० में प्रकाशित ।
(९) कृष्णशास्त्री भातवदेकर द्वारा बम्बई से १८६६ ई० में सम्पादित ।
(१०) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा संस्कृत प्रेस कलकत्ता से १८६६ ई० में विविध वङ्गीय पाठों के परिशिष्ट के साथ सम्पादित ।
(११) बविल्लराम स्वामी शास्त्री द्वारा मद्रास से १८६३ ई० में सम्पादित ।
(१२) हिन्दू भाषा सञ्जीवनी प्रेस, मद्रास से १८७० ई० में प्रकाशित ।
(१३) विद्याकल्पतरु प्रेस, पालघाट से १८८९ ई० में प्रकाशित ।

(१४) अजितनाथ भट्टाचार्य न्यायरत्न द्वारा कलकत्ता से १८७०ई० में सम्पादित।
(१५) प्राणनाथ पण्डित द्वारा बाल्मीकि प्रेस, कलकत्ता से १८७१ ई० में पद्यात्मक-वङ्गीय-अनुवाद के साथ सम्पादित।
(१६) कोलारद नारायण शास्त्रिगल द्वारा विचारदर्पण प्रेस, बंगलोर से १८७६ ई० में (कर्णाटक लिपि में) सम्पादित।
(१७) काशीनाथ पाण्डुरङ्ग द्वारा निर्णय सागर प्रेस, बंबई से १८७७ ई० (द्वि० सं० १८८३, तृ० सं० १८८७ ई०) में सम्पादित।
(१८) वी० एस० इस्लामपुरकर द्वारा बंबई से १८८९ ई० में (छे टीकाओं के उद्धृत अंशों के साथ) सम्पादित।
(१९) गोपाल रघुनाथ नन्दर्गीकर द्वारा अपने अंग्रेजी अनुवाद के साथ गोपालनारायण ऐण्ड कम्पनी, बंबई से १८९४ ई० में सम्पादित।
(२०) काशीनाथ बापूपाठक द्वारा कतिपय जैन टीकाओं के पाठान्तरों के साथ आर्यभूषण प्रेस, पूना से १८९४ ई० (द्वि० सं० १९१६ ई०) में सम्पादित।

(घ) जैनीय संस्करण—

श्रीगोपाल रघुनाथ नन्दर्गीकर ने मेघदूत के अपने अंग्रेजी अनुवाद (बम्बई से १८९४ ई० में प्रकाशित) में मेघदूत की २० प्रतियों का उल्लेख किया है। उनमें उन्होंने निम्नलिखित ६ जैनीय टीकाओं का भी निर्देश किया है—

(१) सारोद्धारिणी टीका १४२०-१५५१ ई० में लिखित[१]। (लेखक अज्ञात)
(२) मेघलता टीका। (लेखक अज्ञात)
(३) शिष्यहितैषिणी टीका, लक्ष्मीनिवास (१४५८ ई० से पूर्व) द्वारा सम्पादित।
(४) सुबोधिनी टीका, महिमसिंहगणि (सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध) कृत।
(५) सुमतिविजयकृत सुगमान्वया टीका, १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध।
(६) मेघराजमणि (साधु) कृत सुखबोधिका (सुबोधिका) टीका, १७वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध। पी० के० गोदे के अनुसार इस टीका का रचनाकाल सं० १४६० है।[२]

---

१. कलकत्ता-संस्कृत-साहित्य परिषत्पत्रिका, वर्ष १६, भाग ३, पृ० ८१-१४४ (१९३३-३४ ई०) में प्रकाशित।
2. P. K. Gode Poona Orientalist I No. 3, P. 50-51.

अन्य जैन-टीकाएँ—

(१) स्थिरदेव कृत बालप्रबोधिनी टीका। स्थिरदेव सम्भवत: सर्वप्राचीन जैन टीकाकार हैं[१]। यह टीका पी० जी० परानजपे ने पूना से १९३५ ई० में प्रकाशित की है।

(२) आपढ़कवि कृत मेघदूत टीका,[२] १३वीं शताब्दी, विवेकमञ्जरीवृत्ति में उल्लिखित, अप्राप्य।

(३) क्षेमहंस कृत दीपिका टीका, १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध।

(४) विनयचन्द्र कृत अवचूरि टीका, १६६४ ई०।

(५) सुमतिविजय कृत अवचूरि टीका, १७वीं शताब्दी।

(६) कनककीर्ति कृत अवचूरि टीका,[३] १७वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध।

(७) कथम्भूति कृत अवचूर्णी टीका, अथवा कथम्भूति टीका।

(८) महामहोपाध्याय समयसुन्दर द्वारा लिखित मेघदूत वृत्ति[४] १७वीं शताब्दी।

(९) विजय कृत सुखबोधिका टीका, सं० १७०९।

(१०) मोहजित कृत सुखबोधिका टीका।

(११) चरित्रवर्द्धन कृत चरित्रवर्द्धिनी टीका,[५] ११७२-१३८५ ई०।

(१२) जिनहंससूरि कृत मेघदूत टीका।

(१३) मेरुतुङ्गाचार्य कृत मेघदूत टीका, अहमदाबाद के पगलिया भाण्डार में प्राप्य।

(१४) कुमुदचन्द्र कृत मेघदूत टीका, अहमदाबाद के पगलिया भाण्डार में प्राप्य।

विशेष:—इन टीकाओं का उल्लेख इन्दौर से प्रकाशित होने वाली 'वीणा' मासिक पत्रिका के १९५९ ई० के जनवरी तथा फरवरी के अंकों में किया गया है।

(१५) महीमेरु कृत बालावबोधवृत्ति टीका[६]।

---

१. टीकाकार जनार्दन ने वल्लभदेव के साथ इनका उल्लेख किया है—
Peterson-Three Report, P. 324. पी० के० गोदे के अनुसार जनार्दन का समय ११९२ ई० से १३८५ ई० का मध्य है—P. K. Gode-Calcutta Oriental Journal, II P. 188.

२. टीकाकार जनार्दन ने इसका संकेत किया है। सम्भवत: ये आसह या असह हैं।

३. बीकानेर के श्रीपूज्यभाण्डार में प्राप्य।

४. ओरियन्टल कालेज लाहौर, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधसंस्थान, साधु आश्रम, होशियारपुर पंजाब में प्राप्य।

५. चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी में प्राप्य।

६. जैनग्रन्थावली ३३ पृ० ५

(१६) मतिविक्रम कृत मेघदूत टीका[1]।

विशेष :—ऊपर लिखी हुई प्राय: सभी जैन-टीकाएँ प्रकाशित हैं और उनकी हस्तलिखित प्रतियाँ भाण्डारकर प्राच्य शोधसंस्थान पूना[2] में प्राप्य हैं।

(ङ) कश्मीरी संस्करण—

(१) वल्लभदेव की पञ्जिका टीका, ई. हुल्त्स द्वारा अंग्रेजी टिप्पणी के साथ सम्पादित, रायल एसियाटिक सोसायटी, लन्दन[3] द्वारा १९११ ई० में प्रकाशित।

विशेष :—वल्लभदेव की पञ्जिका टीका मेघदूत की सर्वप्राचीन टीका है[4]। वल्लभदेव का समय, दुर्गाप्रसाद, काशीनाथ पाण्डुरङ्गपरब तथा हुल्त्स के मतानुसार दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध है। प्रो० के० बी० पाठक के अनुसार वल्लभदेव का समय ११९० ई० है। वल्लभदेव के बाद स्थिरदेव, तब चरित्रवर्द्धन, चरित्रवर्द्धन के बाद दक्षिणावर्त्तनाथ, तब विद्वज्जनानुरञ्जन टीकाकार सरस्वतीतीर्थ (सं० १२९२), और उनके बाद मल्लिनाथ, यही प्राचीन टीकाकारों का कलक्रम है। मल्लिनाथ का समय १४ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध है।

स्टेनकोनो द्वारा सम्पादित जम्मु-ग्रन्थसूची[5] में कश्मीरी हस्तलिखित ग्रन्थों का उल्लेख है। किन्तु स्टेन द्वारा संसूचित प्रतियों का पूर्णविवरण अस्पष्ट है। कश्मीर की अन्य कोई प्रति उपलब्ध नहीं है।

(च) महाराष्ट्रिय संस्करण—

(१) कृष्णशास्त्री भातवदेकर द्वारा मल्लिनाथी टीका के साथ सम्पादित, बम्बई से १८६६ ई० में प्रकाशित।

(२) काशीनाथ पाण्डुरंग परब द्वारा मल्लिनाथी टीका के साथ सम्पादित, निर्णयसागर प्रेस बम्बई से १८७७, १८८३, १८८७ ई० में प्रकाशित।

(३) बी० एस० इस्लामपुरक[6]र द्वारा मल्लिनाथी टीका के साथ सम्पादित, बम्बई से १८८९ ई० में प्रकाशित।

---

१. जैनग्रन्थमाला, श्वेताम्बर कान्फरेंश प्रतिवेदन, पृ० ३३२।

2 B. O. R. I. Poona.

3. R. A. S. London.

४. आफ्रेच के 'कैटेलोगस कैटेलोगोरस' (हस्तलिखित संस्कृतग्रन्थ-सूची) प्रथम भाग, पृ० ५५५ के अनुसार वल्लभदेव मेघदूत के प्रथम टीकाकार हैं।

5. Sten's jammu cotalgue.

6. V. S. Islampurkar.

(४) प्रो० के० बी० पाठक द्वारा अंग्रेजी अनुवाद तथा मल्लिनाथी टीका के साथ सम्पादित, आर्यभूषण प्रेस पूना से १८९४ ई० में प्रकाशित।

(५) गोपाल रघुनाथ नन्दर्गीकर द्वारा अंग्रेजी अनुवाद एवं मल्लिनाथी टीका के साथ सम्पादित, गोपालनारायण ऐण्ड कम्पनी बम्बई से १८९४ ई० में प्रकाशित।

विशेष :—मेघदूत के कुछ अन्य भी प्राचीन टीकाकार हैं; जिनका परिचय डा० एस० के० द्वारा सम्पादित मेघदूत[1] की भूमिका से प्राप्त है। डा० दे ने निम्न-लिखित टीकाओं और टीकाकारों का निर्देश किया है—

(१) अन्वयबोधिनी टीका, (२) उद्योतकर (नागेशभट्ट) कृत मेघदूतटीका, (कल्याणमल्ल द्वारा उद्धृत) (३) कमलाकरभट्ट कृत शृङ्गाररसदीपिका टीका, (४) कल्पलता टीका (पीटर्सनद्वारा संसूचित[2]), (५) जनार्दनव्यास कृत मेघदूत टीका अथवा मेघदूतभाष्य, (६) ज्ञानेन्द्र कृत मेघदूत टीका, (७) तत्त्वदीप टीका (नवद्वीप ६९४), (८) दिनकरमिश्र कृत मेघदूत टीका, (९) मेघदूतद्योतिका (दिवाकर उपाध्याय), (१०) निरुक्तकार कृत मेघदूत टीका (मल्लिनाथ द्वारा संकेतित[3]), (११) बृहस्पतिमिश्र कृत मेघदूत टीका[4], (१२) भगीरथकवि कृत मेघदूत टीका, (१३) भगीरथमिश्र कृत तत्त्व-दीपिका टीका[5], (१४) मेघदूतस्थूलतात्पर्य[6], (१५) मोटाजितकवि कृत मेघदूतटीका[7], (१६) रसिकरञ्जनी (पथुरुक्ति, १९ वीं०), (१७) श्रीरामोपाध्याय कृत मेघदूत टीका, (१८) वत्सव्यास (श्रीवत्सव्यास) कृत शिशुहितैषिणी टीका[8], (१९) विश्वनाथ कृत दुर्बोधिपदभञ्जिका टीका (त्रावणकोर विश्वविद्यालय ६९६०), (२०) शार्वटीका (भरत-मल्लिकद्वारा श्लोक ८८ पर उद्धृत), (२१) श्रीकण्ठ तथा उनके शिष्य द्वारा लिखित

---

1. The Meghaduta of Kalidasa, Sahitya Akademi New Delhi, first ed. 1975.
2. Peterson—IV=28, B. O. R. I. 744 f 1886-92.
3. Oxford 126 a.
४. भरतमल्लिक द्वारा मेघदूत-श्लोक ७० पर उद्धृत।
5. Aufretch p. 3, No 76. (सम्भवतः भगीरथकवि और भगीरथमिश्र दोनों एक ही व्यक्ति हैं)।
6. India office No. 3774/1584.
7. B. O. R. I. 392 of 1884-87.
8. B. O. R, I. 748 of 1886-92.

मेघदूत टीका[1], (२२) सरस्वतीतीर्थ[2] (नरहरिसरस्वतीतीर्थ) कृत विद्वज्जनानुरञ्जनी टीका[3], (२३) हरिदास कृत मेघदूत टीका[4]।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित प्राचीन टीकाएँ उल्लेख्य हैं—

(१) चिन्तामणि कृत मेघदूत टीका, (२) जगद्धर कृत मेघदूतरसदीपिका, (३) मकरन्दमिश्र कृत मेघसौदामिनी, (४) रविकर कृत मेघदूत टीका,(५) मेघदूत-मेघलता, (६) रामनाथ तर्कालङ्कार या रामानन्द कृत मेघदूत-मुक्तावली,(७) विश्वनाथ मिश्र-कृत मेघदूतार्थ-मुक्तावली, (८) हरगोविन्द वाचस्पति कृत मेघदूतसङ्गता, मेघदूताभिधानटीका (कैटलाग आफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट्स, बाम्बे युनिवर्सिटी लायब्रेरी)

आधुनिक संस्करण—

(१) नारायण शास्त्री खिस्ते द्वारा सम्पादित, वाराणसी से १९३१ ई० में प्रकाशित।

(२) मल्लिनाथ की सञ्जीवनी, चरित्रवर्द्धनाचार्य की चरित्रवर्द्धनी, पं० ब्रह्मशङ्कर शास्त्री की भावबोधिनी और केदारनाथ शर्मा की विद्योतिनी टीका के साथ प्रकाशित (चौ० सं० सी० वाराणसी से प्राप्य)।

(३) जगद्गुरु आचार्य श्रीचरणतीर्थ महाराज द्वारा सम्पादित कात्यायनी संस्कृत टीका तथा अंग्रेजी अनुवाद के साथ केवल पूर्वमेघ।

(४) श्री मेषराज शर्मा कृत व्याख्या-सहित।

(५) श्री वी० जी० परानजपे द्वारा सम्पादित, पूना से १९४१ ई० में प्रकाशित।

(६) श्री एम० आर० काले द्वारा सम्पादित, बम्बई से १९४७ ई० में प्रकाशित।

(७) श्री आर० डी० करमरकर द्वारा पूना से १९४७ ई० में प्रकाशित।

(८) प्रो० संसारचन्द मोहनदेवपन्त शास्त्री द्वारा अम्बाला छावनी से सम्पादित, वाराणसी से १९५१ ई० में प्रकाशित।

---

1. P. U. L. II P. 262, No. 4511.
२. सरस्वतीतीर्थ (सं० १२९८, १२४२ ई०) ने काशी में यह टीका लिखी थी। इन्होंने 'काव्यप्रकाश' पर बालचित्तानुरञ्जनी टीका लिखी है।
3. B. O. R. I. 442 of 1887-91, R. S. B. 4957/10414, Cambridge University Library, Aufretch I, P. 466 b.
4. Oudh XIV, 28

(९) डॉ० एस० के० दे द्वारा 'दि मेघदूत ऑफ कालिदास' इस नाम से सम्पादित तथा साहित्य अकादमी दिल्ली से १९५७ ई० में प्रकाशित।

विशेष :—मेघदूत के आधुनिक संस्करणों में पं अम्बिकादत्त शर्मा, श्रीपरमानन्द, पं० रामदहिन मिश्र, आचार्य ललिता प्रसाद सुकुल, प्रो० कस्तूरचन्द-कासलीवाल तथा श्रीरञ्जनसूरिदेव द्वारा सम्पादित मेघदूत विशेष उल्लेखनीय हैं। 'बङ्गीय हिन्दीसाहित्य-परिषद् कलकत्ता' द्वारा प्रकाशित आचार्य सुकुल के संस्करण में मूलपाठ के साथ राजा लक्ष्मण सिंह तथा राय देवीप्रसाद पूर्ण द्वारा लिखित व्रजभाषा अनुवाद भी सम्मिलित है। प्रो० कासीवाल द्वारा सम्पादित 'राजस्थान-जैनभाण्डार-सूची' में मेघदूत के दो हस्तलिखित प्रतियों (क्रमशः सं० १७६५ तथा सं० १८२२ में लिखित) का उल्लेख है। प्रो० कासीवाल द्वारा प्रकाशित 'प्रशस्तिसंग्रह' में मेघदूतावचूरि और मेघदूत टीका इन दो जैनटीकाओं का भी उल्लेख है। प्रो० कासीवाल द्वारा सम्पादित जयपुर की 'आमेरशास्त्रभाण्डारग्रन्थ सूची' में भी मेघदूत के एक टीका संस्करण का उल्लेख है, जिसके लेखक श्रीनिवास हैं। श्रीरञ्जन सूरिदेव द्वारा सम्पादित मेघदूत की व्याख्या[1] में मल्लिनाथ तथा वल्लभदेव की टीका भी सम्मिलित है। श्रीसूरि ने पद टिप्पणी में विभिन्न टीकाओं के पाठभेद भी उद्धृत किए हैं। उन्होंने प्रक्षिप्त श्लोकों का भावार्थ भी दिया है। मेघदूत की अत्यन्त आधुनिक व्याख्याओं में पं० जनार्दन पाण्डेय कृत मेघदूत संस्कृत टीका, सुधीर कुमार गुप्त कृत मेघदूत संस्कृत टीका तथा डॉ० वनेश्वर पाठक द्वारा सम्पादित विस्तृत भूमिका एवं समीक्षा से युक्त 'सुप्रभा[2]' व्याख्या भी उल्लेखनीय हैं।

मेघदूत का केवल मूलमात्र संस्करण, पं० रामचन्द्र मिश्रद्वारा सम्पादित तथा कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रकाशित, १९७६ ई०।

मेघदूत के पद्यों की संख्या—

मेघदूत की अतिशय लोकप्रियता के कारण उस पर बहुत-सी टीकाएँ लिखी गई हैं। फलतः उसके पद्यों की संख्या में बहुत अन्तर दीख पड़ता है। प्रा० हुल्त्स ने मेघदूत के पद्यों की संख्या के सम्बन्ध में एक विवरण प्रस्तुत किया है। प्रो० हुल्त्स वल्लभदेव की टीका के अनुसार मेघदूत के पद्यों की संख्या १११ मानते हैं। प्रो० के० बी० पाठक पार्श्वाभ्युदय के अनुसार मेघदूत की पद्यसंख्या १२१ मानते हैं। दक्षिणावर्त, मल्लिनाथ और पूर्णसरस्वती की टीकाओं के अनुसार पद्यों की संख्या

१. मेघदूत–एक अनुचिन्तन, नागरी प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, पटना–४
२. यह व्याख्या ज्योति, पटना से प्रकाशित।

क्रमशः ११०, ११७ (मूलश्लोक ११५+प्रक्षिप्त श्लोक २=११७) तथा ११० है। विल्सन के अनुसार पद्यों की संख्या ११६ हैं और मैकडोनल के अनुसार ११५ है। तिब्बती अनुवाद में पद्यसंख्या ११७ है और सिंहली अनुवाद में ११८ है।

'इण्डिया आफिस लायब्रेरी' में सुरक्षित प्रतियों की पद्यसंख्या इस प्रकार है– तीन देवनागरी प्रतियों की पद्यसंख्या १२१ से १२५ के बीच में है। वङ्गीय प्रति की पद्यसंख्या ११६ है। बौडलीन[1] पुस्तकालय में रखी हुई प्रतियों की पद्यसंख्या १२५ से १२६ के बीच में है। बर्लिन राज्य पुस्तकालय की देवनागरी प्रति की पद्यसंख्या १२७ है। वहाँ की एक देवनागरी प्रति की पद्यसंख्या (१९ प्रक्षिप्त श्लोकों के साथ) १२५ है।

ब्रिटिश संग्रहालय की देवनागरी प्रति (अवचूरिटीका) की पद्यसंख्या १२५ है। सम्भवतः यह बर्लिन वाली प्रति की प्रतिलिपि है।

गिल्डेमिस्टर की देवनागरी प्रति (पेरिस से प्राप्त) की पद्यसंख्या ११० है। किन्तु उनकी वङ्गीय प्रति (कोपेनहेगेन[2] से प्राप्त) की पद्यसंख्या ११७ है। लिपसिंग[3] विश्वविद्यालय की दोनों देवनागरी प्रतियों की पद्यसंख्या १२४ और १२७ है।

आफ्रेच द्वारा सूचित दो फ्लोरेन्टाइन हस्तलिखित प्रतियों की पद्यसंख्या १२५ है। दोनों की संख्याएँ समान हैं। मैकडोनेल द्वारा प्रतिवेदित नेपाली हस्तलिखित प्रति की पद्यसंख्या ११० है। तंजोर के सरस्वती महल पुस्तकालय की दो हस्तलिखित प्रतियों को पद्यसंख्या १२१ और १२२ है। मद्रास-राजकीय प्राच्य पुस्तकालय की हस्तलिखित प्रति (संख्या ११८६९) की पद्यसंख्या ११८ है। स्टेनकोनो द्वारा संसूचित कश्मीरी प्रतियों का विवरण अस्पष्ट है।

मेघदूत की हस्तलिखित प्रतियाँ—

पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण भारत के प्रायः सभी विख्यात पुस्तकालयों में मेघदूत की हस्तलिखित प्रतियाँ मिलती हैं विदेशों में लन्दन, पेरिस, बर्लिन, कोपेनहेगेन तथा अमेरिका[4] में भी मेघदूत की कुछ प्रतियाँ सुरक्षित हैं। इनकी संख्या

---

1. Bodlien.
2. Copenhagen.
3. Leipzing.
4. Indic Manuscript in the United States and Canada, as listed by Poleman (पोलमैन)

लगभग ४० है। प्रायः सभी प्रतियों में श्लोक-संख्या में कुछ-न-कुछ अन्तर है। दक्षिण भारत की प्रतियों का संग्रह[१] टी० फौक्स[२] ने किया है। इस संग्रह में दो प्रतियाँ तेलगु भाषा में और तीन प्रतियाँ कन्नड़ भाषा में लिखि हुई हैं। कलकत्ता संस्कृत कालेज-पुस्तकालय[३] में पाँच प्रतियाँ बंगला लिपि में हैं। 'एसियाटिक सोसायटी बेंगाल' में दो तथा 'भाण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान, पूना' में नौ प्रतियाँ देवनागरी लिपि में हैं। इनमें कुछ तो अत्यन्त प्राचीन हैं। युरोपीय पुस्तकालयों में देवनागरी तथा बंगला दोनों लिपियों में लिखि हुई प्रतियाँ हैं। ए० ए० मैकडोनेल ने एक नेपाली हस्तलिखित प्रति का उल्लेख किया है[५]। यह प्रति नेपाल महाराज के पुस्तकालय में सुरक्षित है। इसका रचनाकाल १३६५ ई० है।

दक्षिण भारत की हस्तलिखित प्रतियाँ 'तंजोर सरस्वती महल पुस्तकालय' तथा 'मद्रास राजकीय प्राच्यपुस्तकालय' में सुरक्षित है[६]। दक्षिण भारत की अधिकांश

1. Kalidasa, a complete collection of Various readings of the Madras manuscript, Vol, 1, Madras 1904,
2. T. Foulks.
3. Calcutta Sanskrit College Library No. 119-23.

४. इण्डिया आफिस लायब्रेरी में तीन देवनागरी प्रतियाँ हैं तथा एक बंगला प्रति है। इन स्थानों में मेघदूत की हस्तलिखित प्रतियाँ मिलती हैं—
 (a) Bol diean Library M, Winternitz and A, B, Keith, Catalogue, Oxford 1906,
 (b) Berlin State Library Manuscripts (Chambers 152)
 (c) ई० स्तेंस्लर (E. Stenzler) द्वारा उपयुक्त तथा वेबर (A. Weber) द्वारा उल्लिखित the British museum Devanagari manuscripts (e. Bendall Catalogue of Sanskrit Manuscripts London 1902, P. 86)
 (d) Gildemister's Devanagari Manuscripts D. Paris, Florentine Manuscripts No. 73-74, में मेघदूत की दो हस्तलिखित प्रतियाँ हैं, यह आफ्रेच ने सूचित किया है।

5. J. R. A. S. 1913, P. 176-83.
6. The Tanjore Saraswati Mahal Library, Manuscripts (P. P. S. Shastri , Catalogue, VII P. 3871).
 Madras Government oriental Library Manuscripts (S. Kuppuswami, Catalogue, XX P. 17947).

प्रतियाँ मल्लिनाथी टीका के साथ हैं। कश्मीरी हस्तलिखित प्रतियों का उल्लेख स्तेनकोनो ने अपनी ग्रन्थसूची में किया है[1]।

मेघदूत के पद्यों का अन्य ग्रन्थों में उपयोग—

(१) जिनसेन ने अपने 'पार्श्वाभ्युदय' के प्रत्येक पद्य में मेघदूत के पद्यों के एक-दो चरणों का समावेश किया है। पार्श्वाभ्युदय का रचना-काल ८ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध है। इस प्रकार का यह सर्वप्राचीन ग्रन्थ है। मेघदूत के पद्यों की मौलिकता के निर्धारण में यह ग्रन्थ विशेष उपयोगी है।

(२) विक्रमकवि के 'नेमिदूत' के (१२६) पद्यों में मेघदूत के पद्यों का अन्तिम चरण समस्या-पूर्ति के रूप में समावेशित किया गया है। नेमिदूत का रचना-काल १५ वीं शताब्दी है।

(३) चरित्रसुन्दरगणि के 'शीलदूत' के (१२५) पद्यों में भी मेघदूत के पद्यों का अन्तिम चरण समस्यापूर्ति के रूप में समावेशित किया गया है। शीलदूत का रचना-काल सं० १४८६ है। यह पुस्तक मेघदूत के पद्यों की मौलिकता तथा उनकी संख्या के निर्धारण में विशेष उपयोगी है।

विशेष—मेघदूत के अनुकरण पर मेघदौत्य, मेघप्रतिसन्देश, मेघदूत समस्या-लेख आदि दूतकाव्य लिखे गए हैं। इनके विस्तृत ज्ञान के लिए डॉ. वनेश्वरपाठक रचित 'प्लवङ्गदूतम्'[2] नामक दूतकाव्य की भूमिका द्रष्टव्य है।

मालविकाग्निमित्र

(क) विदेशी भाषा-संस्करण—

(अंग्रेजी)—

(१) एच. एच. विलसन द्वारा अंग्रेजी अनुवाद के साथ १८२७ ई० में प्रकाशित।

(२) सी. एच. टौनी[3] द्वारा १८७५ ई० में कलकत्ता से और १८६१ ई० में लन्दन से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

---

1. Sten's Jammu Catalogue.
२. यह काव्य सुबोधग्रन्थमाला, राँची (बिहार) से १९७५ ई० में प्रकाशित है। यह पुस्तक उत्तर प्रदेश-प्रशासन द्वारा साहित्यिक पुरस्कार से सम्मानित है।
3. C. H. Tawney.

(जर्मन)

(१) एफ. बोलेनसन[१] द्वारा लिपसिंग[२] से १८७९ ई० में प्रकाशित जर्मन-भाषा-अनुवाद।

(२) ए. वेबर[3] द्वारा बर्लिन से १८५६ ई० में प्रकाशित जर्मन-भाषा-अनुवाद।

(३) एल. फ्रित्स[४] द्वारा १८८१ ई० में बर्लिन से जर्मन-भाषा में प्रकाशित।

(४) एच. ओल्डेनवर्ग द्वारा १९१६ ई० में बर्लिन से कलात्मक सौन्दर्य के साथ प्रकाशित जर्मन-भाषा-अनुवाद।

(५) ओ. एफ. तुलवर्ग[५] द्वारा बोन से १८४७ ई० में प्रकाशित जर्मन भाषा-अनुवाद।

(६) एफ. हैग द्वारा १८७२ ई० में फ्रेनरफिल्ड से प्रकाशित जर्मन-भाषा-अनुवाद[६]।

(७) एडोल्फ एफ. स्टेंस्लर तथा फित्ज एडवर्ड हॉल द्वारा प्रकाशित जर्मन-भाषा-अनुवाद[७]।

जेच-भाषा—

(१) एफ. सिम्मिनो[८] द्वारा १८९७ ई० में प्रकाशित जर्मन तथा इतालियन अनुवाद।

(इतालियन)—

(१) प्रो. जोसेफ जुबैती[९] द्वारा जेच युनिवर्सिटी प्राग से प्रकाशित जेच-भाषा अनुवाद।

(फ्रेंच)

(१) वी. हेनरी द्वारा १८८९ ई० में पेरिस से प्रकाशित फ्रेंच-अनुवाद।

---

1. F. Bollensen.
2. Leipzing.
3. A. Weber.
4. L. Fritze.
5. O. F. Tulberg.
6. F. Haag, Zur Text Kritik und Eiklarung von Kalidasa Malavikagnimitra, Franer feld, 1872.
7. Adolf F. Stenzler und Fitz Edward Hall.
8. F. Cimmino.
9. Prof. Josef Zubaty, Czech University, Prague.

(अंग्रेजी)—भारतीय विद्वानों के द्वारा—

(१) तारानाथ तर्कवाचस्पतिद्वारा, कलकत्ता से १८७० ई० में प्रकाशित अंग्रेजी-अनुवाद।

(२) जे. एन. टैगौर द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी-अनुवाद।

(३) सी. आर. देवधर द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी-अनुवाद[1]।

(४) आर. जी. गैघनी[2] द्वारा पॉपुलर बुक स्टोर सूरत से प्रकाशित अंग्रेजी-अनुवाद।

(५) काशीनाथ पाण्डुरङ्ग परब[3] द्वारा १९३३ ई० में बम्बई से कातयवेमभूप की टीका 'कुमार गिरिराजीय' के साथ प्रकाशित अंग्रेंजी-अनुवाद।

(६) प्रो. आर. डी. करमरकर द्वारा १९५० ई० में पूना से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(७) प्रो. एस. के. राव द्वारा १९५१ ई० में वी. रामास्वामी शास्त्रुलु मद्रास से प्रकाशित अंग्रेजी-अनुवाद ।

(८) शङ्करपाण्डुरङ्ग पण्डित द्वारा बॉम्बे संस्कृत सीरीज, बम्बई से १८९९ ई० में प्रकाशित अंग्रेजी-अनुवाद।

(ख) भारतीय-भाषा-संस्करण—

(संस्कृत)—

(१) एस. पी. पण्डित (शङ्करपाण्डुरङ्ग पण्डित) द्वारा कातयवेमभूप की टीका 'कुमारगिरिराजीय' के साथ बॉम्बे संस्कृत सीरीज, बम्बई से १८८७ ई० में सम्पादित।

(२) काशीनाथ पाण्डुरङ्ग परब द्वारा कातयवेमभूप की टीका के साथ बम्बई से १८९० ई० में सम्पादित।

(३) कातयवेमभूप की टीका के साथ निर्णयसागर प्रेस से १९१५ ई० में प्रकाशित।

(४) यह टीका-संस्करण वाणीविलास प्रेस, श्रीरङ्गम् से भी प्रकाशित है।

---

१. चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्राप्य।
2. R. G. Gaidhani.
3. Katayavema's Kumara Gerirajiya.

(५) अप्पाशास्त्री की टीका के साथ प्रकाशित।

(६) श्रीकण्ठ (नीलकण्ठ) की गुणोत्तरा व्याख्या के साथ सम्पादित, ओरियन्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी मद्रास से प्रकाशित।

(७) तात्पर्यप्रकाशिका[1] टीका (लेखक अज्ञात) के साथ गवर्नमेण्ट ओरियन्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी मद्रास से प्रकाशित।

(८) पं० रामचन्द्र मिश्र द्वारा 'प्रकाश' नामक संस्कृत-हिन्दी टीका के साथ चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्रकाशित।

(९) प्रो० संसारचन्द्र तथा मोहनदेव पन्त द्वारा संस्कृत-हिन्दी टीका के साथ प्रकाशित।

(हिन्दी)—

(१) लाला सीताराम द्वारा प्रयाग से १९१३ ई० में सम्पादित हिन्दी-अनुवाद।

(२) प्रो. विराज एम. ए. द्वारा राजपाल ऐण्ड सन्स, दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी-रूपान्तर।

(तमिल)—

(१) महामहोपाध्याय आर. वी. कृष्णमाचार्य द्वारा सम्पादित तमिल अनुवाद।

(मैथिली)—

(१) पं० जीवानन्द ठाकुर द्वारा दरभंगा से सम्पादित मैथिली-अनुवाद।

विक्रमोर्वशीय

(क) विदेशी भाषा-संस्करण—

(अंग्रेजी)—

(१) एच. एच. विलसन द्वारा १८२७ ई० में 'हिन्दू थियेट्री'[2] से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(२) मोनियर विलियम द्वारा १८४९ ई० में हर्टफोर्ड से सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद।

---

१. यह टीका सम्भवतः विक्रमोर्वशीय की 'प्रकाशिका' टीका के लेखक रङ्गनाथ द्वारा लिखी गई है।

2. Published in the author's Volume "Hindu Theatree".

(३) ई. बी. कॉवेल[1] द्वारा १८५१ ई० में हर्टफोर्ड से विल्सन के अंग्रेजी अनुवाद के साथ सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद।

(४) एम. आर. काले द्वारा १८८९ ई० तथा १८९८ ई० में बम्बई से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(५) शङ्कर पाण्डुरङ्ग पण्डित द्वारा १८७९ ई०, १८८७ ई० तथा १८८९ ई० में गवर्नमेण्ट सेन्ट्रल बुक डिपो बम्बई से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(६) आर. एन. गैधनी द्वारा 'दि रॉयल बुक स्टॉल पूना' से सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद।

(७) अरविन्द द्वारा पान्डीचेरी से अंग्रेजी टिप्पणी आदि के साथ सम्पादित।

(८) जे. एन. टैगोर द्वारा सम्पादित अंग्रेंजी अनुवाद।

(९) सी. आर. देवघर द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद[2]।

(१०) ए. डब्ल्यू. रायडर द्वारा १९२८ ई० में लन्दन से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद[3]।

(लैटिन)—

(१) आर. लेंस[4] द्वारा १८३३ ई० में बर्लिन से प्रकाशित लैटिन अनुवाद।

(जर्मन)—

(१) एफ. बोलेन्सन द्वारा १८४६ ई० में सेंट पीटर्सबर्ग से सम्पादित जर्मन अनुवाद।

(२) ई. लोबडेन्स[5] द्वारा १८६१ ई० में लिपसिंग से प्रकाशित जर्मन अनुवाद।

(३) एल. फ्रीज द्वारा १८८० ई० में लिपसिंग से प्रकाशित जर्मन अनुवाद।

(४) आर. पिशेल[6] द्वारा १८७५ ई० में बर्लिन से बंगीय पाठ के साथ सम्पादित जर्मन अनुवाद।

---

1. E.B. Cowell, Published along with Wilson's English translation.
२. 'विक्रमोर्वशीय ऑफ कालिदास' चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्राप्य।
3. A. W. Ryder, Published in the Volume "Trans. Shakuntala and other works". Every Mans Library London, 1928.
4. R. Lenz.
5. E. Lobendanz.
6. R. Pischel, Monats brichteder, Kql. Preuss, Akadamieder Wissen schaften zu Berlin 1875.

(५) के. जी. ए. होफर[1] द्वारा १८३७ ई० में बर्लिन से सम्पादित जर्मन अनुवाद।

(६) बी. हर्गेल[2] द्वारा १८३८ ई० में वर्लिन से सम्पादित जर्मन अनुवाद।

(फ्रेंच)—

(१) पी. ई. फौकक्स[3] द्वारा १८६१ ई० तथा १८७९ ई० में प्रकाशित फ्रेञ्च अनुवाद।

रूसी भाषा में भी विक्रमोर्वशीय का अनुवाद प्रकाशित[४] है। इसके अतिरिक्त स्वेडिश, इतालियन, जेच और स्पैनिश भाषा में भी विक्रमोर्वशीय का अनुवाद हुआ है, यह विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थों की सूचियों से ज्ञात होता है।

(ख) भारतीय-भाषा-संस्करण—

(संस्कृत)—

(१) एस. पी. पण्डित (शङ्कर पाण्डुरङ्ग पण्डित) तथा बी. आर. आर्ते द्वारा १८७९ तथा १९०१ ई० में 'बाम्वे संस्कृत-सीरीज' से रङ्गनाथ की 'प्रकाशिका[५]' टीका, कोणेश्वर की 'त्रोटकविवेक[६]' टीका और कातयवेममूप की गिरिराजीय[७]' टीका के साथ सम्पादित।

(२) के. पी. परब तथा एम. आर. तैलंग द्वारा १९१४ ई० में निर्णयसागर प्रेस, वम्बई से रङ्गनाथ की 'प्रकाशिका' टीका के साथ प्रकाशित।

---

1. K. G. A. Hoefer.
2. B. Hergel.
3. P. E. Foucaux.
४. लेनिनग्राड के 'प्राच्यविद्या-संस्थान' में यह संस्करण प्राप्य है।
५. रंगनाथ की 'प्रकाशिका' टीका १८९७ ई० में, तथा एम. आर. काले कृत अंग्रेजी अनुवाद के साथ १८९८ ई० में भी निर्णयसागर प्रेस, वम्बई से प्रकाशित है।
६. कोणेश्वर की 'त्रोटकविवेक' टीका 'जर्नल ऑफ दि भाण्डारकर ओरियण्टल रीसर्च इन्स्टीट्यूट पूना' (भाग ३८, पृ० २३२-२९८) में प्रकाशित है।
७. कातयवेममूप की 'गिरिराजीय' टीका (चतुर्थ संस्करण) १९१४ ई० निर्णयसागर प्रेस, बम्बई में प्रकाशित।

(३) चतुर्वेदशास्त्री द्वारा १९२९ ई० में लाहौर से कातयवेमभूप की टीका के साथ सम्पादित।

(४) पं. सुरेन्द्रनाथ शास्त्री कृत 'कल्पलता' टीका के साथ निर्णयसागर प्रेस बम्बई से १९४२ ई० में प्रकाशित।

(५) प्रकाशवीर शास्त्री कृत टीका के साथ प्रकाशित।

(६) एच. डी. वेलवंकर कृत व्याख्या के साथ प्रकाशित।

(७) पं० रामचन्द्र मिश्र कृत 'प्रकाश' (संस्कृत-हिन्दी) टीका के साथ चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्रकाशित।

(हिन्दी)—

(१) पं० सीताराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'कालिदासग्रन्थावली' में काशी से प्रकाशित हिन्दी-अनुवाद।

(२) प्रो. विराज एम. ए. द्वारा सम्पादित 'हिन्दी-रूपान्तर' राजपाल ऐण्ड सन्स दिल्ली से प्रकाशित।

(तमिल)—

विक्रमोर्वशीय का तमिल अनुवाद भी प्राप्त है।

अभिज्ञानशकुन्तलम्

(क) विदेशीभाषा संस्करण—

(अंग्रेजी)—

(१) सर विलियम जौन्स द्वारा १७८३ ई० में कलकत्ता से प्रकाशित अंग्रेजी गद्यानुवाद। विदेशी भाषा में यह प्रथम अनुवाद है।

(२) मोनिअर विलियम द्वारा १८५३ ई० में ऑक्सफोर्ड से देवनागरी-लिपि पाठ के साथ प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद। इसका दूसरा संस्करण हर्टफोर्ड से १८७६ ई० में प्रकाशित हुआ था।

(३) अमेरिका-निवासी प्रो. आर्थर विलियम रायडर द्वारा १९२८ ई० में लन्दन से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद[1]।

(४) जे. एन. टैगोर द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद।

1. A. W. Ryder—"Translation of Shakuntla and other works". Every mans Library London, 1928 (Reprint).

(५) एम. आर. काले द्वारा १९०८ ई० में बम्बई से देवनागरी-पाठ के साथ सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद[1]

(६) शारदारञ्जनराय द्वारा १९०८ ई० में नालन्दा प्रेस, कलकत्ता से देव-नागरी-पाठ के साथ सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद[2]।

(७) एस. के. वेदवलंकर द्वारा देवनागरी-पाठ के साथ सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद[3]।

(८) सी. आर. देवधर द्वारा सम्पादित देवनागरी-पाठ सहित अंग्रेजी अनुवाद[4]।

(९) ए. बी. गजेन्द्रगडकर द्वारा १९३४ ई० में बम्बई से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद[5]।

(१०) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा १८७१ ई० में कलकत्ता से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(११) प्रेमचन्द्र तर्कवागीश द्वारा १८३९ ई० में कलकत्ता से प्रकाशित अंग्रेजी अनवाद[6]।

(१२) जगन्मोहन शर्मा और केदार नाथ द्वारा १८६९ ई० में कलकत्ता से सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद।

(१३) बसु द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद।

(१४) आर. डी. करमरकर द्वारा १९५२ ई० में आर्यभूषण प्रेस, पूना से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(१५) शतावधान श्रीनिवासाचार्य द्वारा वी. आर. शास्त्रुलु मद्रास से १९५४ में प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद।

(१६) राजालक्ष्मणसिंह का शकुन्तला-हिन्दी-रूपान्तर भी अंग्रेजी अनुवाद के साथ लन्दन से प्रकाशित है।

---

१. इसका सातवाँ संस्करण बम्बई से १९३४ ई० में प्रकाशित है।
२. यह संस्करण वङ्गीय-लिपि में भी है।
३. चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसीसे प्राप्य।
४. ,, ,, ,, ,,
५. इसका दूसरा संस्करण आर्यभूषण प्रेस पूना से प्रकाशित है।
६. ई. बी. कौवेल ने इसका दूसरा संस्करण १९६४ ई० में प्रकाशित किया था।

(जर्मन)—

(१) जार्ज फ़ॉर्स्टर[1] द्वारा १७६१ ई० में सम्पादित जौन्स कृत अंग्रेजी-गद्यानुवाद सहित जर्मन गद्यानुवाद।

(२) जर्मन कवि गेटे द्वारा १७६१ ई० में प्रकाशित जर्मन गद्यानुवाद।

(३) फ्रेडरिक रुकर्ट[2] द्वारा सम्पादित जर्मन अनुवाद। यह रुकर्ट की मृत्यु के बाद १८७६ ई० में प्रकाशित हुआ।

(४) ओल्डेनबर्ग द्वारा १६१६ ई० में बर्लिन से प्रकाशित कलात्मक सौष्ठवपूर्ण जर्मन अनुवाद।

(५) आर. पिशेल द्वारा १८७७ ई० में कील[3] से बङ्गीय पाठ के साथ सम्पादित जर्मन अनुवाद। इसका द्वितीय संस्करण सी. कैपलर[4] ने कुछ संशोधन तथा भूमिका के साथ हर्वर्ड ओरियन्टल सीरीज कैम्ब्रिज से १६१२ ई० में प्रकाशित किया था।

(६) सी. कैपलर द्वारा १६०६ ई० में लिपसिंग से देवनागरी पाठ के साथ (पाठसंशोधन कर) प्रकाशित जर्मन अनुवाद।

(७) ओ. बोटलिंग[5] द्वारा १८४२ ई० बोन से प्रकाशित जर्मन अनुवाद।

(चीनी-भाषा)—

(१) चीनी भाषा में अभिज्ञानशकुन्तल के सात अनुवाद हुए हैं। १६५७ ई० में चीन के रङ्गमञ्च पर इसका सफल अभिनय भी हुआ है।

(रूसी)—

(१) एन. एम. करैमजिन द्वारा १७६२ ई० में सम्पादित रूसी-भाषा-अनुवाद। यह अनुवाद चतुर्थ अङ्क तक ही है।

(२) अलक्से पुत्याना द्वारा १८७६ ई० में सम्पादित रूसी-भाषा-अनुवाद।

(३) के. बालमोन्ता तथा आई. एस. राबिनोविच्चा द्वारा १६५५ ई० में सम्पादित रूसी-भाषा-अनुवाद[6]।

---

1. George Forster.
2. Freiderick Ruckert.
3. Keil, 1877.
4. Carl Capeller.
5. O. Bohtlingk, Bonn, 1842.
6. K. Balmonta, I. S, Rabinoviteha—Goslitizdat, 1955.

(जेच)—

(१) सिनेक वायनिस[1] द्वारा १८७३ ई० में प्रकाशित जेच-भाषा-अनुवाद।

(फ्रेंच)—

(१) ए. एल. चीजी[2] द्वारा १८३० ई० में पेरिस से प्रकाशित फ्रेन्च-अनुवाद।

विशेष—अभिज्ञानशकुन्तल के प्राचीन संस्करण पाँच प्रकार के पाठों के साथ सम्पादित हैं—देवनागरी पाठ, वङ्गीय पाठ, कश्मीरी पाठ, दक्षिण-भारतीय पाठ और मैथिली पाठ।

(क) देवनागरी-पाठ—के साथ ओ. बोटलिंग ने बोन से १८४२ ई० में सम्पादित किया है। मोनियरविलियम ने ऑक्सफोर्ड से १९५३ ई० में प्रथम संस्करण सम्पादित किया है। फिर उन्होंने हर्टफोर्ड से १८७६ ई० में द्वितीय संस्करण सम्पादित किया है। सी. कैपलर ने (पाठ-संशोधन करके) लिपसिंग से १९०९ ई० में सम्पादित किया है। राघवभट्ट टीका के साथ एन. बी. गोडबोले तथा के. पी. परब ने निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से १८८३ तथा १९२२ ई० में प्रकाशित किया था। पी. एन. पाटङ्कर ने संशोधित पाठ के साथ पूना से १९०२ ई० में प्रकाशित कराया था।

(ख) वङ्गीय पाठ—के साथ (शङ्कर और चन्द्रशेखर की टीका के साथ) पिशेल ने कील से प्रथम संस्करण सम्पादित किया था। इसी का दूसरा संस्करण (संशोधित पाठ के साथ) सी. कैपलर ने १९१२ ई० में हर्बर्ड ओरियण्टल सीरीज कैम्ब्रिज से प्रकाशित किया था।

(ग) कश्मीरी पाठ—के साथ के. बरर्वाडे ने वियना से १८८४ ई० में प्रकाशित किया था[3]।

(घ) दक्षिणभारतीय पाठ—के साथ (अभिराम और कातयवेमभूप की टीका के साथ) वाणीविलास प्रेस श्रीरङ्गम से १९१७ ई० में प्रकाशित है।

(ङ) मैथिली पाठ—के साथ शङ्कर और नरहरि की टीकाएँ प्रकाशित हैं[4]।

---

1. Cenek Vyhnis—Czech Translation, 1873 A.D.
2. A. L. Chezy,
३. कश्मीरी पाठों के विस्तृत ज्ञान के लिए—"Burkdhard-Die Kasmirer Cakuntala-Handschrift, Vienna, 1884", द्रष्टव्य है।
४. चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्राप्य है।

उपर्युक्त पाठ-भेदों[1] में देवनागरी पाठ में १६४ श्लोक हैं। वङ्गीय पाठ में २२१ श्लोक हैं। दक्षिणभारतीय पाठ देवनागरी पाठ के समान ही है। कश्मीरी पाठ में सप्तम अङ्क के आरम्भ में एक प्रवेशक है और सब देवनागरी पाठ के समान हैं। मैथिली पाठ भी देवनागरी पाठ के ही समान है।

(ख) भारतीय-भाषा-संस्करण—

(संस्कृत)—

(१) राघवभट्ट की (अर्थद्योतनिका[2]) टीका के साथ एन. बी. गोडबोले तथा के. वी. परब द्वारा निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से १८८३ ई० में प्रकाशित।

(२) शङ्कर तथा चन्द्रशेखर की वङ्गीय टीका के साथ पिशेल द्वारा १८७७ ई० में तथा सी. कैपलर द्वारा १६१२ ई० में प्रकाशित।

(३) कातयवेमभूप की 'अन्वयबोधिका' टीका के साथ गवर्नमेंण्ट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी, मद्रास में प्राप्य[3]।

(४) अभिराम तथा कातयवेमभूप की टीका के साथ वाणीविलास प्रेस, श्रीरङ्गम से १६१७ ई० में प्रकाशित है। अभिराम की 'दिङ्मात्र-प्रदर्शनम्' व्याख्या गवर्नमेण्ट ओरियण्टल लायब्रेरी, मद्रास में प्राप्य है।

(५) बालगोविन्द की 'गोविन्दब्रह्मानन्दीयम्' व्याख्या के साथ गवर्नमेण्ट ओरियण्टल लायब्रेरी, मद्रास में प्राप्य।

(६) दक्षिणावर्तनाथ का 'अभिज्ञानशाकुन्तलव्याख्यानम्' गवर्नमेण्ट ओरियण्टल लायब्रेरी, मद्रास में प्राप्य।

---

१. पाठ-भेदों के सम्बन्ध में—(1) Sten Konow I. D. P. 67 f, (2) Hari-Chand-Kalidasa, P. 243, (3) B. K. Thakare-The text of the Shakuntala (1922), (4) Windisch (विन्डिश)-Sanskrit Phil. P. 344 द्रष्टव्य हैं।

२. यह टीका स्वतन्त्र रूप में भी बम्बई से १६१३ में प्रकाशित है।

३. कातयवेमभूप की टीका का सुप्रसिद्ध नाम है 'कुमारगिरिराजीय'। कालिदास के तीनों नाटकों पर उनकी यही टीका है ऐसी स्थिति में 'अन्वयबोधिका' टीका उनके नाम से सन्दिग्ध मालूम पड़ती है।

(७) नीलकण्ठ का 'अभिज्ञानशाकुन्तलव्याख्यानम्' गवर्नमेण्ट ओरियन्टल लायब्रेरी मद्रास में प्राप्य ।

(८) श्रीनिवासाचार्य की 'साहित्य टीका' के साथ (दक्षिणीय पाठसहित) मद्रास से १८७४ ई० में प्रकाशित ।

(९) नारायण भट्ट की 'प्राकृतविवृत्ति' के साथ डिस्क्रीप्टिव कैटलॉग ऑफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट्स, तंजौर में प्राप्य ।

(१०) घनश्याम की 'शाकुन्तलसञ्जीवन' टीका के साथ डिस्क्रीप्टिव कैटलॉग ऑफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट्स, तंजौर में प्राप्य ।

(११) कातयवेमभूप की 'कुमारगिरिराजीया' टीका के साथ डिस्क्रीप्टिव कैटलॉग ऑफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्ट्स, तंजौर में प्राप्य ।

(१२) मल्लिनाथ का 'शाकुन्तलव्याख्यानम्' अदयार लायब्रेरी, मद्रास में प्राप्य[१] ।

(१३) मृत्युञ्जयनिःशङ्कभूपाल की 'शाकुन्तलव्याख्या' मद्रास से १८८३ ई० में प्रकाशित ।

(१४) डमरूवल्लभपन्त की 'अभिज्ञानशाकुन्तलटीका' कलकत्ता से १८७१ ई० में प्रकाशित ।

(१५) चन्द्रशेखर चक्रवर्ती 'शाकुन्तलवृत्ति' अथवा 'शाकुन्तलज्ञानसन्दर्भदीपिका' एग्लिग-कृत संस्कृत पुस्तक सूची, भाग ७ में, उल्लिखित[२] ।

(१६) न्यायाचार्यात्मज[3] की 'अर्थदीपिका' अथवा 'रसिकमनोरमा' टीका, एग्लिग कृत संस्कृत-पुस्तक-सूची, भाग ७ में उल्लिखित ।

(१७) अभिज्ञानशाकुन्तलचर्चा (लेखक अज्ञात) त्रावणकोर ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लायब्रेरी, जर्नल ६–१० (१९५०–१९५४ ई०) भाग में प्रकाशित ।

---

१. यहाँ टीकाकर का नाम भ्रमवश 'मल्लिनाथ' दिया हुआ है । वस्तुतः यह 'शाकुन्तलव्याख्यानम्' नीलकण्ठ (क्रम ७) की रचना है ।

२. पिशेल ने अपने संस्करण में इसी टीका का आधार ग्रहण किया है । उनकी दृष्टि में यह सर्वोत्तम टीका है ।

३. यहाँ टीकाकार ने अपना नाम नहीं लिखकर अपने लिए केवल 'न्यायाचार्यात्मज' यही लिखा है ।

ये प्राक्तन संस्कृत संस्करण हैं। आधुनिक संस्करणों में निम्न-लिखित विशेष उल्लेख्य हैं —

(१) श्रीशङ्कर की 'शाकुन्तलरसचन्द्रिका' अथवा 'शाकुन्तलपदप्रकाश' टीका के साथ (मैथिलीपाठ सहित) मिथिलाविद्यापीठ, दरभंगा से प्रकाशित।

(२) शारदारञ्जन राय की 'शाकुन्तल टीका' अंग्रेजी टिप्पणी आदि के साथ नालन्दा प्रेस, कलकत्ता से १९०८ इ० में प्रकाशित।

(३) गुरुप्रसादशास्त्री की 'अभिनवराजलक्ष्मी' संस्कृत-हिन्दी टीका के साथ भार्गव पुस्तकालय, बनारस से १९५० ई० में प्रकाशित।

(४) नारायणशास्त्री खिस्ते की 'शाकुन्तल टीका' बनारस से प्रकाशित।

(५) म. म. नरहरि कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलटिप्पणी' (मैथिली पाठ सहित) मिथिलाविद्यापीठ, दरभंगा से १९५७ ई० में प्रकाशित।

(६) सुबोधचन्द्र पन्त कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या।

(७) डॉ० कपिलदेव द्विवेदी कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, रामायणलाल, प्रयाग से प्रकाशित।

(८) शिवबालक द्विवेदी कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या।

(९) कान्तानाथ शास्त्री तैलङ्ग कृत संस्कत-हिन्दी व्याख्या।

(१०) देवदत्त शास्त्री तथा रा. कृ. आचार्य द्वारा सम्पादित संस्कृत व्याख्या (केवल चतुर्थ अङ्क)।

विशेष—ये संस्करण चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी से प्राप्य हैं।

(११) डॉ. बाबूराम त्रिपाठी द्वारा सम्पादित, रतनप्रकाश मन्दिर, आगरा से १९५७-५८ ई० (द्वि० स० १९६२ ई०, तृ० सं० १९७७-७८ ई०, च० सं० १९७९-८० ई०) में प्रकाशित।

(१२) प्रो. विजयचन्द्र त्रिपाठी द्वारा नीलम पब्लिशर्स, जलन्धर से प्रकाशित हिन्दी व्याख्या सहित।

(हिन्दी)—

(१) राजा लक्ष्मण सिंह कृत, फ्रेडरिकपिंकोट द्वारा सम्पादित, हिन्दी रूपान्तर[1]।

(२) सीताराम शास्त्री कृत हिन्दी-अनुवाद, गुरुप्रसाद शास्त्री कृत संस्कृत टीका 'अभिनवराजलक्ष्मी' के साथ भार्गव पुस्तकालय, बनारस से १९५० ई० में प्रकाशित।

(३) पं० सीताराम चतुर्वेदी कृत हिन्दी-अनुवाद, कालिदास ग्रन्थावली में काशी से प्रकाशित।

(४) मोहनराकेश कृत हिन्दी-रूपान्तर।

(५) वागीश्वर विद्यालंकार कृत (श्लोकों के पद्यानुवाद के साथ) हिन्दी अनुवाद।

(मैथिली)—

(१) डॉ० शारदादत्त झा कृत मैथिली पद्यानुवाद।

(२) पं० ईशनाथ झा (सी० एम० कॉलेज, दरभंगा) कृत मैथिली अनुवाद।

(बंगला)—

हरिदास सिद्धान्त तर्कवागीश कृत बंगला-अनुवाद के साथ कलकत्ता से १८६० ई० में प्रकाशित।

(गुजराती)—

महाकवि नानालाल, कीलाभाई भट्ट, केशवलाल ध्रुव, बलवन्तराय ठाकोर, मनसुखलाल झबेरी प्रभृति विद्वानों के अनुवाद विशेष उल्लेखनीय हैं।

(मराठी)—

चिपलूणकर, गङ्गाधर दामले, भीमराव, गणेश लेले, केशव गोडबोले, माधव लेले आदि के अनुवाद उल्लेख्य हैं।

---

१. अभिज्ञानशकुन्तल का यह सम्पूर्ण हिन्दी-गद्यानुवाद 'शकुन्तलानाटक' के नाम से आगरा से १८६१ ई० में प्रकाशित हुआ है। यह प्रथम हिन्दी-रूपान्तर है। इसका द्वितीय संस्करण (पद्यों के गद्यानुवाद के स्थान में पद्यानुवाद के साथ) १८८६ ई० में प्रकाशित हुआ।

(तमिल)—

आर० राघव अय्यङ्गर और श्री मराई मलाई आदिगल (स्वामी वेदाचलम्) के तमिल अनुवाद उल्लेख्य हैं।

(उर्दू)—

डॉ० अब्दुलहक़ ने 'शकुन्तला' इस नाम से उर्दू में अनुवाद किया है।

विशेष—अभिज्ञानशाकुन्तल संस्कृत-नाटकों में सर्वाधिक प्रिय रहा है। इसकी रमणीयता ने भारतीय तथा विदेशी साहित्य-रसिकों को समान रूप से आकृष्ट किया है। यही कारण है कि देशी तथा विदेशी भाषाओं में इसके बहुत संस्करण हुए हैं और अभी भी हो रहे हैं।

कुन्तलेश्वरदौत्यम्

विदेशी-भाषा-संस्करण—

(१) कुन्तलेश्वरदौत्य ऑफ कालिदास-वर्डइन्डेक्स[1]—यतिराज सम्पतकुमार, रामानुजमुनि, मेलकोटे।

विशेष:—डॉ० वी० राघवन् 'कुन्तलेश्वरदौत्य' को कालिदास की रचना मानते हैं। इस सम्बन्ध में प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रथम अध्याय (कालिदास की कृतियाँ) द्रष्टव्य है।

1. Kuntaleshwardautya of Kalidasa (Word Index—Yatiraja Samatha Kumar Ramanuja Muni, Melkote. Published by A. Shrinivas Iyengar, Shrivatsa Press, Triplicane 1934.

(तृतीय अध्याय)

१. कालिदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के सम्बन्ध में सामान्यतया लिखित समीक्षात्मक ग्रन्थ :—

(क) विदेशी भाषाओं में—(भारतीय विद्वानों द्वारा लिखित)—

(१) कालिदास—श्री अरविन्द[1]।

(२) दि डेट ऑफ कालिदास—के० चट्टोपाध्याय, इलाहाबाद।

(३) दि बर्थ प्लेस ऑफ कालिदास—म० म० पं० लक्ष्मीधर कल्ला[2]।

(४) कालिदास ऐण्ड विक्रमादित्य—एस० सी० दे, कलकत्ता १९२८ ई०।

(५) दि डेट ऑफ कालिदास—आप्टे।

चन्द्रगोमिन् ऐण्ड कालिदास (Chandragomin and Kalidasa जर्मन भाषा में)—आप्टे।

(६) कालिदास (ए स्टडी)—जी० सी० झाला[3]।

(७) कालिदास—के० एस० रामस्वामी शास्त्री[4]।

(८) कालिदासाज डेट—श्री रामानुजाचार्य।

(९) पाण्ड्याज ऐण्ड दि डेट ऑफ कालिदास-सी० वी० वैद्य।

(१०) कालिदास—एस० के० दे।

(११) दि एज ऑफ कालिदास—अरविन्द, पाण्डिचेरी आश्रम।

(१२) कालिदास दि नेशनल पोयट—एस० एस० भावे।

(१३) मोरल्स ऑफ कालिदास—प्राणनाथ पण्डित।

---

१. पण्डिचेरी, १९५० ई०, द्वि० सीरीज १९५४ ई०।

२. दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, नं० १, १९२६ ई०।

३. पद्मा प्रकाशन, बम्बई, १९४८ ई०।

४. कालिदास (हिज पीरियड, पर्सनालिटी ऐण्ड पोयट्री, दो भाग)—वाणीविलास प्रेस, श्रीरङ्गम्।

(१४) ईपिग्राफिकल ईकोज ऑफ कालिदास—सी० शिवराममूर्ति एम० ए०[१]।

(१५) स्कलपचर इन्स्पायर्ड बाई कालिदास—सी० शिवराममूर्ति एम० ए०[२]

(१६) सिमलीज ऑफ कालिदास—के० चेल्लाप्पन पिल्लई[3]।

(१७) कालिदास ऐण्ड शेक्सपीयर—छन्नूलाल द्विवेदी, काशी, १९२३।

(१८) इन्डिया इन कालिदास[४]—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय।

(१९) न्युमिस्मैटिक पैरलल्स ऑफ कालिदास—सी० शिवराममूर्ति[५]।

(२०) कालिदास—हरिचन्द।

(२१) कालिदास—प्रो० आर० डी० करमरकर[६]।

(२२) पद्मपुराण एण्ड कालिदास—एच० डी० शर्मा।

(२३) ए कन्कोर्डेन्श ऑफ कालिदासाज् पोएम्स—टी० के० रामचन्द्र ऐयर[७]।

(२४) ए कन्कोर्डेन्श ऑफ कालिदासाज् प्लेज्[८]—,, ,, ,,

(२५) Kalidasa etl 'Artpoetique Del' Inde—हरिचन्द शास्त्री[९]।
(Kalidasa Citation in Alankaraworks)

(२६) दि मङ्गलाष्टक ऑफ कालिदास—बी० बी० गोखले[१०]।

(२७) कालिदास ऐण्ड शेक्सपीयर–प्रमथनाथ मुखोपाध्याय (स्वामी प्रत्यगानन्द)।

---

1. Epegraphical Echoes of Kalidasa—Memories of the Archeological Society of South.
2. Sculpture inspired by Kalidasa—India, No. 1, Madras Sanskrit Acadmy Madras, 1942.

३. विश्व भारती प्रकाशन, कलकत्ता १९४५ ई०।

४. किताबिस्तान, इलाहाबाद, १९४७।

५. शक्ति कार्यालय मद्रास, १९४५।

६. कर्नाटक युनिवर्सिटी, धारवाड़ १९६०।

7. A Concordance of Kalidasa's Poems. Edited by Dr. Raghavan no. 20, in Madras University Sanskrit Series.
8. A Concordance of Kalidasa's. Plays. 1962. (Not published).
9. Paris, 1917.

१०. श्री गोखले के 'मङ्गलाष्टक' से प्रतीत होता है कि वे कालिदास की आठ रचनाएँ मानते हैं।

(२८) कालिदासकोश—प्रो० एस० सी० (सुरेशचन्द्र) बनर्जी।

(२९) कालिदास ऐण्ड शेक्सपीयर—डॉ० मायाधर्मन् सिन्हा।

(३०) वर्क्स ऑफ कालिदास—सी० आर० देवधर[1]।

(३१) कालिदास ए क्रिटिकल स्टडी—अमलधारी सिंह[2]।

(३२) ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ दि सोर्सेज ऑफ कालिदास—डी० आर० यादव[3]।

(३३) कालिदास, ऐन असेसमेंट बाइ आनन्दवर्द्धन[4]—डॉ० पी० के० नारायण पिल्लई।

(३४) इमेजरी ऑफ कालिदास—एस० एस० भाण्डारकर[5]।

(३५) ज्याग्राफिकल एस्पेक्ट ऑफ कालिदासाज् वर्क्स—डॉ० वेंकटाचलम्[6]।

(३६) बिब्लियोग्राफी ऑफ कालिदास—सत्यपालनारङ्ग[7]।

(३७) सेलेक्शन फ्राम कालिदास—संस्कृत अकादमी मैलापुर, मद्रास १९३० ई०।

३८. कालिदास[8] (हिज आर्ट ऐण्ड थौट)—टी० जी० मयङ्कर।

(ख) विदेशी भाषाओं में (विदेशी विद्वानों के द्वारा लिखित)—

(१) दि लाइफ ऑफ कालिदास[9]—सिनेबिरेत्न, कोलम्बो, १९०२।

(२) कालिदास[10] (दि ह्यु मन मीनिंग ऑफ हिज वर्क्स)—डॉ० वाल्टररुबे, बर्लिन, १९५७।

---

1. Vol. I, Motilal-Banarasidas (only on three Natakas).
२. भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी।
३. भवन प्रकाशन, दिल्ली।
४. विश्वेश्वरानन्द वैदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट, होशियारपुर।
५. बाम्बे पॉपुलर प्रकाशन।
६. भारतीय पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी।
७. मोतीलाल बनारसीदास, जवाहरनगर, दिल्ली—११०००७।
८. देशमुख प्रकाशन, बुधवर, पूना।
9. G. E. Senebiraten, Colombo, 1902.
10. Dr. Walter Ruben, Prof. of Anthropology, Acadamy of Sciences, Berlin.

(३) कालिदास[१]—आई० एस० राबिनोविच।

(४) कालिदास[२]—रेव० टी० फौक्स।

(५) कालिदास[3]—(जर्मन) प्रो० हिलेब्राँत, ब्रेस्ला, १९२१।

(६) कालिदास[४]—जी० हुथ।

(७) कालिदास—लेक्सकों[५]—ए० शार्पे।

(ग) भारतीय भाषाओं में—

(संस्कृत भाषा में)—

(१) महाकविः कालिदासः—डॉ. रामजी उपाध्यायः (चौ. सं. सी., वाराणसी)।

(२) कालिदासचरितम्[६] (नाटकम्)—वी. वेलणकरः (चौ.सं.सी., वाराणसी)।

(३) कवि कालिदासः—डॉ. वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्यः (चौ. सं. सी., वाराणसी)।

(४) कालिदाससाहित्यम्[७]—डॉ. आद्याप्रसाद मिश्रः।

(५) उपमा कालिदासस्य—डॉ. शशिभूषणदास गुप्तः (चौ. सं. सी., वाराणसी)।

---

1. Kalidasa : Izbrannoe I. S. Rabionvitch, Goslitizdat, 1956. (Kalidasa : Selected works) Translation from Sanskrit in to Russian with preface and notes)
2. Rev. T. Foulkes—Kalidasa, A Complete Collection of the various readings of the South Indian maunscripts, vol I, (in 4 vols.), Madras—1904.
3. Kalidasa (German)—Prof. Hille brandt, Breslau, 1921.
4. Die Zeit Les Kalidasa—Pros. Huth, Berlin, 1890.
5. Kalidasa—Lexcon, Vol. 1, Basic Text of works, Part 1, Abhijnana Shakuntala—A. Scharpe—University of Ghent, 1954.

६. डॉ. रामजी उपाध्याय ने 'सागरिका' के सोलहवें वर्ष के द्वितीय अङ्क (पृ० ५९) में इसका उल्लेख किया है।

७. कालिदाससाहित्यम्—कामेश्वरसिंह-दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय प्रकाशन; १९६२ ई०।

(६) कालिदासरहस्यम्[1]—श्रीधरभास्कर वर्णेकरः।

(७) कालिदासकाव्यामृतम्—रामलखन शर्मा।

(८) कालिदासमन्दाक्रान्ताशतकम्—चौ. सं. सी., वाराणसीतः काव्यमञ्जूषा-न्तर्गतं प्रकाशितम्।

(९) कालिदासस्मृतिकुसुमाञ्जलिः—उड़िसा साहित्य अकादमी पत्रिका।

(१०) कालिदासीयोपरूपकाणांसमुच्चयः[2]—

(क) पुनस्सङ्गमः—पं. आनन्द झाः, लखनऊ विश्वविद्यालयः।

(ख) वीरवदान्यम्—डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शुक्लः, प्रयाग विश्वविद्यालयः।

(ग) मदनदहनम्—पं. रमेशखेरः, वम्बई।

(घ) कालिदासः[3]—डॉ. वनेश्वरपाठकः, संस्कृतविभागाध्यक्षः, सेंटजेवियर्स कॉलेज, राँची।

(ङ) मदनदहनम्—पं. श्री रा. श. महाराजः।

(च) गुरुदक्षिणा—पं. यदुवंश मिश्रः।

(छ) इन्दुमतीपरिणयः—श्रीनरायण मिश्रः।

(ज) कालिदासगौरवम्—पं. जीवनाथ झाः।

(झ) शाकुन्तलम्—पं. रामावतार मिश्रः।

(ञ) कालिदासपाणिकरणम्—श्रीसमानाथ पाठकः 'नाथः'।

(ट) सीतात्यागः—श्रीअच्युत तात्याराव बोवड़े, नान्देल (होली) द. भारतः।

---

१. वागेश्वरी प्रकाशन, धनतोली नागपुर।

२. कामेश्वरसिंह—दरभंगा-संस्कृत-विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९६३ ई०। यह समुच्चय कालिदास के व्यक्तित्व तथा उनके काव्य-पात्रों के चरितों पर आधारित रूपकों का संग्रह है। डॉ. रामजी उपाध्याय ने भी 'सागरिका' (सागरविश्वविद्यालय पत्रिका) के षोडषवर्षीय द्वितीय अङ्क में इन रूपकों का उल्लेख किया है।

३. इस नाटक की विशेषता यह है कि इसमें निचुल और दिङ्नाग को कालिदास का सहपाठी माना गया है। निचुल कालिदास के मित्र हैं और दिङ्नाग विरोधी हैं।

(११) महाकविकालिदासम्—जीवन्यायतीर्थः।
(१२) कुमारसम्भवम्— ,,
(१३) रघुवंशम्— ,,
(१४) मेघदूतम्—नित्यानन्दः।
(१५) मेघदूतोत्तरम्—श्रीवेलणकरः।
(१६) कालिदासमहोत्साहः—डॉ. हरिरामचन्द्र दिवेकर, ग्वालियर।
(१७) कालिदासचरितम्—वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्यः।
(१८) आषाढ़स्य प्रथमदिवसे—श्रीवेङ्कटराम राघवः (डॉ. वी. राघवन्)।
(१९) किं प्रियं कालिदासस्य— ,, ,,
(२०) स्वप्नरघुवंशम्[१]—यतीन्द्र विमल चौधुरी।
(२१) कविकुलकोकिलम्[२]—डॉ. रमा चौधुरी।
(२२) मेघमेदुरमेदिनीयम्[३]— ,,
(२३) कविकुलकमलम्[४]— ,,
(२४) गुरुदक्षिणा[५]—श्रीनिवासरङ्गाचार्यः।
(२५) कौत्सस्य गुरुदक्षिणा—पं. वासुदेव द्विवेदी, काशी।
(२६) छायाशाकुन्तलम्—जीवनलाल पारिखः।

विशेष :—संख्या ११ से संख्या २६ तक की रचनाओं का उल्लेख डॉ. रामजी उपाध्याय ने 'सागरिका' (सागर विश्वविद्यालय पत्रिका) के सोलहवें वर्ष के प्रथम तथा द्वितीय अङ्क में सविवरण किया है।

---

१. यह 'रघुवंश' पर आधारित है।
२. इस नाटक में मूर्ख कालिदास का राजकुमारी विद्यावती के साथ विवाह वर्णित है। सरस्वती उन्हें 'कविकुलकोकिल' होने का आशीर्वाद देती है। विक्रमादित्य की राजसभा में वे 'कविसार्वभौम' की उपाधि प्राप्त करते हैं।
३. यह मेघदूत की पूर्वोत्तर घटना पर आधारित रूपक है।
४. इस नाटक में कालिदास का उत्तरकालीन चरित वर्णित है।
५. इस नाटक का आधार रघुवंश के पञ्चम सर्ग में वर्णित वरतन्तु-शिष्य कौत्सकी गुरुदक्षिणा की कथा है।

(२७) कालिदासो ब्रवीति[1]—डॉ. बनेश्वर पाठकः राँची, १९८१ ई०।

(२८) कालिदासः मानवशिल्पी महाकविः उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी से पुरस्कृत—डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी (चौ. प्र. काशी)।

(हिन्दी) भाषा में—

(१) कालिदास और उनकी कविता—पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ।

(२) कालिदास की निरङ्कुशता और उसका निराकरण[2]—पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी और पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ।

(३) कालिदास[3]—म. म. डॉ० वासुदेवविष्णु मिराशी ।

(४) कालिदास—उदयशङ्कर भट्ट, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

(५) कालिदास—हरिश्चन्द्र ।

(६) कालिदास और भवभूति[4]—पं० रूपनारायण पाण्डेय ।

(७) विक्रमादित्य[5]—डॉ० राजबली पाण्डेय ।

(८) विक्रम और उनके नवरत्न[6]—पं० ईशदत्त शास्त्री 'श्रीश'।

(९) कालिदास के ग्रन्थों की उपादेयता[7]— पं० सीताराम जयराम जोशी ।

(१०) कालिदास के शब्दप्रयोग[8]—पं० अम्बिका प्रसाद उपाध्याय ।

---

१. यह लघुकाव्य दो खण्डों में विभक्त है—प्रश्न-खण्ड और उत्तर-खण्ड । प्रश्न-खण्ड में कालिदास के व्यक्तित्व और रचनाओं के सम्बन्ध में विविध प्रश्न उपस्थापित किए गए हैं। उत्तर-खण्ड में कालिदास स्वयं उन प्रश्नों का समाधान करते हैं। यह प्रश्नोत्तर काव्य मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखा गया है ।

२. गङ्गा-पुस्तकालय ।

३. हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर, बम्बई, १९५६ ई०। चौ. सं० सी. वाराणसी से प्राप्य ।

४. हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर, बम्बई, १९२१ ई० प्रथम संस्करण, १९५६ ई० द्वि० सं० ।

५. पं० सीताराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'कालिदासग्रन्थावली' में प्रकाशित निबन्ध ।

६. ,, ,, ,,

७. ,, ,, ,,

८. ,, ,, ,,

(११) कालिदास के कवित्व की पूर्णता[1]—गोस्वामी दामोदरलाल ।
(१२) कालिदास के सन्देश[2]—प्रो. बलदेव उपाध्याय ।
(१३) कालिदास और प्रकृति[3]—पं० करुणापति त्रिपाठी ।
(१४) कालिदास के सुभाषित[4]—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ।
(१५) कालिदास का भारत[5]—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ।
(१६) कालिदास और उनका युग[6]—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ।
(१७) कालिदासं नमामि[7]—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ।
(१८) कालिदास[8] (जीवन और साहित्य)—डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ।
(१९) कालिदास[9]—डॉ० चन्द्रबली पाण्डेय ।
(२०) कालिदास[10] (जीवन, कला और कृतित्व)—जयकृष्ण चौधुरी ।
(२१) राष्ट्रकवि कालिदास[11]—सीताराम सहगल ।
(२२) महाकवि कालिदास[12]—डॉ. रमाशङ्कर तिवारी ।
(२३) कालिदास—सन्तोष व्यास ।
(२४) कालिदास (एक अनुशीलन)—पं० देवदत्त शास्त्री ।

---

१. पं० सीताराम चतुर्वेदीद्वारा सम्पादित 'कालिदासग्रन्थावली' में प्रकाशित निबन्ध ।
२. " " "
३. " " "
४. भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
५. " "
६. भारतीय विद्याभवन, इलाहाबाद, १९५६ ई०
७. " " "
८. राजपाल ऐण्ड सन्स, दिल्ली ।
९. मोतीलाल बनारसीदास, बनारस, सं० २०१० ।
१०. चौ. सं० सी. वाराणसी ।
११. नवयुग पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।
१२. चौ. सं० सी. वाराणसी ।

(२५) कालिदास की कृतियों में भौगोलिक स्थलों का प्रत्यभिज्ञान[१]—डॉ. कैलासनाथ द्विवेदी।

(२६) कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति[२]—डॉ. गायत्री वर्मा।

(२७) कालिदास और उसकी काव्यकला[३]—वागीश्वर विद्यालंकार।

(२८) कालिदास की लालित्य-योजना[४]—डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी।

(२९) कालिदासदर्शन[५]—डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज।

(३०) कालिदास—सुधांशु चतुर्वेदी।

(३१) कालिदास के काव्य—जगदीश दीक्षित आनन्द।

(३२) कालिदास के काव्य—डॉ. रामप्रताप त्रिपाठी।

(३३) कालिदास और भवभूति के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन[६]—डॉ. सुरेन्द्रदेव शास्त्री।

(३४) कालिदास का प्रकृतिचित्रण[७]—निर्मला उपाध्याय।

(३५) भोज-कालिदास[८] (नेपाली श्लोक-सहित)—अनुवादक पं० रामप्रसाद सान्याल।

(३६) विश्वकवि कालिदास (एक अध्ययन)—पं० सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन।

(३७) कालिदास और भवभूति (हिन्दी अनुवाद)—द्विजेन्द्रलाल राय, कलकत्ता।

(३८) कालिदस-नाटक-कथा-मञ्जरी[९]

---

१. यह शोध-प्रबन्ध साहित्य-निकेतन, कानपुर से प्रकाशित है।

२. यह शोधप्रबन्ध चौ. सं० सी. वाराणसी से प्राप्य है।

३. ,, ,, ,,

४. ,, ,, ,,

५. ,, ,, ,,

६. साहित्यभाण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ।

७. नीलाभ प्रकाशन, खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद।

८. प्रकाशन—कृष्णकुमारी देवी, २३/१११९, दूधविनायक, वाराणसी।

9. Vadhya & Sons, Kalpathi, Palghat 1942.

(मराठी में)—

(१) कालिदास[1]—म. म. वी. वी. मिराशी ।

(२) कालिदासांची नाटकें[2]—र. पं० कंगले (मराठी) ।

(बंगला में)—

(१) कालिदास आउर भवभूति—द्विजेन्द्रलाल राय कलकत्ता, १६२० ई० ।

(२) कालिदास-जन्मपीठसंभार—अनुष्ठान-पत्र (बंगला में) ।

(३) कालिदासेर नवमूल्य[3]—कमलकुमार सान्याल ।

---

१. नया भारत ग्रन्थमाला, नं० ८ ।

२. चौ. सं० सी. वाराणसी से प्राप्य ।

३. संस्कृतप्रकाश भाण्डार, ३४ विधानसरणि, कलकत्ता–५ ।

(चतुर्थ अध्याय)

कालिदास के कृतित्व के सम्बन्ध में विशेषतया लिखित समीक्षात्मक ग्रन्थ-

१. ऋतुसंहार के सम्बन्ध में—

(क) विदेशी भाषाओं में—

(१) स्टडीज आफ ऋतुसंहार—प्रो. शिवप्रसाद भट्टाचार्य (कर्मयोगिन् जर्नल)।

(२) कालिदासाज् सीजन्स—श्री अरविन्द (पाण्डिचेरी)।

(३) ऋतुसंहार—रामकृष्ण अय्या (भारती ३।१५)।

विशेष—

इस प्रसङ्ग में ऋतुसंहार के भारतीय तथा विदेशी संस्करण और पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ भी द्रष्टव्य हैं।

२. मेघदूत के सम्बन्ध में—

(क) विदेशी भाषाओं में—

(१) कालिदासाज् मेघदूत[1]—एच. बेख।

(२) रीभ्यू आफ हुल्त्सेज एडिशन आफ मेघदूत[2]—जे. हर्टेल।

(३) रीभ्यू आफ पानबोकेज एडिशन आफ मेघदूत[3] —डेविड्स।

(४) रीभ्यू आफ हुल्त्सेज एडिशन आफ मेघदूत[4]—ए. ए. मैकडोनेल।

(५) फ्रेश लाइट आन कालिदासाज् मेघदूत[5]—वामनकृष्ण परानजपे।

---

1. Hermann Beckh—Ein Beitrag Zur Text Kritik Von Kalidasa Meghaduta (Diss) Berlin 1907.
2. J. Hertel in Gothingische gelehrte Anzeigen, 1912, no. 7, P. 403-9.
3. Rhys Davids in J. R. A. S. 1894, P. 632-35 (Review of Panboke's edition—Singhalese Paraphrase of Meghaduta).
4. A. A. Macdonell in J. R. A. S. 1913, P. 176-83.
५. कालिदास संशोधन मण्डल, २२६ बुधवारपेठ, परानजपे रोड पूना–२, १९६०

(चतुर्थ अध्याय)

कालिदास के कृतित्व के सम्बन्ध में विशेषतया लिखित समीक्षात्मक ग्रन्थ–

१. ऋतुसंहार के सम्बन्ध में—

(क) विदेशी भाषाओं में—

(१) स्टडीज आफ ऋतुसंहार—प्रो. शिवप्रसाद भट्टाचार्य (कर्मयोगिन् जर्नल)।

(२) कालिदासाज् सीजन्स—श्री अरविन्द (पाण्डिचेरी)।

(३) ऋतुसंहार—रामकृष्ण अय्या (भारती ३।१५)।

विशेष—

इस प्रसङ्ग में ऋतुसंहार के भारतीय तथा विदेशी संस्करण और पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ भी द्रष्टव्य हैं।

२. मेघदूत के सम्बन्ध में—

(क) विदेशी भाषाओं में—

(१) कालिदासाज् मेघदूत[१]—एच. बेख।

(२) रीव्यू आफ हुल्त्सेज एडिशन आफ मेघदूत[२]—जे. हर्टेल।

(३) रीव्यू आफ पानबोकेज एडिशन आफ मेघदूत[3] —डेविड्स।

(४) रीव्यू आफ हुल्त्सेज एडिशन आफ मेघदूत[४]—ए. ए. मैकडोनेल।

(५) फ्रेश लाइट आन कालिदासाज् मेघदूत[५]—वामनकृष्ण परानजपे।

---

1. Hermann Beckh—Ein Beitrag Zur Text Kritik Von Kalidasa Meghaduta (Diss) Berlin 1907.
2. J. Hertel in Gothingische gelehrte Anzeigen, 1912, no. 7, P. 403-9.
3. Rhys Davids in J. R. A. S. 1894, P. 632-35 (Review of Panboke's edition—Singhalese Paraphrase of Meghaduta).
4. A. A. Macdonell in J. R. A. S. 1913, P. 176-83.

५. कालिदास संशोधन मण्डल, २२९ बुधवारपेठ, परानजपे रोड पूना–२, १९६० ई०।

(६) इन्ट्रोडक्शन टु मेघदूत—प्रो. के. बी. पाठक।

(७) मेघसन्देश[1]—पिचय शास्त्री।

(८) मेघसन्देस[2]—रामदास।

(९) मेघदूत आफ कालिदास[3]—डॉ. एस. के. दे।

(१०) पदावली आफ मेघसन्देश[4] (वर्ड-इन्डेक्स)—यतिराज सम्पतकुमार रामानुजमुनि, मेल्कोटे।

(ख) भारतीय भाषाओं में—

(हिन्दी में)—

(१) मेघदूत-एक अध्ययन[5]—डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल।

(२) मेघदूत-एक अनुचिन्तन[6]—डॉ. रञ्जनसूरिदेव।

(३) मेघदूत-एक पुरानी कहानी—डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी।

(४) कालिदास का मेघसन्देश—डॉ. राङ्गेयराघव।

(५) मेघदूत की वैदिक पृष्ठभूमि और उसका सांस्कृतिक सन्देश—डॉ. सुधीर कुमार गुप्त।

(६) मेघदूत-विमर्श—सेठ कन्हैयालाल पोद्दार।

(७) मेघदूत-परिचय—प्रबोधचन्द्र भट्टाचार्य।

(८) योगवासिष्ठ में मेघदूत[7]—डॉ. भीखनलाल आत्रेय।

(९) मेघदूत की महत्ता[8]—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी।

---

१. भारती, ५।६७८।

२. भारती ८/१९

३. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

4. Published by A. Shrinivas Iyengar, Shrivatsa Press, Triplicane 1934.

५. राजकमल प्रकाशन, बम्बई, वि. सं० २०१०।

६. नागरी प्रकाशन, प्रा. लि., पटना-४।

७. आचार्य सीताराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'कालिदासग्रन्थावली' (काशी) में प्रकाशित निबन्ध।

८. ,,

(१०) मेघदूत का एक अध्ययन[१] (शिव का स्वरूप)—डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल।

(बंगला में)—

(१) कालिदासेर मेघदूत—सुनील गङ्गोपाध्याय।

(२) कालिदासेर मेघदूत—शक्ति चट्टोपाध्याय।

(मराठी में)—

(१) मेघदूतावर नवा प्रकाश[२]—वामनकृष्ण परानजपे।

(२) मेघदूतान्तील रामगिरि[३]—म. म. वी. वी. मिराशी।

(संस्कृतभाषा में)—

(१) आचार्यंजिनसेन कृत पार्श्वाभ्युदये प्रयुक्तं मेघदूतकाव्यम्[४]—प्रो. काशीनाथ बापू पाठक (के. बी. पाठक)।

(२) नेमिदूते प्रयुक्तं मेघदूतकाव्यम्[५]—विक्रमाचार्य।

(३) चारित्रसुन्दरगणिकृतशीलदूते प्रयुक्तं मेघदूतकाव्यम्[६]—हरगोविन्ददास बेचरदास द्वारा सम्पादित।

(४) मेघसमुच्चयः (मेघदूतसमस्यालेखः[७])—उपाध्याय मेघविजय।

(५) सिद्धदूते प्रयुक्तं मेघदूतकाव्यम्[८]—अवधूतराम योगी।

(६) हनुमद्दूते प्रयुक्तं मेघदूतकाव्यम्[९]—नित्यानन्द शास्त्री, जोधपुर।

---

१. आचार्य सीताराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'कालिदासग्रन्थावली' (काशी) में प्रकाशित।

२. प्रसाद प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पूना-२, १९५८ ई०।

३. विदर्भ संशोधन मण्डल, नागपुर। मेघदूतान्तील रामगिरी अर्थात् रामटेक, यह ग्रन्थ 'मेघदूतावर नवा प्रकाश' के उत्तर के रूप में लिखा गया है।

४. आर्यभूषण प्रेस, पूना १८९४ ई० द्वि. सं. १९१६ ई०।

५. काव्यमालागुच्छक, सं. २, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८८६ ई०।

६. यशोविजय-जैन-ग्रन्थमाला, सं. १८ बनारस, १९१५ ई०।

७. जैन आत्मानन्द ग्रन्थमाला, भावनगर, १९४९ ई०।

८. हेमचन्द्र ग्रन्थावली, पाटन, १९२७ ई०।

९. वेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बई, [illegible]

(७) चेतोदूते प्रयुक्तं मेघदूतकाव्यम्[१]—(लेखक-अज्ञात)।

(८) मेघदूतोत्तरार्द्धम्—'संस्कृत' पत्रिका, ३३ वाँ वर्ष, १९५३ ई०।

विशेष—मेघदूत के सम्बन्ध में विदेशी तथा भारतीय संस्करण एवं पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ भी द्रष्टव्य हैं।

३. कुमारसम्भव के सम्बन्ध में—

(संस्कृतभाषा में)—

(१) कुमारसम्भवस्थूलतात्पर्यम्[२]—लेखक अज्ञात।

(२) श्री कालिदास काव्यकुसुमाञ्जलिः[३]—लेखक अज्ञात।
(आंग्लभाषा-अनुवाद सहित)

विशेष—कुमारसम्भव के सम्बन्ध में विदेशी तथा भारतीय संस्करण और पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ भी द्रष्टव्य हैं।

४. रघुवंश के सम्बन्ध में—

(क) विदेशी भाषाओं में—

(१) श्रीराम ऐण्ड दि रघुवंश—सी. कुन्हन राजा।

(२) दि दिग्विजय ऑफ रघु—गावरान्सकी, १९१५ ई०।

(३) इन्ट्रोडक्शन टु रघुवंश[४]—श्री एस. पी. पण्डित।

(४) इन्ट्रोडक्शन टु रघुवंश—श्री नन्दर्गीकर।
(दि रघुवंश ऑफ कालिदास)

(५) फर्स्ट मर्स ऑफ रघुवंश[५]—ताताचार्य।

---

१. जैन आत्मानन्द ग्रन्थमाला, भावनगर, १९१४ ई०।
विशेषः—इन पुस्तकों के सम्बन्ध में डॉ० वनेश्वर पाठक कृत 'प्लवङ्गदूतम्' (उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत) की भूमिका द्रष्टव्य है।

२. एग्लिङ्गकृत संस्कृत पुस्तक सूची, भाग ७, पृ. १४२१, क्र. सं. ३७९८। संस्कृत-सेवासमिति, मैलापुर, मद्रास, १९३० ई०।

३. यह 'कुमारसम्भव' का सारांश है।

4. J. A. II P. 451.

5. J. A.S.B. XXI and Oriental Conference Proceedings III Madras.

(६) एनेलिसिज ऑफ रघुवंश[1]--लेखक अज्ञात ।

(७) नेचर पोयट्री इन कालिदासाज् रघुवंश--ए. सी. सुब्रह्मण्यम् ।

(८) कालिदासाज् रघुवंशम्--श्री पद्मरङ्गनाथन् ।

(ख) भारतीय भाषाओं में--

(संस्कृत में)--

(१) रघुवंशविमर्शः—कृष्णमाचार्य ।

विशेष--रघुवंश के सम्बन्ध में विदेशी तथा भारतीय संस्करण और पत्र, पत्रिकाओं के सन्दर्भ भी द्रष्टव्य हैं ।

५. मालविकाग्निमित्र के सम्बन्ध में—

(क) विदेशी भाषाओं में—

(१) मालविका ऐण्ड अग्निमित्र—ए. वेबर, वर्लिन, १८५६ ई० ।

इस प्रसङ्ग में कैपुलर, हैग, बोलेन्सन, वेबर, जैक्सन तथा स्टेनकोनो के निबन्ध विशेषतः उल्लेखनीय है—

1. C. Capeller—Observations ad Kalidasae Malavikagnimitra (Diss), Regimonti, 1868.
2. F. Haag-Zur Text Kritik und Erktarung von Kalidas Malavikagnimitra, Frauenfild, 1872.
3. Bollensen—Z. D. M. G. XIII 1859, P. 480f.
4. Weber—Z. D. M. G. XIV 1860, P. 261 f.
5. Jackson—J. A O. S. XX P. 243 (Time analysis).
6. Stein Konow--Op. Cit. eil. P. 63.

विशेष—मालविकाग्निमित्र के सम्बन्ध में विदेशी तथा भारतीय संस्करण और पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ भी द्रष्टव्य हैं ।

६. विक्रमोर्वशीय के सम्बन्ध में—

(क) विदेशी भाषाओं में—

(१) उर्वशी—एफ. बोलेन्सन, सेंट पीटर्सबर्ग, १८४६ ।

1. Analysis of Raghuvansha—J. R. S. B. XXI Oriental Conference Proceedings IV.

(२) विक्रमोर्वशी (आर दि होरो एण्ड दि निम्फ)—श्री अरविन्द, पाण्डिचेरी, १९४१ ई० ।

विशेष—विदेशी विद्वानों के विक्रमोर्वशीय—सम्बन्धी विवरणों में हुथ, कीथ, स्टेनकोनो आदि के विवरण विशेषतया उल्लेखनीय हैं ।

(ख) हिन्दी भाषा में—

(१) विक्रमोर्वशीय-सार व विचार[1]—कै. शि. म. लेले ।

विशेष—विक्रमोर्वशीय के सम्बन्ध में विदेशी तथा भारतीय संस्करण एवं पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ द्रष्टव्य हैं ।

७. अभिज्ञानशकुन्तल के सम्बन्धमें—

(क) विदेशी भाषाओं में—

(१) दि कालिदासे शकुन्तली रिशेन्सनस[2] (जर्मन)—आर. पिशेल ।

(२) दि रिशेन्सनेन दर शकुन्तला[3] (जर्मन)— ,,

(३) शकुन्तला एण्ड कालिदास[4]—रवीन्द्रनाथ ठाकुर ।

(४) शाकुन्तलम्-ए सिन्थेटिक स्टडी—आर. एम. बोस, कलकत्ता १९५३ ई० ।

(५) कालिदास लेक्सकन[5]—ए. शार्पे ।

(ख) भारतीय भाषाओं में—

(हिन्दी में)—

(१) अभिज्ञानशकुन्तल-एक अध्ययन[6]—श्रीकाशीनाथ द्विवेदी ।

---

१. आचार्य सीतारामचतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'कालिदासग्रन्थावली' (काशी) में प्रकाशित निबन्ध ।
2. De Kalidesae Shakuntali Recensionibus (Diss). R. Pischel, Breslau 1870. (Question of the priority of one or the other of the different recensious).
3. Die Riensionender Shakuntala. R. Pischel, Breslau 1875.
4. Tagor's essays.
5, Kalidasa-Lexcon, Vol. I Basic Text of the works, Part I, Abhijnanashakuntala, University of Ghent, 1954.
६. चौ. सं० सी. वाराणसी से प्राप्य ।

(१) अभिज्ञानशकुन्तल और पद्मपुराण[1]—गोस्वामी किशोरीलाल।

(२) अभिज्ञानशकुन्तल[2]—श्रीनवलकिशोर शास्त्री।

(३) अभिज्ञानशकुन्तल[3]—डॉ. जयकिशुन प्रसाद खण्डेलवाल।

(४) शकुन्तला-सार व विचार[4]—कै. शि. म. लेले।

(५) निसर्गकन्या शकुन्तला[5]—डॉ. वेलवेलकर।

(बंगला में)—

(१) शकुन्तला उ नाट्यकला—प्रो. एच. पी. शास्त्री।

(२) शकुन्तलारहस्य—विहारीलाल सरकार, १८६६ ई०।

(उर्दू भाषा में)—

(१) शकुन्तला—डॉ अब्दुलहक, खुदावख्शखाँ लायब्रेरी, पटना।

विशेष—अभिज्ञानशकुन्तल के सम्बन्ध में शिदेशी तथा भारतीय संस्करण एवं पत्र-पत्रिकाओं के सन्दर्भ भी द्रष्टव्य हैं। विदेशी भाषाओं के संस्करणों में हरिचन्दशास्त्री, स्टेनकोनो और शीलर के संस्करण विशेषतः द्रष्ट्रव्य हैं[6]। संस्कृत के इस सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक का विदेशी पिद्वानों ने अत्यन्त सुरुचिपूर्वक गम्भीर एवं व्यापक अध्ययन किया है। इसके पाठभेद, कथा-स्त्रोत, भाषा आदि के विषय में विदेशी विद्वानों ने बड़े श्रम के साथ अन्वेषण किया है। पाठ-भेद आदि के सम्बन्ध में निम्नलिखित विद्वानों के निबन्ध विशेषतया द्रष्ट्व्य हैं।.

---

१. किशोर विद्या निकेतन, भदैनी, वाराणसी से प्राप्य।

२. चौ. सं० सी. वाराणसी से प्राप्य।

३. बिनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा से प्राप्य।

४. आचार्य सीतारामचतुर्वेदी द्वारा सम्पादित, कालिदासग्रन्थावली' (काशी) में प्रकाशित।

५. " "

6, Harichand Shastri—op. cit. P. 243 f.
Stein Konow—op. cit. P. 68-70.
M. Schuyler—J. A. O. S. (Jynrnal af American Oriental Society) XXII P. 237. f

(क) पाठ-भेद के सम्बन्ध में—स्टेनकोनो, हरिचन्द, बी. के. ठाकुर और विन्डिश के विवरणात्मक निबन्ध द्रष्टव्य हैं[1]।

(ख) कथास्रोत के सम्बन्ध में—विन्टरनित्स, गौरांस्की, बी. के. ठाकुर तथा हरदत्त शर्मा के विवरण विशेषतया द्रष्टव्य हैं[2]। इन विद्वानों के मतानुसार अभिज्ञानशाकुन्तल की कथा पद्मपुराण से ली गई है।

(ग) दुर्वासा के शाप के सम्बन्ध में—ओल्डेनबर्ग, ग्रे तथा पावोलिनी के निबन्ध विशेषतया द्रष्टव्य हैं[3]। ओल्डेनबर्ग के अनुसार शाकुन्तल की शापकथा (अङ्गुलीयक घटना) भास के 'अविमारक' के चन्द्रभार्गव के शाप से अथवा ऐन्द्रजालिक अङ्गुलयक-कथा से प्रभावित है। ग्रे और पावोलिनी के अनुसार यह कथा 'जातकमाला' की सप्तम कथा का अनुकरण है। वस्तुतः अभिज्ञान (मुद्रिका) की कथा भारत में (रामायण आदि में) अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित है। कालिदास ने भारत में लोकप्रचलित प्राचीन कथा का ही अनुसरण किया है।

(घ) प्राकृतभाषा के सम्बन्ध में—हिल्लेब्रांत द्वारा सम्पादित 'मुद्राराक्षस' तथा वेबर की 'ऑन हाल ऐण्ड कालिदास' ये दो पुस्तकें विशेषतः द्रष्टव्य हैं[4]। डॉ. कीथ के अनुसार 'शाकुन्तल' के गद्य की भाषा सौरसेनी प्राकृत है तथा पद्य की भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। षष्ठ अङ्क में

---

1. Stein Konow—I. D., P. 67 f.
   Harichand—Kalidasa P. 243.
   B. K. Thakore—The text of the Shakuntala (1922).
   Windisch—Sanskrit Phil. P. 344.
2. Winternitz—G, I. L. I. 319.
   Gawronski—Les Sources de quelques drames indicus, P. 40,91.
   B. K. Thakore—The text of the Shakuntala.
   H. D. Sharma—Kalidasa and the Padma purana, Calcutta, 1925.
3. H. Olden burg—Die lit. d. alten Indien, P. 261.
   L. H. Gray.—W. Z. K. M. XVIII 1904, P. 53-54.
   P. E. Pavotini—G· S. A. I. XIX 1906, P. 376, XX P. 297 f.
4. Hille brandt—Mudra Rakshasa, P. III, G. N. 1908, P. 440.
   A. Weber—On Hala and Kalidasa-Weber's ed. P. XXIV.

राजश्याल राष्ट्रिय सौरसेनी का प्रयोग करता है और आरक्षी पुरुष मागधी का प्रयोग करते हैं।

(ङ) **प्राकृतपाठ की शुद्धता के सम्बन्ध में**--आर. पिशेल के निम्नलिखित ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं।

(१) दि कालिदासे शकुन्तली रिशेन्सन्स[१] (जर्मन)।

(२) दि रिशेन्सनेन दर शकुन्तला[२] (जर्मन)।

पिशेल के मतानुसार वङ्गीयपाठ की प्राकृत विशेष शुद्ध है। वेबर देवनागरीपाठ की प्राकृत को अधिक शुद्ध मानते हैं[3]। इस प्रसङ्ग में लेवी का 'ली थियेटर इन्डियन' नामक ग्रन्थ विशेषतया उल्लेख्य है[४]।

(च) **कालिदास की छन्दयोजना के सम्बन्ध में**—हुथ और हिल्लेब्रांत के निबन्ध उल्लेखनीय हैं[५]। इस प्रसङ्ग में पं. रामगोविन्द शुक्ल (संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) का 'कालिदास की छन्दोयोंजना' नामक निबन्ध भी द्रष्टव्य है[६]।

(छ) **कालिदास के अलंकार-प्रयोग (विशेषतः उपमा) के सम्बन्ध में**—हिल्लेब्रांत तथा हरिचन्द्र शास्त्री का 'कालिदास' ग्रन्थ विशेषतया उल्लेखनीय है[७]। इस प्रसङ्ग में डॉ. शशिभूषण दास गुप्त की उपमा 'कालिदासस्य' यह पुस्तक भी उल्लेख्य है[८]। कालिदास के अलंकार-

---

1. De. Kalidasae Shakuntali Recensionibus (Diss) Brecslau (1870).
2. Die Recensionen der Shakuntala (1875).
3. Indische studien, XIV P. 35, 161. Biihler-Kashmir Report, P. L. XXXV.
4, Leve—Le The atre indien, Paris 1890,
5. Huth—op. cit Table.
   Hillebrandt—Kalidasa, P. 157.

६. आचार्य सीताराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'कालिदासग्रन्थावली' (काशी) में प्रकाशित।

7. Hillebrandt—Kalidasa, P. 107 f.
   Harichand—Kalidasa, etl 'Art Poetique Del' Inde P, 68. (Kalidasa citations in Alankara works), Paris 1917.

८. चौ. सं० सी. वाराणसी से प्राप्य।

प्रयोग के सम्बन्ध में पी. के. गोदे का निबन्ध भी द्रष्टव्य है[1]।

(ज) कालिदास के आखेट के सन्वन्ध में—एच. ए. शाह का कौटिल्य ऐण्ड 'कालिदास' नामक पुस्तक (१६२०, पृ. ५) द्रष्टव्य है।

(क) विदेशी भाषाओं में—(विदेशी विद्वानों द्वारा लिखित)—

(१) विक्रमादित्य ऐण्ड शालिवाहन[२]—विलफर्ड।

(२) कालिदास[3]—स्मिथ।

(३) कालिदास[४]—केनेडी।

(४) कालिदास[५]—बैन्टली।

(५) कालिदास[६]—कीलहौर्न।

(६) कालिदास[७]—लाइबिल।

(७) कालिदास[८]—जैकोबी।

(८) कालिदास[९]—नोबेल।

(९) कालिदास[१०]—स्तेंस्लर।

(१०) कालिदास इन सिलोन[११]—डेविड्स ऐण्ड बेन्डेल।

---

1. P. K. Gode—Proceedings of the first Oriental Conference, Poona, 1922, P. 205-26.
2. Essay, A. S. IX, P. 117.
3. J. A. S. B. 1905, P. 227.
4. J. R. A. S. (1908).
5. Asiatic Research, VIII P. 243
6. I. A. XIX, P. 285
7, Annual Report of the Ges-fus-Vaterlanelesche Kulture, (Breslau 1903).
8. Vol. J. III P. 127.
9. Z. D. M. G. LX VI, J. R. A. S. (1912, 1913)-401.
10. E. Strenzler-Z. D. M. G. XL IV.
11. J. R. A. S. Vol. XX, 1888 P. 148-49 and P. 4, 40 ff, इस निबन्ध में कालिदास और कुमारसेन को समकालीन सिद्ध किया गया है।

(११) ट्रैडिशनल अकाउन्ट ऑफ कालिदास[१]—आर. बी. टुल्लु।

(१२) कालिदास ऐण्ड कामन्दकी[२]—डॉ. हार्नले।

(१३) कालिदास इन चाइना[३]—लुईफिलो।

(१४) कालिदास इन चाइना[४]—स्ट्रेनकोनो।

(१५) इन्ट्रोडक्शन अबाउट कालिदास[५]—ग्रीथर्सन।

(१५) चन्दाज् मेन्सन ऑफ श्रीहर्ष ऐण्ड कालिदास[६]—एफ. एस. ग्रोज।

(१६) डेट ऑफ कालिदास[७]—जी. बुलर।

(१७) साइकोलोजिकल इमेजरी इन कालिदास[८]—सी. डब्ल्यू. गुर्नर।

(१८) ए नोट ऑन कालिदास[९]—एफ. जी. पीटर्सन।

(१९) कालिदास ऐण्ड दि गुप्ता[१०]—जी. ए. ग्रीयर्सन।

(२०) कालिदास—नोविमिर[११]—एम. कोरलोव (रूसी भाषा में)।

(२१) कालिदास बायोबिब्लियोग्राफी[१२]—एन. एम. इवानोव (,,)।

---

1. R. V. Tullu I' A. VII (1878) P. 115.
2. I. A. XLI, P. 157.
3. I. H. Q. 1933, 839, 834.
4. I. H. Q. 1934, 566 ff.
5. J. A. S. B. XL VII.
6. F. S. Growse—Chanda's mention of Shriharsho and Kalidasa "Ancient Indian Chronology" I. A. Vol. II. 1872, Oct. P. 306.
   इस निबन्ध में श्रीहर्ष को कालिदास से पहले अर्थात् षठ शताब्दी से पहले सिद्ध किया गया है।
7. G. Buhler I. A. Vol. XLII, 1913. P. 47-48.
8. J. R. A. S. B. Vol. IX 1943. P. 191-99 (modern series).
9. J. R. A. S. 1926, Vol. LVIII, P. 725-29.
   इस निबन्ध में लेखक ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि कालिदास विदर्भ के थे।
10. J. R. A. S. B. Vol. XXXV, 1903, P. 363.
11. M. Korallov-Kalidasa-Noviymir (Russian) M. 1956, No. II, P. 237-246.
12. N. M. Ivanova—Kalidasa-Biobibilography, M. Vsesoyooz, 1957, P. 28.

(२२) कालिदास-वेलिकी पोयट इन्दु[1]—वी. आई. कल्यानोव (रूसी भाषा में)।

(२३) गोडेस्टि इन्डिस्कोइ लिटरेचरि—
कालिदास[2]—वी. आई. पाश्शेन्को। (,,)

(२४) वेल्की पोयट इन्डिस्कोगो नैरोडा के—
ऊबिलिऊ कालिदास—[3] ओ. रिजोव (,,)

(२५) सुजेत शाकुन्तलिव मालावारस्कोइ
नैरोड्नोइ ड्रामे[4]—ए. एम. मर्वत। (रूसी भाषा में)

(२६) स्ट्रोपेन वन कालिदास[5]–थिओदोर ऑफेच (जर्मन भाषा में)।

(२७) दी जेट कालिदासाज्[6]—टी. बलोच (,, ,,)।

(२८) जिनसेन, मल्लिनाथ ऐण्ड कालिदास[7]—वित्तोर पिशम (,, ,,)

(२९) वाल्मीकि ऐण्ड कालिदास[8]–डॉ. वाल्टररूबें।

---

1. V. I. Kalyanov-Kalidasa-Velikee poet Indu (K. 1500 Letiyon so donyarozh-deniya) The great Indian Poet (1500 years from the birth day) M, 1957. No. 1. P. 61-71.
2. V. I. Pashshenko—Gordost indecskoi Literaturi-Kalidasa (The Honour of Indian Literature-Kalidasa), M. Zoranie 1956, S. 32.
3. O. Rizhova-Velkee poet indeeskogo noroda. K. oobileoo Kalidasi (The Great poet of Indian people. To the anniversary of Kalidasa), Zvezda Vostoka, Teskent, 1956, II. S. I 1922.
4. A, M. Mervast—Syuzhct Shakuntaliv Malabarskoinarodnoi drame (The poet of Shakuntala in the popular drama of Malabar), Vostochnie Zapiski, L. 1947, Vol. I, P. 117-30.
5. Strophen Von Kalidasa. Z. D. M. G. Band 14 (1860) P. 261-68
6. T. Bloch-Dic Zeit Kalidasa's Z. D. M. G. Band 62 (1908), P. 671-76.
7. Vittore Pisham–Z. D. M. G. Band 105. (1955) P. 331-37.
8. Dr. Walter Ruben—Volmike and Kalidasa—J. O. I.B. Vol. VI No. 4. (June 1957) P. 233-45.

(३०) लाइफ ऐण्ड टाइम्स ऑफ कालिदास[१]–डॉ. वाल्टररूबें।

(३१) ए रीम्यू ऑफ कालिदास[२]–डॉ. वोजल।

(३२) लेस हिरोइन्स डि कालिदास एट बाइल्स डि शेक्सपीयर[3]–एम. सुमनेर।

(३३) इन्डियन विजडम[४]–मोनियर विलियम।

(३४) आर कालिदासाज् हीरोज मोनोगेमिस्ट्स[५]–(लेखक अज्ञात)।

(३५) सम नोट्स ऑन कालिदास[६]—ग्रियर्सन।

(३६) फर्दर प्रूफ ऑफ पोलिगेमी ऑफ कालिदासाज् हीरोज[७]–लेओनई।

(३७) टाइम ऐनेलसीज ऑफ ड्रामा ऑफ कालिदास[८]—(लेखक अज्ञात)

(३८) बिब्लिओग्राफी ऑफ कालिदासाज् प्लेज[९]—जैक्सन।

(३९) डी. अनेक्डोटेनल्विार कालिदास इन वल्लाल्स भोजप्रबन्ध[१०]– टी. एच. पैवी।

---

1. Bhawan's Journal. Vol. IV (Oct. 6, 1957) P. 33-35.
2. Dr. J. Ph. Vogel–A. Review of Kalidasa, lin wurdigung by A. Hillebrandt. Museum Vol. 29, No. 4 Jan. 1922, Leyden (Columns 80-85) (in Dutch).
3 Les Heroines de Kalidasa et Blles de Shakespeare. (Paris).
4. Indian Wisdom, P. 494.
5. Are Kalidas's Hiroes monogamists—J. A. S. B. XL VI, P. 39.
6. J. A. S. B. XL VIII (P. 32-38).
7. J. A. S. B. XL VI, P. 160.
8. J. R. O. S. XX P. 341-59.
9. J. A. O. S. XXII P. 237, XXIII, P. 937.
10. T. H. Pavie—Dic Anekdoten liber Kalidasa in Vallal's Bhoj-Prabondha J. A. 1954, P. 385-431.

(४०) ऐन इन्भेस्टिगेशन इन टु सम ऑफ कालिदासाज् म्यूज[१]—हैरिस।

(४१) साइकोलोजिकल इमेजिनरी इन कालिदास[२]—सी. डब्ल्यू. गुर्नर।

(४२) दि फॉर्चुन्स ऑफ कालिदास इन इटली[3]—कार्लो डेला कासा।

(४३) ए रीभ्यू ऑफ कालिदास एन वर्डीगङ्ग बाइ ए हिलेब्रांत[४]—डॉ.पी. एच. वोजिल।

---

1. Harres—An Investigation in to some of Kalidasa's Veiws. Evans Ville, Indian, 1884.
2. C. W. Gurner–Psychological Imagery in Kalidasa, J. R. A. S. B. Vol. IX Part I (1951 Dec.) P. 1-30.
3. East and West, Vol. VI Pt. 2 July 1955.
4. A. Review of 'Kalidasa, ein Wurdigung' by A. Hillebrandt. Dr. J. Ph. Vogel, Museum Vol. 29, No. 4, Jan. 1922, Leyden (Columns 80-85) (in Dutch).

(पञ्चम अध्याय)

(कालिदास के व्यक्तित्व, कवित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित निवन्ध) ।

व्यक्तितत्व और कवित्व

(क) विदेशी भाषाओं में—(भारतीय विद्वानों द्वारा लिखत)

(१) कालिदास हिज पोयट्री ऐण्ड माइन्ड[1]—ए. एस. चटर्जी ।

(२) कालिदासाज् वर्थ प्लेस[2]–चन्द्रशेखर चटर्जी ।

(३) दि वर्ड 'आत्मभू' ऐण्ड दि डेट ऑफ कालिदास[3]--पी. के. गोदे ।

(४) दि पाण्ड्याज् ऐण्ड दि डेट ऑफ कालिदास[4]—सी. वी. वैद्य ।

(५) कैन वी फिक्स दि डेट ऑफ कालिदास मार ऐक्युरेट्ली[5]–डी. आर. भाण्डारकर ।

---

1. M. R. XI alooned Calcutta.
2. Sanskrit Bharati (Eng. Supplement) 3 (1920) 4 (Oct. Dec.) P. 125-27.

   इस निवन्ब में सिद्ध किया गया है कि कालिदास का जन्म-स्थान सिगरी गोड्डा था और वे बंगाली थे ।
3. Annals of B. O. R. I. Poona, Vol. I July 1914.

   इस निवन्ध में शारदारञ्जन राय के इस सिद्धान्त का खण्डन किया गया है कि कालिदास अमरकोशकार से पहले थे ।

४. ,, Vol. II July 1920 P. 6 and 8. इसमें कालिदास को ख्रीस्तपूर्व प्रथम शताब्दी का सिद्ध किया गया है ।

५. ,, Vol, VII I1926-27, P. 200-204. इसमें कालिदास को षष्ठ शताब्दी का कवि सिद्ध किया गया है ।

(६) कौमुदी महोत्सव ऐण्ड कालिदास[1]-प्रो. डी. आर. मङ्कड़।

(७) निचुल एण्ड कालिदास[2]— ,, ,,

(८) दि फ्लोरा इन कालिदासाज लिटरेचर[3]-एम. भी. आप्टे।

(९) मोरल्स ऑफ कालिदास[4]—प्राणनाथ पण्डित।

(१०) कालिदास दि ग्रेट इन्डियन पोयट[5]—जे. एस. चक्रवर्ती।

(११) टौर्मेंटिव इनफ्लुऐंसेज ऑफ कालिदास[6]—कृष्ण शास्त्री।

(१२) कालिदासाज् सोशियोलोजिकल आइडियल्स—[7]डॉ. वी. वेङ्कटसुबय्या।

(१३) सम म्यूज ऑफ कालिदासाज् फिलॉसफी ऐण्ड रेलिजन्स[8]—सी. वेङ्कटरमैय्या।

(१४) कालिदास ऐण्ड शेक्सपीयर[9]—के. कृष्णआयङ्गर।

(१५) सोलसिज्म्स ऑफ शङ्कराचार्य ऐण्ड कालिदास[10]-डी.आर. भाण्डारकर।

(१६) कालिदासाज् रेलिजन ऐण्ड फिलॉसफी[11]—एम. टी. नृसिंहाचार्यर।

---

1. ,, Vol. XVI 1934-35, Parts I & II P. 155-57 इसमें यह सिद्ध किया गया है कि कालिदास 'कौमुदीमहोत्सव' की रचना से पहले के हैं।
2. ,, Vol. XX 1938-39, Parts III and IV P. 328-29, इसमें कालिदास को निचुल और दिङ्नाग का समकालीन सिद्ध किया गया है। दक्षिणावर्त्तनाथ और मल्लिनाथ भी ऐसा ही मानते हैं। डॉ. वनेश्वर पाठक ने भी अपने उपरूपक 'कालिदासः' में निचुल और दिङ्नाग को समकालीन दिखाया है। (प्रस्तुत ग्रन्थ का पृ. ६८ द्रष्टव्य है)।
3. ,, Vol. XXXII Parts 14 to 4, P. 76-84.
4. J. A. S. B. XL V P. 352.
5. J. M. S. (Journal of Mythic Society) VIII P. 261,72.
6. ,, IX P. 557.
7. ,, IX P. 95.
8. ,, IX P, 98. 101.
9. Journal of Mythic Society, IX, 1919, P. 151-157.
10. Solesisms of Shankaracharya and Kalidasa–D. R. Bhandarkar—I. A. XLI 214.
11. I. A. XXXIX, 1910, P. 236.

(१७) एसे ऑन दि सोशायटी इन दि टाइम ऑफ कालिदास[१]—(इन मलवती)

(१८) हिरोइन्स ऑफ कालिदास[२]—रामशास्त्री, अलमराजू।

(१९) कालिदास ऐण्ड भवभूति[३]—कृष्णमाचार्यर।

(२०) कालिदासाज् लभ फॉर डीयर्स[४]—रामाचार्य।

(२१) पोयट्री ऑफ कालिदास[५]—कृष्णस्वामी अय्यर।

(२२) नोट्स ऑन कालिदास[६]—एच. बी. भिड़े (H. B. Bhide)

(i) अर्ली रिफरेन्शेज— ,, ,,

(ii) कालिदास ऐण्ड भारवि— ,, ,,

(२३) कालिदास एट्ले आर्ट पोयटिक[७]—हरिचन्द शास्त्री।

(२४) वात्सायन ऐण्ड कालिदास[८]—एन. जी. मजुमदार।

(२५) कालिदास ऐण्ड कामन्दकी[९]—डॉ. पी. वी. काणे।

---

1. Essay on Society in the time of Kalidasa (in Malavati).
   आचार्य सीताराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'कालिदासग्रन्थावली' में उल्लिखित।
2. Sah—XXII P. 45.
3. Sah—XVIII.
4. Sah—XXIV (सहृदय a Sanskrit Journal of Madras)
5. I. A. I. P. 340.
6. I. A. XL XII. 1918, P. 246-255. (i) (P. 246-49).
   इस निबन्ध में बाण के हर्षचरित और सुबन्धु के वासवदत्ता में कालिदास के उल्लेख को दिखाया गया है।
   (ii) (P. 249-50) इसमें कालिदास और भारवि के कुछ श्लोकों में समता दिखाई गई है।
7. Kalidasa etl 'Art Poetique Del' Inde, Paris. Reviewed in J. R. A. S. 1981.
   Les citations des Kalidasa dens le Traites d' Alankara (J A. VII. No. I, II).
8. I. A. XL VII. 1918, P. 195.
9. Kalidasa and Kamandaki—I. A. XL, 1911, P. 236.

(२६) पोयट कालिदास ऐण्ड सी वोयाज[१]—(लेखक अज्ञात)।

(२७) कालिदास हिज फिलॉसफी ऑफ लभ[२]—बाल सुब्रह्मण्य अय्यर।

(२८) कालिदास ऐण्ड भास इन दि लाइट ऑफ वेस्टर्न क्रिटिसिज्म[३]—सी. आर. व्यङ्कटरमय्या।

(२९) कौटिल्य ऐण्ड कालिदास[४]—ए. शाह।

(३०) एस्ट्रोनोमिकल डेट इन दि ड्रामाज ऑफ कालिदास[५]—ए. शाह।

(३१) ऑन दि संस्कृत पोयट कालिदास[६]—भाऊदाजी।

(३२) कालिदासाज् फ्लावर्स[७]—सुब्बाराव शास्त्री।

(३३) वाज कालिदास ए वोटरी ऑफ कालिदास[८]—व्यङ्कटरमय्या।

(३४) कालिदास ऐण्ड भवभूति[९]—रामकृष्णराव।

(३५) कालिदास ऐण्ड पेन्टिंग[१०]—शिवराममूर्ति।

(३६) कालिदास ऐण्ड म्युजिक[११]–सरदार जी. एन. मजुमदार।

(३७) कालिदास ऐण्ड हुणाज[१२]–के. सी. चट्टोपाध्याय (क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय)

(३८) एडुकेशन ऐण्ड लर्निङ्ग ऐज डेपिक्टेड बाइ कालिदास, ऐण्ड इट्स फाइन आर्ट्स ऐज डेपिक्टेड इन कालिदास[१३]—डॉ भगवतशरण उपाध्याय।

---

1. Poet Kalidasa and Sea Voyage–Journal Dep. of letters Calcutta,
2. J. O. R. III 349.
3. Journal of Mythic Society XVII 125-42.
4. ,, ,, ,, Vol. X 1919-20, P. 303 XI 1921, P. 138-45.
5. Proceedings—All India Oriental Conference 1924.
6 J. B. R. A. S. VI 1920.
७. भारती
८. भारती ५/३८७
९. ,, ३/१५
10. J. O. R. VII 357.
11. Annals, B. O. R. I. 1925-26, VI.
12. Journal of Indian History XV Pt. I.
13. Journal B. H. U. I. VI-3.

(३९) वीमेन कैरेक्टर इन कालिदासाज् ड्रामाज[1]—डॉ. वी. राघवन् ।

(४०) स्टडीज इन कालिदास[2]–सी. कुन्हनराजा ।

(४१) लिंग्विस्टिक एवरेशन्स इन् कालिदासाज् राइटिङ्गस[3]–तारापद चौधुरी।

(४२) ए न्यू अप्रोच टु कालिदास[4] –डॉ. वी. वेङ्कटाचलम् ।

(४३) कालिदास[5]—डॉ. वी. राघवन् ।

(४४) कालिदास कमेमोरेशन स्टाम्प्स—इन्डियन पोस्ट्स ऐण्ड टेलीग्राफ्स ।

(४५) कालिदास ऐण्ड हिज होम[6]—हरप्रसाद शास्त्री ।

(४६) होम ऑफ कालिदास[7]—एन. जी. मजुमदार ।

(४७) कालिदास[8]—जायसवाल ।

(४८) कालिदास[9]—प्रो. के. बी. पाठक ।

(४९) कालिदास[10]—चक्रवर्ती ।

(५०) कालिदास[11]—वी. सी. मजुमदार ।

(५१) कालिदास[12]—जे. जे. मोदी ।

---

1. Oriental Research Madras University IV. 1939-40.
2. Annals, Oriental Research Madras University V Pt. 1940-41.
3. Linguestic Aberrations in Kalidasa's Writings, Reprinted from the Journal of the Bihar Research Society XXXVI, Parts 3-4, Patna 1950, Sept. & Dce.
4. The Vikram Journal of Vikram University, Kalidasa Special Number 1970, Ujjain.
5. Talks, Broad casts of A. I. R.
6. J. B. O. R. S. Vol. I 1915, P. 197-212, I. A., XL VII P. 264, I. A. XI P. 292.
7. I. A. XL VII P. 264.
8. I. A. XL P. 265.
9. J. B. R. A. S. XIX 35.
10. J. R. A. S. (1904) P. 158. (1903) P. 183.
11. J. R. A. S. (1909).
12. Asiatic papers.

(५२) दि ग्रेट इन्डियन पोयट[1]—जे. बी. चक्रवर्ती।

(५३) दि लाइफ ऑफ कालिदास[2]—आर. ए. नरसिंहाचार्यर।

(५४) कालिदास[3]—शेषगिरि शास्त्री।

(५५) बर्थ प्लेस ऑफ कालिदास[4]—आनन्द कौल।

(५६) कालिदास[5]—रङ्गस्वामीशास्त्री।

(५७) विक्रमथ्योरी ऑफ कालिदासाज् डेट[6]—के. जी. शङ्कर अय्यर।

(५८) डेट ऑफ कालिदास[7]—चक्रवर्ती।

(५९) डेट ऑफ कालिदास[8]—बी. सी. मजुमदार।

(६०) यशोधर्मन् थ्योरी ऑफ कालिदास[9]—के. जी. शङ्कर अय्यर।

(६१) कालिदास[10]—जगोपन्तालू।

(६२) डेट ऑफ कालिदास[11]—डी. आर. भाण्डारकर।

(६३) डेट ऑफ कालिदास[12]—प्रबोधचन्द्र सेनगुप्त।

(६४) कालिदास—आर. डी. करमरकर, कर्नाटक युनिवर्सिटी, धारावाड़, व्याख्यान माला-४

---

1. Journal of Mythic Society VIII P. 261.
2. ,, ,, VIII P. 273.
3. I. A. I 340
4. Journal of Indian History VIII 345.
5. Journal of Mythic Society XVI 98.
6. ,, ,, 1919-20, XI 188-90.
7. J. R. A. S. (1891) 330.
8. J. B. O. R. S. II 388., J. R. A. S. B. P. 731-39.
9. J. B. O. R. S. VII 60. इस निबन्ध में यह सिद्ध किया गया है कि कालिदास वराहमिहिर के समकालीन हैं, अतः ४८७ ई० से पूर्व के नहीं हैं।

१० भारती ८/१९

11. Annals B. O. R. I. VIII P. II.

१२ साहित्यपरिषद् पत्रिका (Bengali) XL I No. 2.

(६५) दि डेट ऑफ कालिदास[१]—डी. वी. केतकर।

(६६) दि फ्लोरा इन कालिदासाज् लिटरेचर[२]—विमलाचरण देव।

(६७) डेट ऑफ कालिदास[3]—के. जी. शङ्कर।

(६८) दि कौमुदी महोत्सव ऐण्ड दि डेट ऑफ कालिदास[४]—दशरथ शर्मा।

(६९) ईकोनॉमिक ज्योग्रोफी ऑफ कालिदास[५]—कृष्णदेव उपाध्याय।

(७०) कालिदास[६]—एस. के. दे.।

(७१) दि हिस्टोरिकल बैकग्राउन्ड ऑफ दि वर्क्स ऑफ कालिदास[७]—सी. कुन्हन राजा।

(७२) दि म्युजिकल एलिमेण्ट इन कालिदास[८]—टी. एल. व्यङ्कटरामैयर।

(७३) दी आर्टिस्ट्री ऑफ कालिदास[९]—आर. रङ्गाचारी।

(७४) कालिदास[१०]—डॉ. एस. एन. दासगुप्ता।

(७५) दी एज ऑफ कालिदास[११]—के. जी. शङ्कर ऐयर।

(७६) दि फॉर्मेटिव इन्फ्लुएंश ऑफ कालिदास[१२]—ए. आर. कृष्ण शास्त्री।

(७७) कालिदासाज् सोशल आयडियल्स[१3]—डॉ. ए. वेङ्कट सुब्बैया।

---

1. D.V. Ketkar—The Date of Kalidasa, Annals of the B. O. R. I. Vol. XXXVI Part 1-2, P. 150-56.

   इस निवन्ध के अनुसार कालिदास का समय २४-३०० ई० है।
2. The Flora in Kalidasa's Literature—Part 3-4, P. 352-57.
3. I. H. Q. Vol. I. 1925 P. 309-16.
4. ,, Vol. X 1934, No. 4. P. 763-66.
5. ,, Vol. XIII No. 2, P. 521-26.
6. ,, Vol. XVI 1940, P. 385-422.
7. ,, Vol. XVIII 1942, P. 128-36.
8. ,, Vol. IV 1930, Pt. 4. P. 351-365.
9. J. O. R. Madras, Vol. XVII 1949, Pt. 4, P. 218-227.

१०. प्राच्यवाणी. Vol. II 1945, Nos. 1 and 2, P. 12-19.

11. Q. J. M. S. IX 1918-19, (Oct. Issue) P, 17-56.
12. ,, ,, P. 57-62.
13. ,, ,, P. 96-98.

(७८) दि डेट ऑफ कालिदास[1]—धनपति बनर्जी।

(७९) एम. एम. एच. पी. शास्त्रीज् डेट फॉर कालिदास[2]—के. जी. शङ्कर।

(८०) दि एज ऑफ कालिदास[3]—के. जी. शङ्कर अय्यर।

(८१) डेट ऑफ कालिदास[4]—प्रो. सेन गुप्ता, कलकत्ता युनिवर्सिटी।

(८२) ऑन सम ईमिनेंट कैरेक्टर्स इन संस्कृत लिटरेचर कालिदास[5]—एम. शेषगिरि शास्त्री।

(८३) कालिदास, श्रीहर्ष ऐण्ड चन्द[6]—काशीनाथ त्र्यम्बक तैलङ्ग।

(८४) कालिदास ऐण्ड हुणाज ऑफ आक्सस वैली[7]—के. बी. पाठक।

(८५) कालिदास ऐन्ड कामन्दक[8]—ननीगोपाल मजुमदार (एन. जी. मजुमदार)।

(८६) मिस्टर डी. बनर्जीज् डेट फॉर कालिदास[9]—के. जी. शङ्कर।

(८७) कालिदासाज् इन्डिया[10]—डॉ. ए. सी. बोस।

(८८) कालिदास ऐन्ड वेदिक रिभाइभल[11]—डॉ. ए. सी. बोस।

---

1. ,, X 1919-20, P. 75-96.
2. ,, VIII April 1921, P. 232-37.
3. ,, ,, ,, ,, P. 278-92,
4. 'Ancient Indian Chronology' Indian Antiquary (I. A.) Vol. I. 1872.
   इसमें कालिदास का समय ५४६ ई० सिद्ध किया गया है।
5. Ancient Indian Chronology' Indian Antiquary (I. A.), Vol. I. 1872.
   इसमें नलोदय, ज्योतिर्विदाभरण, श्रुतबोध, शृङ्गारतिलक, सेतुबन्ध, वृत्तरत्नावली और हास्यार्णव के रचयिता की समीक्षा गई है और यह सिद्ध किया गया है कि ये कालिदास की रचनाएँ नहीं हैं।
6. I. A. Vol. III, 1874, P. 81-83.
7. ,, Vol. XLI, 1912, P. 265.
8. ,, Vol. XLI, 1917 P. 220.
9. ,, Vol. LI 1922, P. 192-98.
10. ,, Vol. III (Jan. 13. 1957). P. 25-29.
11. Bhavan's Journal, Vol. III (March 4, 1957), P. 65-67.

(८९) कालिदास दि सुप्रीम पोयट ऑफ लभ[१]—के. चन्द्रशेखरन ।

(९०) दि भ्वायस आफ दि फौरेस्ट[२]—रवीन्द्रनाथ टैगोर ।

(९१) कालिदास ऐन्ड शेक्सपीयर[3]—रणजीत शाहनी ।

(ए स्टडी इन कन्ट्रास्ट्स)

(९२) डेट आफ कालिदास[४]—पं० क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय ।

(९३) टु कालिदास[५] (ऐन अप्रीसियेशन आफ कालिदास)—रवीन्द्रनाथ टैगोर ।

(९४) कालिदास ऐण्ड दि गुप्ता किंग्स[६]—एच. वी. भिड़े ।

(९५) साइकोलोजिकल स्टडी आफ कालिदासाज् उपमाज[७]—पी. के. गोदे ।

(९६) कालिदास ऐण्ड चन्द्रगुप्त सेकण्ड[८]—एस. राय ।

(९७) क्रोनोलोजिकल आर्डर आफ कालिदासाज् वर्क्स[९]—आर.डी. करमरकर ।

(९८) ए स्टडी आफ कालिदास इन रिलेशन टु पोलिटिकल सायन्स[१०]—के. बालसुब्रह्मण्य ऐयर ।

(९९) डेट आफ कालिदास[११]—रामकुमार चौबे ।

---

1. Bhavan's Vol. V (Dec. *14*, *19*58) P. 35-38.
2. Modern Review Calcutta, 1920.
   इस निबन्ध में कालिदास की रचनाओं की आलोचनात्मक प्रशस्ति है ।
३. मञ्जूषा VII P. 25-3*1*, (Reproduced from Statesman Calcutta).
4. Allahabab University, studies Vol. II *1926*, P. *79-169*.
   इस निबन्ध में कालिदास को अश्वघोष से पहले, खीस्तपूर्व प्रथम शताब्दी में सिद्ध किया गया है ।
5. Modern Review Calcutta, June 1932.
6. Proceedings All India oriental confrence, Vol. I. (1919), P. I ii of the Summeries,
7. ,, ,, ,, ,,
8. Proceeding of Oriental conference, P. I. IX of the summ.
9. ,, Vol. II P. 239-47 (1922).
10. ,, Vol. III P. I. (1924).
11. ,, Vol. IV 1926 P. 38, Vol. I Summeries.

(१००) कौमुदी महोत्सव ऐण्ड डेट ऑफ कालिदास[1]—दशरथ शर्मा ।

(१०१) कालिदास बिलौंग्स टु आन्ध्रदेश[2]—पं. गोविन्दाचार्य स्वामी ।

(१०२) विक्रम ऐण्ड कालिदास, देयर आइडेन्टिफिकेशन[3]—एस. एन. झारखण्डी ।

(१०३) कालिदासाज् नौलेज ऑफ पुराणाज[4]—कुन्हनराजा ।

(१०४) आदिकवि वाल्मीकि एण्ड हिज इन्फ्लुएंश ऑन कालिदास[5]—श्रीमती अञ्जलि मुखोपाध्याय ।

(१०५) दि श्री कालिदासाज[6]—एन. शिवराम शास्त्री ।

(१०६) एस्ट्रोनोमिकल टाइम इन्डिकेशन इन कालिदास[7]—पी. सी. सेनगुप्ता ।

(१०७) दि एज ऑफ कालिदास[8]—प्रो. शारदारञ्जन राय ।

(१०८) ऑथरशिप ऑफ नलोदय[9]—ए. एस. आर. ऐयर ।

(१०९) कालिदास ऐण्ड दि गुप्ताज[10]—मनमोहन चक्रवर्त्ती ।

(११०) दि डेट ऑफ कालिदास[11]— ,, ,,

(१११) कालिदास ऐण्ड हिज कन्टेम्पोरेरीज इन ए तिब्बेतन रेफरेंश[12]—डॉ. एस. सी. सरकार ।

---

1. Proceedings of All India Oriental Conference VIII, 1935.
2. ,, ,, ,,
3. ,, XII, 1943-44, P. 520-23.
4. ,, XIII, 1946, P. 115-22.
5. ,, ,, P. 123-40.
6. ,, XV 1949.
7. J. R. A. S. B. Vol. XI 1945, P. 14-23 (Modern Series).
8. ,, Vol. IV 1908, (New Series) P. 347-46.
9. J. R. A. S. 1925, Vol. LVII P. 263 ff.
10. J. R. A. S. B. Vol. XXXVI, 1904. P. 138-61.
11. ,, Vol. XXXV, 1903, P. 363.
12. J. G. N. Jha Research Institute Allahabad, Vol. I. P. 403-16.

(११२) अर्लिएस्ट डेट ऑफ कालिदास फ्रॉम इरैनियन सोर्शेज[1]—सरदार एम. वी. किबे।

(११३) कालिदासाज ट्रीटमेंट ऑफ नेचर[2]—के. आर. पिशारोती।

(११४) कालिदासाज ट्रीटमेंट ऑफ लभ[3]— ,,

(११५) दि डेट ऑफ कालिदास[4]—डॉ. भगवतशरण उपाध्याय।

(११६) कालिदास ऐण्ड एस्ट्रोनोमी[5]—डॉ. सी. कुन्हन राजा।

(११७) आन सम एन्शिएण्ट प्लेस नेम्स इन कालिदास[6]—डॉ. भगवतशरण उपाध्याय।

(११८) कालिदास ऐण्ड संस्कृत बुद्धिस्ट लिटरेचर[7]—डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल।

(११९) आर्ट एंभिडेंश इन कालिदास[8]— ,, अग्रवाल

(१२०) कालिदास ऐण्ड म्युजिक[9]—के. वी. रामचन्द्रन।

(१२१) कालिदास हिज एज[10]—म. म. हरप्रसादशास्त्री।

---

1. J. G .N. Jha Research Institute Allahabad, Vol. IV, P. 181 ff.
2. ,, ,, ,, ,, ,, Vol. P. 217 ff.
3. ,, ,, ,, ,, ,, Vol. III P. 43 ff.
4. Journal of the U. P. Historical Society Vol. XIV (1941), Pt. II, P. 23-35.

   (इस निबन्ध में कालिदास को गुप्तकालीन स्वर्णयुग (४०० ई०) का कवि सिद्ध किया गया है)।
5. Journal of the U. P. Historical Society, Vol. XV (1942) Pt. II, P. 5-23.
6. Journal of the U. P. Historical Society, Vol. XVI (1944) Pt. II, P. 4-26.
7. Journal of the U. P. Historical Society, Vol. XVI (1944) Pt. II, P. 4-26.
8. Journal of the U. P. Historical Society, Vol. XVII (1949) Pt. I P. 81-93.
9. Journal of the U. P. Historical Society, P. 94-101.
10. J. B. R. S. Vol. II (1916) P. 31-44.

    इस निबन्ध में शास्त्री जी ने कालिदास का समय पञ्चम शताब्दी का उत्तरार्द्ध और षष्ठ शताब्दी का पूर्वार्द्ध सिद्ध किया है।

(१२२) दि डेट ऑफ कालिदास ऐण्ड इट्स रिप्लाई[१]—बी. सी. मजुमदार ऐण्ड म. म. हरप्रसाद शास्त्री।

(१२३) दि लौस्ट रिंग ऑफ शाकुन्तल, इज इट ए ग्रीक रेमिनिसेंश[२]—प्रो. सुरेन्द्रनाथ मजुमदार शास्त्री।

(१२४) कालिदास इन ए कश्मीर मैनुस्क्रिप्ट्स[३]—ए. बनर्जी शास्त्री।

(१२५) कालिदास, हाल, सातवाहन ऐण्ड चन्द्रगुप्त सेकण्ड[४]—डॉ. श्रीधर वासुदेव सोहनी।

(१२६) विहार इन कालिदासाज् वर्क्स[५]—प्रो. राधाकृष्ण चौधुरी।

(१२७) कालिदास ऐण्ड गुप्ता आर्ट[६]— ,, ,,

(१२८) कालिदासाज् इन्डेटेडनेस टु वाल्मीकि[७]—प्रो. जे. जे. पाण्डेय।

(१२९) कालिदास ऐण्ड दि हरिवंश[८]—प्रो. एस. पी. भट्टाचार्य।

(१३०) दि थ्री वर्ल्ड्स ऑफ कालिदास[९]—डॉ. विश्वनाथ भट्टाचार्य।

(१३१) कञ्चुकिन् इन कालिदासाज् ड्रामाज[१०]—प्रो. कालीकुमार दत्त।

(१३२) एडुकेशन ऐण्ड कल्चर इन कालिदास[११]—पं. कृष्णचन्द्र आचार्य।

---

1. J. B. R. S. Vol. II P. (1916) 388-91.
2. ,, Vol. VII (1921) P. 96-99.
3. ,, Vol. XI (1925).
4. ,, Vol. XXXXI (June 1955) P. 229-44.
5. ,, Vol. XXXXI, (Sept. 1955).
6. ,, Vol. XLII (1956) P. 36-46.

   इस निबन्ध में कालिदास की रचनाओं में गुप्त कालीन कला एवं संस्कृति की अभिव्यक्ति दिखाई गई है और उसके आधार पर कालिदास को गुप्त कालीन सिद्ध किया गया है।
7. Journal of the Oriental Institute Baroda, Vol. I No. 4 (June 1952), P. 343-45.
8. Journal of the Oriental Institute Baroda, Vol. VII, No. 3 (March 1958) P. 182-95.
9. The Vikrama (Kalidasa Special Number 1959), P. 39-47.
10. ,, ,, ,, ,, P. 49-55.
11. ,, ,, ,, ,, P. 57-64.

(१३३) कालिदासाज् आइडियल ऑफ दि किंग ऐण्ड ऐडमिनिस्ट्रेशन[1]—पं. के. एस. शुक्ल।

(१३४) सोशल एडुकेशन ऐण्ड कल्चर इन दि वर्क्स ऑफ कालिदास[2]—डॉ. बी. एस. अग्निहोत्री।

(१३५) किंग ऐण्ड ऐडमिनिस्ट्रेशन ड्युरिंग दि टाइम ऑफ कालिदास[3]—पं. राधामोहन महापात्र।

(१३६) कालिदासाज् बर्थ प्लेश[4]—चन्द्रशेखर चटर्जी।

(१३७) कालिदास[5]—डॉ. राजेन्द्र वर्मा।

(१३८) कालिदास[6] (ऐन आर्टिस्ट्स फैन्शी)—कृष्णा दास।

(१३९) दि मङ्गलाष्टक ऑफ कालिदास[7]—कृष्णदेव उपाध्याय।

(१४०) रीभ्यू ऑफ इन्डिया इन कालिदास' बाइ डॉ. भगवतशरण उपाध्याय[8]—जी. सी. झाला।

(१४१) रीभ्यू ऑफ 'ए कन्कोर्डेन्श ऑफ कालिदासाज् पोएम्स' बाइ टी. के. रामचन्द्र ऐयर ऐण्ड एडिटेड बाइ डॉ. वी. राघवन्[9]—जी. सी. झाला।

(१४२) रीभ्यू ऑफ 'न्युमिस्मेटिक पैरलल्स ऑफ कालिदास' बाइ सी. शिवराममूर्ति[10]—जे. एन. बनर्जी।

---

1. The Vikrama (Kalidasa Special No.), P. 65-72.
2. The Vikrama (Kalidasa Special No.), P. 73-81.
3. ,, ,, ,, P. 83-89.
4. Sanskrit Bharati (Eng. Supplement) (1920) 4 (Oct. Dce.) P. 125-27.
5. The Vikrama, 1959 (Kalidasa Special Number) P. 91-96 (A poem on Kalidasa in Six parts,) by Dr. Rajendra Verma, Prof. of English, Government Hamidia College, Bhopal).
6. Journal of Oriental Research, Madras, Vol. V. 1931.
7. Indian Historical Quarterly I, P. 521-26.
8. Journal Royal Asiatic Society, Bombay, Vol. 26, Pt. I (1950Dce.) P. 107-111.
9. ,, ,, ,, ,, ,, Vol. 28. Pt. I (1953) P. 61.
10. J. R. A. S. Bengal, V. 14, No. 2, P. 146 (1948).

(१४३) ए रीभ्यू ऑफ 'कालिदास' ऑफ प्रोफे. आर. डी. करमरकर[1]—ए. डी. पुसलकर।

(१४४) रीभ्यू ऑफ 'कालिदास लेक्सिकोन' ग्रन्थ १, भाग १, बाइ ए. शार्पे[2]—डॉ. वी. राघवन।

(१४५) रीभ्यू ऑफ 'कालिदास-हिज पीरियड, पर्सनॉलिटी ऐण्ड पोयट्री'[3] बाइ के. एस. रामस्वामी शास्त्री[4]—वी. आर. आर. दीक्षितार।

(१४६) ए रीभ्यू ऑफ 'कालिदास-एस्टडी' बाइ प्रो. जी. सी. झाला[5]—सी. आर. देवघर।

(१४७) ए रीभ्यू ऑफ 'स्कुल्पचर इन्स्पायर्ड बाइ कालिदास' बाइ शिवराममूर्ति[6]—सी. आर. देवघर।

(१४८) रीभ्यू ऑफ 'इपिग्राफिकल ईकोनॉमिक्स ऑफ कालिदास[7]—(सी. आर, देबघर)।

(१४९) रीभ्यू ऑफ इन्डिया इन कालिदास बाइ भगवतशरण उपाध्याय[8]'—सी. आर. देवघर।

(१५०) रीभ्यू ऑफ 'न्युमिस्मेटिक पैरलल्स ऑफ कालिदास' बाइ शिवराममूर्ति[9] आर. एन. गैधनी।

(१५१) लिजेन्ड ऑफ कालिदास प्रीजर्व इन उज्जैन[10]—(लेखक अज्ञात)।

---

1. Annals of B. O. R. I. Poona, Vol. 40, Pt. I-IV, P. 172-*177*.
2. Journal of Oriental Research, Madras, Vol. XXIV (1957). P. *116*-17.
3. A. B. O. R. I. Vol. XV P. *111-14*.
4. ,, ,, P. 137-38.
5. ,, Vol. XXIV, Parts 3 and 4 P. 248.
6. ,, ,, ,, P. 248-49.
7. ,, Vol. XXV. *1944*, Pt. 4, p. 260.
8. A. B. O. R. I. Vol XXIX 1949. Parts 1 and 4, P. 331.
9. ,, ,, ,, ,, P. 336.
10. J. O. A. S. XXII P. 331.

(ग) भारतीय भाषाओं में लिखित पत्रिकाओं में—

(संस्कृत में)—

(१) अलङ्कारग्रन्थेषु कालिदासप्रियता[१]—डॉ रसिकबिहारी जोशी।

(२) कालिदासीयसाहित्ये संस्कृतिः शिक्षा च[२]—पं. वी. जी. नम्बूदिरी।

(३) भारतीयकलायाः संस्कृतेश्च प्रेरकः कालिदासः[३]—पं. रुद्रदेव त्रिपाठी।

(४) कालिदासो भवभूतिश्च[४]—के. ए. गणपति शास्त्री।

(५) कालिदासस्य जन्मभूः[५]—पं बालकृष्ण भट्ट शास्त्री, टेहरी।

(६) भारतीय कालिदासस्य[६]–तिलकधारी पाण्डेय।

(७) विक्रमादित्यकालिदासयोः सम्बन्धः[७]—पण्डिता क्षमा देवी।

(८) कालिदासस्य प्रकृतिवर्णनम्[८]—रामचन्द्रशास्त्री।

(९) कविकुलगुरुः कालिदासः[९]—पं. वासुदेव शास्त्री वागवाडीकर।

(१०) कालिदासाभिमतं राजतन्त्रम्[१०]—प्रेमशङ्कर मिश्र।

---

१. विक्रम, १९५९ (कालिदास विशेषाङ्क), पृ. १-४।

२. ,, ,, ,, पृ. १७-२३।

३. ,, ,, ,, पृ. २५-२८।

४. संस्कृतम्, अङ्क १४, वर्ष ११-४-४४, पृ. ३-४।

,, ,, ,, १८-४-४४, पृ. ३-४।

,, ,, ,, २५-४-४४, पृ. ३।

,, ,, ,, २-५-४४, पृ. ३-४।

,, ,, ,, ९-५-४४, पृ. ३-४।

,, ,, ,, ३१-५-४४, पृ. ४-५।

५. ,, १५ ,, ५-१२-४४।

६. ,, १७, १७ दिस० ४६।

७. ,, १९, २८, ,, जून ४६, पृ. ६-८।

८. भारती, सं. २००९, ७।

९. ,, सं. २०११/४, पृ. ८२-८६। सं. ५, पृ. १०३-६।

१०. ,, सं. २०१२/२, पृ. ३६-३७।

(११) कविः कालिदासः[१]—चारुदेव शास्त्री, दिल्ली।

(१२) कालिदाससमये चित्रकला[२]—अध्यापक साबुराम।

(१३) कालिदासस्य प्रतिभा[३]—एस. टी. जी. वरदाचार्य।

(१४) कालिदासभवभूती[४]—स्व. द्विजेन्द्रलाल राय (संस्कृत अनुवाद)।

(१५) कालिदासकृतिषु शृङ्गाररसः[५]—के. एस. कृष्णन्।

(१६) कालिदासभवभूती[६]—टी. रामचन्द्र शिरोमणि।

(१७) कालिदासः[७]—सुदर्शन शर्मा साहित्यशिरोमणि, कुम्भकोण।

(१८) कालिदासकालविमर्शः[८]— ,, ,,

(१९) कालिदासस्य ग्रीष्मवर्णनम्[९]—अलखनिरञ्जन पाण्डेय।

(२०) कालिदासस्य प्रकृतिनिरीक्षणपरिपाटी[१०]—श्रीशिवदत्त शास्त्री, काशी।

(२१) कालिदासकाव्ये नारी[११]—प्रभुदत्त शास्त्री।

(२२) काव्येषु माघः कविकालिदासः[१२]— ,,

(२३) कालिदासस्य कुसुमप्रियत्वम्[१३]—श्रीवाणी सिंह।

---

१. भारती, सं. ६, पृ. १२७-१३१।
२. ,, सं. २०१३-११, पृ. २५६-५७।
३. मञ्जूषा, १०/४, पृ. १०२-३।
४. ,, ६/४, पृ. ५३-५७ ६/९, पृ. ७३-८१ १०/१२, पृ. १४२-७/७ (५२-५३) पृ. ३१-४१, पृ. ७०-७३, पृ. ११५-२०, पृ. १७९-८२।
५. उद्यानम्, ३ (१९२९-३०), पृ. ३५-३७।
६. ,, ८, पृ. १८-२०।
७. सूर्योदयः, (६ सं. १९८७), ९-१०, पृ. १७२।
८. ,, , ७ (सं. १९८८), १, पृ. ६-८।
९. सारस्वतीसुषमा, ४ (सं. २००६), २, पृ. ४३-५३।
१०. ,, १० (सं. २०१२) पृ. १६४-६८।
११. ,, ,, पृ. १६९-७३।
१२. संस्कृतसाहित्यपरिषत्पत्रिका, १३ (१९३०-३१), ९, पृ. २८७-९०।
१३. ,, २८ (१९४५-४६), १०, पृ० ७१-७२। ३१ (१९४८-४९), पृ० ६९, । पृ० १२१, पृ० १३७।

(२४) भवभूतिकालिदास तत्त्वम्[१]—श्री वाणी सिंह

(२५) कविकालिदासः[२]—विद्यावाचस्पति पं. रमापति शास्त्री।

(२६) कौशलं कालिदासस्य[३]—श्रीपण्ढरीना शास्त्री।

(२७) श्रीकालिदासः[४] (कविता)—मुदिगोडज्वालापतिलिङ्ग।

(२८) कालिदासकृतंगङ्गाष्टकम्[५]—वृद्धिचन्द्र शर्मा शास्त्री, जयपुर।

(२९) कालिदासचर्चा[६]—ईश्वरदत्त शास्त्री।

(३०) कविकुलगुरुः कालिदासः[७]—बलराम त्रिपाठी।

(३१) कालिदासीयं दर्शनम्[८]—टी. बी. रामचन्द्र दीक्षितार।

(३२) कालिदासरसोपज्ञता[९]—गोपालकृष्ण शास्त्री।

(३३) महाकविकालिदासः[१०]—देवीदास बापूदेव धर्माधिकारी।

---

१. संस्कृतसाहित्यपरिषत्पत्रिका ३२ (१९४९-५०), पृ० १०-११। २, पृ० २०-२४। ३, पृ० २९-३०।

२. सन्देशः, ४ (१९४३), १ पृ० ४-५। इस निबन्ध में शकुन्तला के प्रतिकूल दैव रहस्योद्घाटन किया गया है।

३. ,, ,, ,, पृ० ११।

४. भारती, सं. २०१०, ९।

५. ,, सं. २००९, ५। इस लेख में 'गङ्गाष्टकम्' को कालिदास की रचना सिद्ध किया गया है।

६. सन्देशः, ६ (१९४५) पृ. ४८-५१।

७. ,, ४ (१९४४), १० पृ. ८६-८८।

8. J. O. R. Madras, Vol. 1, 1927. Vol. 2, 1928, P. 65-68.

इसमें जीव का स्वरूप-निरूपण कालिदास के अनुसार किया गया है। लेखक ने इस प्रसङ्ग मे रघुवंश के 'रसान्तराण्येकरसं यथा' इत्यादि श्लोक (१०/१७) उदाहृत किया है।

९. महाराज सं. पाठशाला-पत्रिका मैसूर, सम्पुट ४ (१९२८), १ पृ. १७-२४।

१०. भवितव्यम्, नागपुर वर्ष ३, अङ्क १०, पृ. ३-४।

(३२) कालिदासकाव्ये भारतीयराजधर्मः[६]—पं० रामप्रियदेवशास्त्री, प्रयाग।
(३३) कालिदासविषये[७]—वेङ्कटरमण अय्यर।
(३४) खण्डकाव्येषु कालिदासः[८]—सुरेन्द्रमोहन।
(३५) कालिदासस्य योषिद्वर्णनम्[९]—चारुचन्द्रचौधरी।
(३६) कालिदासश्च भवभूतिश्च[१०]—पं० रा. च. वि. कृष्णमाचार्य।
(३७) श्रीकालिदासचरितसंग्रहः[११]—महालिङ्गशास्त्री।
(३८) कालिदासः[१२]—पं० हजारीलालशर्मा।
(३९) कालिदासविषयको विमर्शः[१३]—श्रीकृष्णदत्त ओझा।
(४०) कालिदासस्याविर्भावकालः[१४]—उडुपिवेङ्कटकृष्णराय।
(४१) कालिदाससंस्तवः[१५]—पं० रामेश्वरप्रसाद शास्त्री, राजस्थान।
(४२) श्री कालिदासः[१६] (गजल गीतिः)—विद्याभूषण गणेशराम।

---

६. संस्कृतरत्नाकरः, काशी, वर्ष १६ (सं० २००८) ६, मार्गशीर्ष।
७. ,, ,, वर्ष १७ (सं० २००९) ९।
८. संस्कृतभारती, काशी ३ (१९२०), २ अप्रिल–जून, पृ० ६७–७५। ३ जुलाई सितम्बर, पृ० ११६–२५
९. संस्कृतभारती, काशी ३ (१९२०), २ अप्रिल–जून, पृ० ८५।
१०. सहृदया, १८, १, पृ० १२। १९२० २, अप्रिल, पृ० ३४।
११. मञ्जूषा, ४ (४९-५०) ९। इसमें कालिदासविषयक अनेक जनश्रुतियों का संग्रह है।
१२. सूर्योदयः, ६ (सं०१९८७), ९–१०। इसमें भोजराजकुमारी विद्यावती के साथ कालिदास के विवाह और ग्रन्थत्रय की रचना का वर्णन है।
१३. सूर्योदयः, ७ (सं० १९८८), ३। इसमें यह सिद्ध किया गया है कि कालिदास विक्रमादित्य के समकालीन थे, भोज के नहीं।
१४. मञ्जूषा, १३ (१९५८–५९), ५ पृ० १०२–६। इसमें कालिदास को शुङ्गराज अग्निमित्र का सभाकवि सिद्ध किया गया है।
१५. भारती, सं० २०१२, २, पृ० २७।
१६. भारती, सं० २०१३, २, पृ० १। इसमें कालिदास के काव्यगुणों का वर्णन है।

(४३) कालिदासस्यसूक्तयः[१]—विद्याभूषण गणेशराम।

(४४) कालिदासश्च कुशलानुयोगश्च[२]—उडुपि वेङ्कटकृष्णराय।

(४५) महाकविकालिदासस्य विषये यत्किञ्चित्[३]—श्री दुर्गादासगोस्वामी।

(४६) महाकविः कालिदासः[४]—लक्ष्मणशास्त्री. नागौर (मारवाड़)।

(४७) महाकविकालिदासविषयेकाऽपि किंवदन्ती[५]—रतनलालमिश्र, नागौर (मारवाड़)

(४८) कालिदासीयमन्तिमैतिह्यम्[६]—नारायणशास्त्री।

(४९) कालिदासः[७]— ,,

(५०) केचन कालिदासीया विशिष्टाः शब्दाः[८]—एम० पी० के० राव।

(५१) कालिदासभारती—डा० रेवाप्रसाद द्विवेदी (सागरिका एवं विक्रम विशेषांक।

(५२) कालिदाससाहित्ये योगदर्शनम्—डा० रेवाप्रसाद द्विवेदी (सागरिकापत्रिका)

(५३) कालिदासस्य शाश्वतसन्देशाः—डा० वनेश्वरपाठकः (विक्रमविशेषाङ्कः उज्जैन)

(५४) काव्यशास्त्री कालिदासः—डा० वनेश्वरपाठकः (सरस्वती सुषमा, सम्पूर्णानन्द सं० विश्वयिद्यालय, वाराणसी, वि० सं० २०३५)

---

१. मञ्जूषा, ४ (सित० ४९-अगस्त ५०, १ पृ० २९–३२)। रघुवंश और कुमारसम्भव से उद्धृत।

२. संस्कृत साहित्यपरिषत्पत्रिका, ६ (१९२३–२४), ४ पृ० १४७–५०।

३. ,, (१९४०–४१), ८ पृ० ७२–७६। १०, पृ० १०५-१०। ११, पृ० १४०–४४।

४. भवितव्यम्, ३ अंक २० (१-८-५३) पृ० ३–४।

५. संस्कृतरत्नाकरः (काशी), १६ (वि० सं० २००८, भाद्रपद) ४, पृ १५–१६

६. संस्कृतभारती, ३ (१९२०), १ (जून--मार्च), पृ० ६—१०।

७. सहृदया, १९, २, पृ० ३३--४८। ३, पृ० ५४—५५।

८. संस्कृतम्, १९ (२८-१२-४८)।

(५५) कालिदासस्य युद्धविज्ञानम्—डा० वनेश्वरपाठकः (सरस्वती सुषमा, सम्पू० सं० वि० वाराणसी वि० सं० २०३६ ई०)

(५६) कालिदासस्य कुसुमानि—डा० वनेश्वरपाठकः (सरस्वती सुषमा, सं० वि० वाराणसी, वि० सं० २०३७)

(५७) कविः कालिदासश्च—डा० वनेश्वरपाठकः (उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ, स्मारिका विशेषांक १९८१)

(५८) कालिदासस्य बालकाः तस्य वात्सल्यञ्च—डा० वनेश्वर पाठकः (ओरियण्टल) कान्फरेंश (शान्तिनिकेतन, १९८०) स्मारिका)

(५९) कालिदासस्य सौन्दर्यसृष्टिः—डा० वनेश्वरपाठकः (परमार्थसुधा, वाराणसी, १९८१)

(६०) देशस्य वर्त्तमान परिवेशे कालिदासस्य प्रासङ्गिकता—विक्रम विशेषांक उज्जैन, १९८१ ई० ।

(६१) कालिदासस्य साहित्यम्—ओरियण्टल, कान्फरेंश, पूना, १९७८ ई० स्मारिका ।

(६२) महाकवेः कालिदासस्य कृतयः[१]—पण्डिता क्षमाराव, बम्बई ।

(६१) कालिदासदोषभ्रान्तिपरिहारः[२]—

(६३) कालिदासकृतं नायिकावर्णनम्[3]—डा० क्षितीशचन्द्र चट्टोपाध्याय ।

(६४) भारती कालिदासस्य[४]— ,,

१. संस्कृतम्, १९ (५-७-४९) पृ० ७–८। इसमें कालिदास की ६ रचनाओं को मान्यता दी गई है—तीन नाटक और तीन काव्य (ऋतुसंहार को नहीं।)

२. संस्कृतम् १९ (३०–८–४९)। इसमें पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी प्रभृति विद्वानों के द्वारा प्रदर्शित दोषों का परिहार है।

३. मञ्जूषा, १२ (१९५७–५८) पृ० २१५–१६। इसमें कुमार, मेघ, रघु, मालविका, विक्रमो० तथा शाकुन्तल की नायिकाओं के वर्णन-विषयक एक-एक श्लोक की व्याख्या है।

४. मञ्जूषां १० ५ पृ० ११४। इसमें या सृष्टिः स्रष्टु राधा इस श्लोक के 'सृष्टि' शब्द की व्याख्या की गई है। ६ पृ० १७२–७३, में अतीत्य हरीश्च (शाकुन्तल अं० १) में हरितो हरीन् के औचित्य का विचार किया गया है। ७ पृ० १७८ ८० में अली वेदिं परितः' इस श्लोक के अवतरण वाक्य 'ऋक्छन्दसा आशास्ते' के अर्थ पर विचार किया गया है। १० पृ० २२३, में अनवाप्तचक्षुःफलः' (शाकुन्तल अंक २) के स्थान में चक्षुष्फलः पाठ को शुद्ध माना गया है।११ पृ० २४६–५३, में 'सुतनु'(शाकुन्तल ७।२४) की साधुता पर विचार किया गया है।

(६५) श्रुतिमहती कालिदासस्य सरस्वती[५]—कुमुदरञ्जनराय ।
(६६) कालिदासीयपद्येऽस्थानस्थपदता[६]—पं० रघुनाथशर्मा ।
(६७) कालिदासस्य श्लोकचतुष्ट्रयम्[७]—चतुर्मास्ययाजी ।
(६८) कालिदासरसोपज्ञता[८]—गोपालकृष्णशास्त्री ।
(६९) कालिदासग्रन्थाः[९]—
(७०) साहितीहृदयम्[१०]—
(७१) साहितीहृदयम्[११]—
(७२) कालिदासस्य काव्येषु मधुमासः—डा० रामाशीषपाण्डेयः (मनीषा, का० सि० दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, पत्रिका)
(७३) कालिदासस्य काव्येषु परिवारकल्याणम्—डा० रामाशीष पाण्डेयः ('परमार्थसुधा' वाराणसी) ।

---

५. मञ्जूषा ,, ९ । इसमें 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ' इत्यादि श्लोकों पर विचार किया गया है ।

६. सारस्वतो सुषमा' ८ (सं० २०१०) पृ० २२१ ।

७. भवितव्यम्, वर्ष २ अंक २८ (४-१०-५२) पृ० १—४ । इसमें 'यास्यत्यद्य०' को प्रथम शुश्रूषत्व० को द्वितीय' अभिजनवतो' को तृतीय और अर्थो हि० को चतुर्थ श्लोक माना गया है ।

८. महाराज संस्कृत पाठशाला पत्रिका, मैसूर, ४ (१९२८) २, पृ० ३९–४६ ।

९. सहृदया १७, ११, पृ० २३३–४० । इसमें नलोदय और ऋतुसंहार को, कुमारसम्भव आदि की तुलना में काव्यात्मक सौन्दर्य के अभाव के कारण, कालिदास की रचना नहीं माना गया है । केवल तीन नाटक और तीन काव्य ये ६ ही कालिदास की रचनाएँ हैं ।

१०. सहृदया १९, ३, पृ० ८९–९३ । इसमें कालिदास के काव्यों की श्रेष्ठता दिखाई गई है ।

सहृदया १९५ पृ० ११९—२० । इसमें यह सिद्ध किया गया है कि नलोदय कालिदास की रचना नहीं है; नारायण के पुत्र रविदेव की रचना है ।

११. सहृदया १९ ६ पृ० १३३—३७ । इसमें काव्यत्रय और नाटकत्रय को ही कालिदास की रचना माना गया है ।

सहृदया १९ ७ पृ० १६२—६५ । इसमें यह दिखाया गया है कि कालिदास की रचनाओं का मुख्य प्रयोजन सहृदय हृदय-रञ्जन है; यशः प्राप्ति नहीं हैं ।
सहृदया १२, पृ० २७७–८१ । इसमें कहाकवि की अनन्य साधारण विशेषता का प्रतिपादन किया गया है ।

(हिन्दी भाषा में)—

(१) सिंहलद्वीप में महाकवि कालिदास का समाधिस्थल[१]—पं० चन्द्रधरशर्मा गुलेरी ।

(२) ऋतुसंहार और कालिदास की जन्मभूमि[२]—अवधवासी लाला सीताराम ।

(३) कालिदास की जन्मभूमि[३]— ,,

(४) कालिदास की समाधि[४]—पं० सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन ।

(५) कालिदास की जन्मभूमि[५]—अवधवासी लाला सीताराम ।

---

१. नागरी प्रचारिणीसभा-पत्रिका, २५ (सं० १९७७) भाग १, पृ. १६१-६६ । इस निबन्ध में गुलेरीजी ने इस किंवदन्ती का खण्डन किया है कि कालिदास का समाधिस्थल सिंहलद्वीप (दक्षिण प्रान्त के माटर सूबे का वह स्थल जहाँ कारिन्दी भारत महासागर में मिलती है) है। उन्होंने इसका भी खण्डन किया है कि कालिदास बंगाली, मैथिल या गुजराती थे।

२. माधुरी, वर्ष २, खं० २, पृ. १४५-४६ । इसमें यह सिद्ध किया गया है कि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की राजधानी अयोध्या थी। कालिदास इसी विक्रमादित्य के समकालीन थे। उन्होंने अयोध्या में रघुवंश लिखा था। ऋतुसंहार के वर्णनों से यह स्पष्ट होता है कि वे बङ्गाली नहीं थे, विन्ध्यपर्वत की तलहटी के निवासी थे।

३. माधुरी, वर्ष १५ (१९३६-३७) पृ. ३१४-१५ । इस निबन्ध में कालिदास को जनश्रुति के आधार पर मिथिला के दामोदरपुर का निवासी सिद्ध किया गया है।

४. ,, १३ (१९३४-३५), पृ. ४७१-७३ । लेखक ने यह सिद्ध किया है कि कालिदास का अन्तिम समय सिंहल में बीता था।

५. ,, १५ (१९३६-३७) खं० २ (अङ्क ४ मई) पृ. ६५६-६० । इसमें लेखक ने अनेक किंवदन्तियों का उल्लेख करते हुए यह सिद्ध किया है कि दरभङ्गा जिले की मधुबनी तहसील के दामोदरपुर ग्राम में कालिदास का जन्म हुआ था।

(६) कालिदास का समय[१]—लेखक अज्ञात।

(७) कालिदास की नीतिशिक्षा[२]—पं० जनार्दनभट्ट एम. ए.।

(८) कालिदास और विक्रमादित्य का कालनिर्णय[३]—काशीनाथ कृष्ण लेले तथा शिवराम काशीनाथ ओक।

(९) कालिदास और भवभूति[४]—गिरिधरशर्मा कविरत्न।

(१०) कालिदास और उनका विक्रमादित्य[५]—सिद्धिनाथ दीक्षित।

(११) कालिदास के काव्य में सौन्दर्य[६]—सी. वी. राव, आई. सी. एस.।

(१२) कालिदास और कल्पवृक्ष[७]—पं० सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन।

(१३) महाकवि कालिदास के समय पर एक विहङ्गम दृष्टि[८]— ,,

(१४) कालिदास की प्रतिष्ठा और उनके समय, तथा ग्रन्थरचना–क्रम-सम्वन्धिनी विवेचना पर एक नवीन दृष्टि[९]—पं० रामकुमार चौबे।

(१५) कालिदास और गुप्त सम्राट्[१०]—डोलरराय रंगीलदास मांकड़ (Prof. D. R. Mankad)

---

१. सरस्वती, भाग ८, (१९१७) खं० १ पृ० २२२-२७। इसमें कालिदास का समय प्रथम शताब्दी ई० पू० सिद्ध किया गया है।
२. सरस्वती भाग १८ (१९१७), १ पृ. ३२५-३३।
३. ,, भाग २४ (१९२३), १ पृ. २०३-१२, पृ. ५०७-१९ पृ. ६१३-२४।
४. ,, भाग २६ (१९२५), २ पृ. ११४-२०
५. ,, भाग ३१ (१९३०), १ पृ. ५१५-२६। लेखक ने यह सिद्ध किया है कि कालिदास गुप्तवंशी विक्रमादित्य (महेन्द्रमित्र या महेन्द्रादित्य), प्रथम शताब्दी ई. पू. के प्रथम विक्रमादित्य से भिन्न तथा अपने वंश के पाँचवें, के समकालीन थे।
६. सरस्वती भाग ३४ (१९४३), खं० २, पृ. ५७५-७६।
७. ,, भाग ५७ (१९५६) खं० २ पृ. ९-१०। इसमें कालिदास के काव्यों में कल्पवृक्ष के प्रयोगों को संकलित किया गया है।
८. ,, भाग ५८ (१९५७) खं० २ पृ. ३७७-८२।
९. नागरीप्रचारिणीसभा-पत्रिका ३४ (स० १९८६), पृ. ५११-५३१।
१०. ,, ६३ (सं० २०१५), पृ. ५-२९। इसमें कालिदास को गुप्तवंशी सिद्ध किया गया है।

(१६) महाकवि कालिदास[1]—पं० गोपीकृष्ण शास्त्री।

(१७) शेक्सपीयर के एक नाटक में कालिदासीय आभास[2]—प्रो. अमृतलाल, मथुरा।

(१८) कालिदास और तुलसीदास का शृङ्गार-वर्णन[3]—व्योहार राजेन्द्र सिंह।

(१९) ,, ,, —[4]आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री।

(२०) महाकवि कालिदास की सर्वश्रेष्ठता[5]—आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री।

(२१) महाकवि कालिदास और दिङ्नाग[6]—श्री कन्हैयालाल पोद्दार।

(२२) आचार्य दिङ्नाग और कवि कालिदास[7]—आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

---

१. माधुरी, वर्ष १२ (१९३३-३४) खं० १ पृ. १८५-९१। इसमें ऋतुसंहार के कर्ता कालिदास को शाकुन्तल आदि के कर्ता कालिदास से भिन्न माना गया है।

२. ,, ,, १३ (१९३४-३५) खं० १ पृ. १६९-७७। इसमें शेक्सपीयर के The Winter's Tale तथा कालिदास के शाकुन्तल का तुलनात्मक विवेचन किया गया है।

३. ,, ,, १४ (१९३५-३६) खं० १ जनवरी अं० ई०, पृ. ६ ७६५-७१। इसमें कालिदास के शृङ्गार को अमर्यादित और तुलसी के शृङ्गार को मर्यादित, अतएव तुलसी को महत्तर कवि सिद्ध किया गया है।

४. ,, ,, २०, खं० २ मार्च अंक २, पृ. २००-२०३। इसमें शास्त्री जी ने राजेन्द्र सिंह के मत का खण्डन किया है और कालिदास को कलाकार की दृष्टि से तुलसी से बढ़कर सिद्ध किया गया है।

५. माधुरी, वर्ष १४ (१९३५-३६) खं०१ (दिस० अङ्क ५)।

६. ,, ,, १५ (१९३६-३७) खं० २ जुलाई अंक ६, पृ. ८६४-६७। इसमें आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के 'कुन्दमाला' लेख (मई १९३७ के 'माधुरी' में प्रकाशित) का प्रतिवाद किया गया है और यह सिद्ध किया गया है कि 'निचुल' कालिदास के समकालीन नहीं थे भोज के समकालीन थे।

७. माधुरी वर्ष १६ (१९३७-३८) (सित० अंक २) पृ. २१५-१७। इसमें शास्त्रीजी ने श्री पोद्दार के उपर्युक्त मत का प्रतिवाद किया है।

(२३) "ते भागधेयानि पृच्छ[१]"—डा. भगवतशरण उपाध्याय ।

(२४) कालिदास की एक महत्ता[२]—बालाजी राव जोशी ।

(२५) महाकवि कालिदास[३]—पं० रामसेवक पाण्डेय ।

(२६) कालिदास और हूण[४]—डा० बुद्धप्रकाश ।

(२७) कालिदास-सहित्य के स्थायी मूल्यों की समस्या[५]--डा० रामविलास शर्मा।

(२८) शुङ्गकालीन परिस्थिति का कालिदास पर प्रभाव[६]—
पं० सूर्यनारायण व्यास ।

(२९) कालिदास के साहित्य में शिक्षा और संस्कृति[७]—पं० बलदेव मिश्र ।

(३०) कालिदास की कविता के नमूने[८]—पदुमलाल पन्नालाल बख्शी ।

(३१) कालिदास-साहित्य में भौगोलिक वर्णन[९]—डा० श्रीपति अवस्थी, उपनिर्देशक-संस्कृत अकादमी, लखनऊ ।

---

१. माधुरी वर्ष १८ (१९३९-४०) खं० १ (अक्टू० अंक ३) पृ. ४५९-६६ । इसमें शाकुन्तल की समीक्षा और कालिदास के कवित्व की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है ।

२. माधुरी वर्ष २४ (१९४५-४६) खं० २, पृ. ३६१-६३ । लेखक ने कालिदास के मानवीय रति के मनोवैज्ञानिक चित्रण को उनकी महत्ता तथा उनके साहित्य का स्थायी मूल्य माना है ।

३. माधुरी वर्ष २५ (१९४६-४७) खं० २ पृ. ३७५-७८ लेखक का मत है कि कृष्ण के प्रति अतिशय निष्ठावान् होने के कारण ही कालिदास ने कृष्ण को अपने काव्य का चरितनायक नहीं बनाया है ।

४. सम्मेलन पत्रिका, वर्ष ४२, (स० २०१२), १ ।

५. आलोचना, वर्ष ५, (१९५६ ई०) अप्रिल अंक २ ।

६. विक्रम, १९५९ (कालिदास-विशेषांक) पृ. २९-३४ ।

७. ,, ,, ,, पृ. ३५-३८ ।

८. सरस्वती, २१ (१९२०), २, पृ. १७५-७८ । इसमें कालिदास के कतिपय सुन्दर श्लोकों का भावानुवाद है ।

९. 'स्वतन्त्र भारत' १-११-७९ ।

(३२) कालिदास की दार्शनिक दृष्टि—डॉ० श्यामारमण पाण्डेय (दर्शन त्रैमासिक, अखिल भारतीय दर्शन परिषद्, लखनऊ)

(३३) कालिदास का नाट्यप्रयोग-विज्ञान—डॉ० श्यामारमण पाण्डेय (राष्ट्र-भाषा परिषद् बिहार)

(वङ्गला भाषा में)—

(१) कालिदास[1] (वङ्गला निबन्ध)—म. म. हरप्रसाद शास्त्री।
(२) कालिदास ओ शेक्सपीयर—वङ्गदर्शन (पत्रिका) वङ्गवर्ष १२८५, वैशाख
(३) वङ्गीययुवक ओ तीन कवि— ,, ,, पौष
(४) कालिदासेर मेये देखानो—नारायण, ,, १३२२, भाद्रपद
(५) कालिदासेर वसन्तवर्णना— ,, ,, १३२३, फाल्गुन
(६) एक एक राजार तीन तीन रानी— ,, १३२४, फाल्गुन
(७) रघु आगे कि कुमार आगे ?— ,, ,, १३२५, आश्विन
(८) अजविलाप ओ रतिविलाप— ,, ,, ,, कार्तिक
(९) कालिदासेर अभिधान— प्रवासी, ,, १३३६ माघ
(१०) कालिदासेर साहित्ये नारी— ,, ,, १३६०, वैशाख
(११) कालिदासेर साहित्ये पिता-पुत्र—,, ,, १३६२, वैशाख-आश्विन
(१२) कालिदासेर साहित्ये रूपवर्णना— ,, ,, ,,
(१३) कालिदासेर साहित्ये राजा ओ राज्यशासन ,, १३६१, कार्तिक-चैत्र
(१४) हरप्रसाद शास्त्री ओ कालिदासेर व्याख्या—वसुधारा, १३६७, कार्तिक।
(१५) कालिदासेर व्याख्या— ,, ,, अग्रहायण।
(१६) कालिदास–रवीन्द्रनाथ —भारतवर्ष, १३६२, कार्तिक-चैत्र।
(१७) रवीन्द्रनाथ, कालिदासेर व्याख्याकार—देश, १३६८. आश्विन।

---

१. इसमें कालिदास को मालव देशवासी सिद्ध किया गया है।

(कालिदास के कृतित्व के सम्बन्ध में विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित निबन्ध)

(क) विदेशी भाषाओं में—

१ ऋतुसंहार—

(१) कालिदासाज् ट्रीटमेंट ऑफ नेचर इन ऋतुहंहार[१]—प्रो. के. आर. पिशारोती।

(२) डेभलप्मेंट ऑफ ऋतुसंहार—थीम इन दि रामायण[२]—सी. डब्ल्यू. गुर्नर।

(३) दि ऑथेन्टिसिटी ऑफ ऋतुसंहार[३]—जे. नोबिल।

(४) जर एस्थेइट्सफ्रेज दस ऋतुसंहार[४]—जे. नोबिल (जर्मन)।

(५) ए रीभ्यू ऑफ कालिदासाज् ऋतुसंहार, सीताराम सहगल द्वारा सम्पादित[५]—सी. आर. देवधर।

२. मेघदूत—

(१) ए डिफिकल्टी इन मेघदूत[६]—एच. बी. भिड़े।

(२) नेचर स्टडी इन संस्कृत पोएम मेघ[७]—लिली डिक्सटर ग्रीन।

(३) मेघदूत[८]—टी. ए. वी. दीक्षितार।

---

1. Annals of B. O. R. I. Vol. XiV, 1948, P. 134-40.
2. J. R. A. S, B. Vol. XXVI, 1930 (new Series) P. 161-73.
3. J. R. A.S. Vol. XLIV, 1913, P. 401. ff. इस लेख में कालिदास को ही ऋतुसंहार का रचयिता सिद्ध किया गया है।
4. Johannes Nobel–Zur Echtheits-frage des Ritusamhara. Z.D.M. G. Band 66 (1912) P. 275-80.
5. Annals of B. O. R. I. Vol. XXV 1949. Parts 1-4. P. 331.
६. I. A. Vol. XLVII, 1918, P. 251-55. इसमें 'आषाढ़स्य प्रथमदिवसे अथवा 'प्रशमदिवसे' की संगति 'प्रत्यासन्ने नभसि' तथा 'शापान्तो मे भुजगशयनादुत्थिते' इत्यादि के साथ मिलाने में कठिनाई दिखाई गई है।
7. I. A. Vol LIX 1930, P. 114-17 / ,, ,, P. 131-33. (Lily Dexter Greene).
8. Bhavana's Journal, Vol. II, 1955-56 (April Issue) P. 39-40.

(४) नश मुन्जेन दस मेघदूत[1]—थियोदर ऑफ्रेच (जर्मन)।

(५) ए रीभ्यू आफ 'मेघदूतावर नया प्रकाश' आफ वामन कृष्ण पराञ्जपे[2]—वी. एम. वेदेकर (मराठी)।

(६) ए रीभ्यू आफ 'मेघदूतांतील रामगिरि अर्थात् रामटेक' आफ डॉ० वी. वी. मिराशी[3]—जी. टी. देशपाण्डे। (मराठी)

(७) ए रीभ्यू आफ 'फ्रेश लाइट आन कालिदासाज् मेघदूत' आफ वी. के. पराञ्जपे[4]—वी. एम. वेडेकर।

(८) ए रेयर मैनुस्क्रिप्ट्स आफ ए कमेंटरी आन दि मेघदूत कॉल्ड 'सारोद्धारिणी' ऐण्ड इट्स प्रोबेबुल डेट[5]—डा. पी. के. गोदे।

(९) ए कोटेशन फ्रम दि 'हनुमन्नाटक' इन दि कमेंटरी आन मेघ बाइ महिमहंसगनि[6]— ,, ,,

(१०) ऐन्टिक्विटी आफ ए फ्यू स्पुरियस भर्सेज फाउण्ड इन सम मैनुस्क्रिप्ट्स आफ दि मेघ आफ कालिदास[7]— ,, ,,

(११) ए कन्ट्रोभर्टेड रीडिङ्ग इन मेघदूत[8]—हीरालाल अमृतलाल शाह।

---

1. Theador Aufreteh-Nachahmumgen des Mghaduta, Z. D. M. G. Band, 54 (1900) P. 613-15.
2. Annals of B. O. R. I. Poona, Vol. 39 (1958) Part III & IV, P. 377-81.
3. Annals of B.O.R. I. Poona, Vol. 40 (1959) Parts I-IV, P. 386-89.
4. ,, ,, ,, 40, Pt. I-IV, P. 172-177.
5. ,, ,, Vol. XIV Parts 1 and 2 (1932-33) P. 130-31. (यह टीका ११७३ ई. तथा १५८१ ई. के मध्य में लिखी गई थी।)
6. ,, ,, ,, ,, P. 132-33.
7. ,, ,, Vol XV Part 111-14.
8. ,, ,, Vol XXI Pt 3-4 p, 264-65 लेखक ने 'आषाढस्य प्रथमदिवसे' के स्थान में 'आषाढ़स्य प्रशमदिवसे' को मान्यता दी है।

(१२) ए रीभ्यू आफ 'फ्रेश लाइट आन कालिदासाज् मेघ बाइ वी. के. पराञ्जपे[1]—एम. वेङ्कटरमय्या।

(१३) रीभ्यू आफ 'कालिदासाज् मेघदूत' बाइ के. वी. पाठक[2]—वी. एस. सुखथङ्कर।

३. कुमारसभम्व—

(१) ह्युमर इन कुमारसम्भव अनवेल्ड[3]—एस. सुन्दराचारी।

(२) दस ईपेन कालिदासस्[4]—एच. जाकोबी।

(३) ए नोट आन कालिदासाज् कुमारसम्भव ह्वेदर कैन्टोज नाइन्थ टु सेवेन्टिन्थ आर फ्राम हिज पेन[5]—शिवप्रसाद भट्टाचार्य।

(४) दस वेहाल्तनिस, दस अमरसिंह जु कालिदास कुमारसम्भव[6]—हंस हेन्सजेन

---

1. Journal of orientel Rescarch Madras Vol. XXVIII P. 172-75. इस लेख में सुरगुजा स्टेट की रामगढ़ पहाड़ी की गुफाओं को रामगिरि-आश्रम सिद्ध किया गया है।)
2. I. A., Vol XLVI 1917, P. 79-80.
3. J. O. R. Madras, Vol. VII, 1932, Pt 1, P. 1-7.
4. H. Jacobi—Das Epen Kalidasas. Verhandlungen dess internationalen Orientalisten Congress, Berlin, 1881, Teil 2 Halfte. Berlin, 1882, P. 133-156. इस निबन्ध में कुमारसम्भव के प्रथम आठ सर्गों को मान्यता दी गई हैं; स्तेंस्लर के अनुसार केवल ७ सर्गों को अथवा एस. पी. पण्डित के अनुसार सम्पूर्ण १७ सर्गों को भी नहीं।
5. Oriental Coference, Vol. IV 1926, P. 43-44.
6. Hans Hensgen-Das Verhattnis Des Amarasimha Zu Kalidasa, drages tellt an einer Untersuchug des Kumarasambhava. Z. D. M. G. Band 104 (1954) P. 352-82.

(५) दि आथरशिप आफ दि लैटर हाफ आफ दि कुमारसम्भव[1] — शिवप्रसाद भट्टाचार्य

(६) ए कमेन्टेरी आन कुमार बाइ हरिचरणदास काल्ड 'देवसेना' ऐण्ड इट्स प्रोबेबुल डेट[2] — डा. पी. के. गोदे।

(७) चारित्रवर्द्धन, कमेन्टेटर आफ कुमार ऐण्ड अदर काव्याज[3] — ,,

(८) ए कमेन्टरी आन दि कुमार कॉल्ड 'शब्दामृत' बाइ कायस्थ गोपाल ऐण्ड इट्स प्रोबेबुल डेट[4] — डा. पी. के. गोदे।

(९) ए कमेन्टरी आन दि कुमार बाइ जिनसमुद्रसूरि ऐण्ड इट्स प्रोबेबुल डेट[5] — डा. पी. के. गोदे।

(१०) जिन समुद्रसूरि दि आँथर आफ ए कमेन्टरी आन कुमार ऐण्ड हिज ऐक्जेक्ट डेट[6] — डा. पी. के. गोदे

(११) ए रीभ्यू आफ कुमारसम्भव, के. एस. बनर्जी द्वारा सम्पादित[7] — ,,

(१२) ए क्रिटिकल कम्पैरिजन आफ मल्लिनाथस् ऐन्ड प्रेमचन्द्रस् कमेन्टरीज आन दि एर्थ कैन्टो ऑफ कुमार[8] — डा. पी. के. गोदे

---

1. J. R. A. S. Bengal, Vol. XX, no. 2, P. 313-336 (1954). इस लेख में सम्पूर्ण कुमारसम्भव (१ से १७ सर्ग तक) एक ही व्यक्ति अर्थात् कालिदास की ही रचना है, यह सिद्ध किया गया है।
2. Annals of B. O. R. I. Vol. XIII Pt. 2, P. 184-85. (यह टीका सम्भवतः १६३० और १६८० ई० के बीच में लिखी गई थी)।
3. ,, Vol. XV Parts 1 and 2 (1933-34) P. 109-11 (टीकाकार का समय ११७२ ई० तथा १३८५ ई० का मध्य है)।
4. ,, ,, ,, ,, ,, P. 114-16. (टीका का समय १५ वीं शताब्दी का मध्य है)।
5. ,, ,, ,, ,, Parts 3 and 4, P. 244-46. (टीका का समय १५ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध है)।
6. ,, ,, ,, Vol. XVI ,, (1934-35) P. 144-45, (जिनसमुद्रसूरि का जन्मसमय १४५० ई. और मृत्युसमय १४९९ ई. है)।
7. Pandita (पण्डितपत्रिका) Vol. I no. 11 (April issue).
8. ,, Vol. III (1868-69) P. 61-64.

४ रघुवंश—

(१) अर्थशास्त्र मैटर्नल इन दि रघुवंश[१]— प्रो. दशरथ शर्मा।

(२) कालिदास दि आथर आफ वन्ली दि फर्स्ट एट कैन्टोज आफ रघुवंश[२]— सी. आर वेंकटरमय्या।

(३) रघुवंश एण्ड इरान[३]—बुद्धप्रकाश।

(४) श्रीराम एण्ड दी रघुवंश[४]—सी. कुन्हनराजा।

(५) रघुज् लाइन आफ कंकेस्ट एलांग इन्डियाज् नदर्न बार्डर[५]—जयचन्द्र विद्यालङ्कार।

(६) एनेलिसिस आफ दि रघुवंश, ए संस्कृत पोएम आफ कालिदास[६] — शिव प्रसाद भट्टाचार्य।

(७) दि नेचर पोयट्री इन कालिदासाज् रघुवंश[७]—ए सी. सुब्रह्मण्यम।

(८) डेट आफ 'सुमतिविजयस्' कमेण्टरी आन दि रघुवंश[८]— डा. पी. के. गोडे।

---

1. Ananls of B. O. R I. Vol, XXVII, *1951*. P. *129-37*.
2. Poona Orientalist, Vol. VIII, *1943*, Parts III and IV, P. *188-201*. इस लेख में कुन्हनराजा के 'Studies on Kalidasa' की समीक्षा की गई है और यह सिद्ध किया गया है कि कालिदास कुमारसम्भव के सभी १७ सर्गों के निर्माता हैं।
3. ,, Vol. XIV, Parts *1*-4, P. *4-12*. इस लेख में यह सिद्ध किया गया है कि रघुवंश के बहुत-से राजाओं के नाम इरानी नाम हैं।
4. Festchrift Kane P. 35.
5. All India Oriental Conference, Vol. VI *1930*, P. *101-21*.
6. J. R. A. S. Bengal, Vol. XXI, no. 2, P. *4*-15 (1955).
7. Journal of the Annamalai University, Vol. III, Pt. 2 (Oct)
8. An nals of B. O. R. I. Vol. XIII Pt. III and IV, P. *341-43*. (यह टीका १७ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिखी गई थी)

(९) ए मैनुस्क्रिप्ट्स आफ ए कमेण्टरी आन दि रघु काल्ड 'प्रकाशिका' ऐण्ड इट्स प्रोबेबुल डेट[1]—डा. पी. के गोडे।

(१०) हेमाद्रिज् कमेण्टरी आन दि रघु काल्ड 'दर्पण' एण्ड इट्स प्रोबेबुल डेट[2]–डा. पी. के. गोडे।

(११) डेट आफ हरिदास मिश्र आथर आफ कमेण्टरीज आन रघु ऐण्ड कुमार[3]–डा. पी. के. गोडे।

(१२) ए फ्यू आब्जर्वेशन्स आन एम. हिप्पोलाइट फौचेज् ट्रान्सलेशन्स आफ रघु ऐण्ड कुमार[4]–डा. पी. के. गोडे।

(१३) रघुवंश[5]–टी. ए. वी. दीक्षितार।

(१४) ए रीभ्यू ऑफ 'कालिदास' ली रघुवंश पोएम एन नाइनटीन्थ कैन्टो बाइ लोविस रनू[6] (इन डच)–डा. जे. पी. डच. वोजिल।

[१५] ए रीम्यू आफ 'रघुवंशविमर्शः' बाइ कृष्णमाचार्य[7]—स्टेन कोनो।

[१६] ए रीम्यू आफ रघुवंशाज् तमिल टीका बाइ वी. एस. वेङ्कटराघवाचार्य[8]–जी. हरिहरशास्त्री।

---

1. Annals of B. O. R. I. Vol. XIII Part III-IV P. 343
   (इस टीका का समय १५वीं शताब्दी का मध्य है।)
2. ,, Vol. XIV Pts. 1 and 2 (1932-33) P. 126-28.
   (टीका का समय १५ वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है।)
3. ,, ,, Vol. XV Parts 3 and 4 ,, P. 245-47.
   [समय १५ वीं शताब्दी का मध्य है।]
4. Pandita (पण्डितपत्रिका) Vol. I (Old Series) 1866-67, P. 37 (M. Hippolyte Fauche).
5. Bhavan's Journal, Vol. II, 1955-56 (March issue) P. 56-57.
6. Dr. J. Ph. Vogel—A review of "Kalidasa, le Raghuvansha poeme en XIX Canta" by Lovis Renou. De Indische Gids, Vol. 51-1929 Amesterdam, P. 403-405 (in Duteh).
7. J. A., Vol. 37, P. 212.
8. Journal of Oriental Research Madras, Vol. XXIII (1954) P. 164.

[१७] रीव्यू आफ कृष्णमाचार्यस् रघुवंशविमर्श[1]—स्टेन कीनो।

[१८] ए नोट आन रत्नचन्द्राज् कमेंण्टरी आन रघु ऐण्ड नैषधीयचरित[2]
डा. पी. के. गोदे।

५ मालविकाग्निमित्र—

[१] दि हीरो इन मालविकाग्निमित्र[3] = डा. सी. कुन्हनराजा।

[२] कालिदासज् मालविकाग्निमित्र, ए स्टडी[4] = प्रो. वी. के. ठाकुर।

[३] पीट्रेज जर एरक्लारुङ्ग दर मालविका[5] [जर्मन] = प्रो. एफ. बोलेन्सन

[४] ज़र एरक्लारुङ्ग दर मालविका[6] [जर्मन] = डा. ए. वेबर।

[५] आँब्जर्वेशनेज ऐद् कालिदासे मालविकाग्निमित्रम्[7] = सी. कैपुलर।

[६] यवन इन्वैजन आफ इण्डिया फाउण्ड इन युगपुराण, महाभाष्य ऐण्ड मालविका[8] = एन. एन. घोष।

[७] दि इन्टरप्रीटेशन आफ भरतवाक्य इन मालविकाग्निमित्र[9] =
डा. सी. कुन्हनराजा।

---

1. I. H. Vol. XXXVIII 8908, P 112.
2. A. B. O. I. Poona Vol. XIII Pt. 94-96.
यह टीका नैषधीयचरित पर १६१२ ई. में और रघुवंश पर १६१२ ई. तथा १६२७ ई. के बीच में लिखी गई थी।
3. Annals of B. O.R.I. Vol. XXIII Parts 1-4, P. 369-78.
4. ,, ,, Vol. XI 1935, no, I, P. 1-43 (of the supplementary).
5. Prof. F. Bolensen-Peitrage Zur Erklarung der Malavika. Z. D. M. G' Band *13* (*1859*) P. 48*0*-89.
6. Dr. A. Weber-Zur Erklarung der Malavika. Z. D. M. G. Band *14* (*18*60) P. 26*1*-68.
7. C. Cappeller-Observationes ad Kalidasae Malavikagnimitrem. Regimonti, *1*868.
8. J. G. N. Jha R. I. Allahabad, Vol. IV, P. 45 ff.
9. ,, ,, ,, ,, P. 2*11* ff.

[८] डा. राजाज् इन्टरप्रीटेशन आफ भरतवाक्य इन मालविकाग्निमित्र[1]–
डा. दशरथ शर्मा ।

[९] हिस्टारिकल प्राबलम कनेक्टेड विथ मालविकाग्निमित्र[2]–के. सी. ओझा ।

[१०] दि रिभर सिन्धु आफ दि मालविकाग्निमित्र[3]–डा. भगवतशरण उपाध्याय ।

[११] एज आफ कालिदास, ए स्टडी आफ दि सोशल कण्डिशन्स बेस्ड आन मालविकाग्निमित्र[4]—डा. वी. सुब्बाराव ।

६ विक्रमोर्वशीय—

[१] विक्रमोर्वशीय कोणेश्वरी[5]—एच. डी. वेलङ्कर ।

[२] दि लभ स्टोरी पुरुरवस् ऐण्ड उर्वशी[6]—जेल्डनर ।

[३] विक्रमोर्वशी ऐक्ट फोर्थ[7]—डा. एस, एस. भावे ।

[४] दि विक्रमोर्वशी ए हिस्टारिकल ड्रामा[8]—आर. एम. त्रिवेदी ।

[५] विक्रमोर्वशी ए स्टडी[9]—प्रो. के. आर. पिशारोती ।

[६] उर्वशी ऐण्ड पुरुरवस्[10]—डी. डी. कोशाम्बी ।

---

1. J. G. N. Jha R. I. Allahabad, Vol. V P. 197-202. 59 ff.
2. ,, ,, ,, Vol. VIII P. 197-202.
3. Journal of the U. P. Historical Society, Vol. XIV (1941) Pt. I, p 9-20.
4. Journal of the Oriental Institute Baroda, Vol No, I (Sept, 1951.) P. 65-71, no. 2 (Dce. 1951) P. 151-59, no. 4 (June 1952) p. 346-52.
5. Annals of B. O. R. I. Vol. XXXVIII Parts 3-4, P, 254-61.
6. Vedische Studien, I, P, 243-265. (Geldner).
7. Bharatiya, Vidya, Vol. IX 1948, P. 62-80. इसमें विक्रमोर्वशीय के चतुर्थ अङ्क की आलोचनात्मक साहित्यिक प्रशस्ति है ।
8. Oriental Conference, XIX 1953.
9. J. G. N. Jha R. I. Allahabad Vol. I, P. 123-137.
10. J. R. A. S. Bombay, Vol. IX Pt. I (1951 Dec.) P. 1-30.

[७] दि लिजेण्ड आफ इन्द्रनलिन, पुरुरवस् ऐण्ड उर्वशी[1]---प्रो. शेमवणेकर।

[८] ए रीम्यू आफ विक्रमोर्वशीय विथ संस्कृत कमेण्टरी 'कल्पलता' बाइ सुरेन्द्रनाथ शास्त्री[2]—प्रो. शिवेन्द्रनाथ घोसाल।

[९] विक्रमोर्वशीय[3]—टी. ए. वी. दीक्षितार।

[१०] ए रीभ्यू ऑफ विक्रमोर्वशीय ऑफ कालिदास वाई. आर. एन. गैधनी[4] --पी. वी. रामानुजस्वामी।

७. अभिज्ञानशकुन्तल--

(१) टाइम एनेलसिस इन दि शाकुन्तल आफ कालिदास[5]—सी. कुन्हनराजा।

(२) शाकुन्तल[6]—टी. लक्ष्मीनरसिंहराव।

(३) नेचर स्टडी इन संस्कृत ड्रामा शकुन्तला[7]-लिलीडिक्स्टर ग्रीन।

(४) शकुन्तला आफ कालिदास[8]–टी. ए. वी. दीक्षितार।

(५) ए कम्मेंटरी आन दि अभिज्ञानशकुन्तल अट्रिव्युटेड टु मल्लिनाथ[9]–के. कुञ्जुनि राजा।

---

1. Journal of the University of Bombay, Vol. XIX (new Series) 1950, Pt. 2, P. 2, P. 85-93.
2. Prachyavani (प्राच्य वाणी) 1945, Nos. 1 and 2 (Jan. April) P. 60.
3. Bhavanas' Journal, Vol. II (1955-56) (June issue) P. 54.
4. Journal of Venkateshwara Oriental Institute, Tirupati, Vol. IX P. 43.
5. J. O. R. Madras, Vol. VIII, 1934. Pt. 3, P. 235-51. इस लेख में नाटक के प्रथम तथा सप्तम अङ्क में शकुन्तला के साथ दुष्यन्त के मिलने के बीच के समय पर प्रकाश डाला गया है।
6. G. J. M. S. IX, Jan. 1919, P. 63-66.
7. I, A, Vol LX 1931, P, 46-48 and P, 64-66, (Lily Dexter Greene)
8. Bhavana's Journal (May 1955-56 issue) P. 49-52.
9. Brahma Vidya, Vol XI Pt. 2 (May 47 इसमें यह सिद्ध किया गया है कि उक्त टीका मल्लिनाथ की नहीं है, नारायण की है।

(६) शाकुन्तल ऐन एलिगोरी[1]–एन. बी. अधिकारी।

(७) दि टेक्स्ट आफ दि शाकुन्तल[2]–बी. के ठाकुर।

(८) कालिदास इगो ड्रामा शाकुन्तल[3]–आई. राबिनोविच रूसी भाषा।

(९) कालिदासाज् शाकुन्तल ऐण्ड इट्ससोर्श[4]---बर्थोल्ड मुल्लर (Berthold muller)

(१०) दि लौस्ट रिंग आफ शकुन्तला, इज इट ए ग्रीक रेमिनिसेंश[5]---प्रो. सुरेन्द्र नाथ मजुमदार शास्त्री।

(११) दि आत्मतत्त्व इन दि शाकुन्तलम् आफ कालिदास[6]–डा० रामचन्द्र एस० बेताइ।

(१२) पोएम इन अप्रिशिएशन आफ शाकुन्तल[7] (जर्मन)—गेटे।

(१३) रीभ्यू आफ शाकुन्तल बाइ आर डी० करमरकर[8]—आर० एन० दाण्डेकर।

---

1 Proceedings All India Oriental Conference, Vol. I (1919) P. Li (of the summaries)

2. A. I. O. Conference, Vol. I (1919) P. LX.

3. I. Rabinovitch–Kalidasa iego drama Sakuntala Vkn.: Kalidasa Sakuntala, Per. K. Balmonta, (Russian) Kalidasa and his drama Sakuntala in "Kalidasa's Sakuntala, Trans. by K. Balmonta.)

4. J. B. O. R. S. 1874. (महाभारत के शाकुन्तलोपाख्यान की कथा और कालिदास के शाकुन्तल की कथा का तुलनात्मक विवेचन)

5. Journal of Bihar Researeh Socicty, Vol.VIII (1921) P. 96-99).

6. Journal of the university of Bombay, Vol. XXVI, Pt. 2, 1957.

7. Goethe--Introduction to Faust 1761. English Translation :--
"Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline;
And all by which the soul is charmed, enraptured, feasted, fed;
Wouldst thou the earth and heaven itself in one sole name Combines;
I name thee O S'akuntala and all at once is said."

8. Annals of B. O. R. I. Vol XXXII 1951 Parts 1-4, P. 297-98.

(१४) रीभ्यू आफ गोपालराव्स मराठी ट्रान्सलेशन आफ शाकुन्तल[१]

(१५) अभिज्ञान शकुन्तल[२]–के० सिन्हा।

(१६) ए सजेशन फार ए बैलेट अभिज्ञानशकुन्तल[3]–डा० जे० के० बलवीर।

(१७) दि शाकुन्तल टु अमेस्टर्डम[४] (इन डच)–डा० जे० पी० एच० वोजिल।
(A Review of the performance of Shakuntala played by the students of Amesterdam University)

(१८) रीभ्यू आफ 'शकुन्तला इन हिन्दी' आफ राजा लक्ष्मणसिंह[५]–जॉन बीम्स।

(१९) रीभ्यू आफ शारदारञ्जनराय्स शाकुन्तल[६]–स्टेन कोनो।

(ख) भारतीय भाषाओं में–

(संस्कृत में)–

१. ऋतुसंहार–

१. मेघदूत–

(१) मेघदूते काव्यरत्ने कालिदासो विशिष्यते[७]–पं० बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते।

(२) मेघदूते देशप्रेम्णो गौरवम्[८]–हीरालाल पाण्डेयः।

---

1. Pandita (पण्डित पत्रिका) Vol. IV (Old series) 1869-70. P. 272.
2. J. G. N. Jha R. I. Allahabad, Vol. II P. 243.
3. ,, ,, ,, Vol. XVI, Parts 3 and 4, P. 379-395. (इस लेख में यह सिद्ध किया गया है कि 'शाकुन्तल' का 'बैलेट' के रूप में सफल प्रदर्शन किया जा सकता है।)
4. Onafh Alg. Ned. Studenten week blad Vol. 49, no. 9, NOV. 25, 1922, Delft. p. 75 ff.
5. I. A. Vol. V, 1876.
6. I. A. Vol. XXXVII, 1908, p. 112.

७. विक्रम, (कालिदास विशेषाङ्क) पृ. ११-१६। लेखक ने मेघदूत में कालिदास की मौलिक प्रतिभा का प्रतिपादन किया है।)

८. भारतीय, (सं० २०१३) ४, पृ. ७६-७७।

(३) मेघदूतगरिमा[1]–टी. वेङ्कटाचार्य विद्याशिरोमणि।

(४) मेघदूतस्य मूलकथा[2]–वि. वेङ्कटरमणाचार्य।

(५) कालिदासप्रयोगविमर्शः[3]–डा क्षितीशचन्द्रचट्टोपाध्याय।

(६) 'प्रसिद्धिहतम्'[4]– ,,

(७) मेघदूते आत्मदौत्यम्[5]–कुमुदरञ्जनराय।

(८) मेघदूतम्[6]–श्रीनित्यगोपालविद्याविनोद।

(९) मेघदूते नारीचित्रम्[7]–शिवशङ्करशास्त्री।

---

१. जरनल आफ श्रीवेङ्कटेश्वर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट तिरुपति, भाग १२ (१९५१) पृ. २५-३५। इस लेख में नायक यक्ष की आस्तिकता तथा भक्ति-प्रवणता पर प्रकाश डालते हुए यह सिद्ध किया गया है कि मेघदूत पर वाल्मीकि रामायण की स्पष्ट छाया है।)

२ संस्कृतम्, १९ (८-३-४९) पृ. ५-६। इस निबन्ध में रामायण में वर्णित हनुमत्सन्देश को ही मेघदूत का आधार माना गया है; जैसी कि मल्लिनाथ की मान्यता है।

३. मञ्जूषा, ८ (५३-५४) पृ. १७१-७२। इसमें मेघदूत के 'वासवीनां चमूनाम्' (श्लो. १/४६) में 'वासवी' शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार किया गया है।

४. ,, १२ (५७-५८) पृ. ३२५-२६। इसमें 'वीचिक्षोभस्तनित.' इस श्लोक में 'स्तनित' शब्द का प्रयोग असमीचीन सिद्ध किया गया है।

५. ,, ९ ,, पृ. २१८-२०। इस लेख में यह दिखाया गया है कि मेघदूत में सर्वत्र साधनावस्था तथा अध्यात्मतत्त्व का वर्णन है।

६. संस्कृत साहित्य परिषत्पत्रिका, १७ (१९३४-३५) ३ पृ. ७९-८२। इसमें "सीतां प्रति रामस्य हनुमत्सन्देशं मनसि निधाय मेघसन्देशं कविः कृतवान्" मल्लिनाथ की इस मान्यता का समर्थन किया गया है।

७. ,, २१ (१९३८-३९) १ पृ. ५४-५९। इसमें विविध नारियों के चित्र उपस्थापित किए गए हैं।

(१०) कालिदासवेदान्तदेशिकयोः सन्देशकाव्यविरचने तारतम्यम्[१]—टी. के. रामचन्द्रशर्मा ।

(११) मेघदूतस्याङ्गलभाषायां काव्यानुवादः[२]—

(१२) मेघसन्देशविमर्शः[३]—

(१३) मेघदूतेऽभिव्यक्तिदोषः—डा. रेवाप्रसादद्विवेदी (सागरिका, पत्रिका)

(१४) मेघदूतस्यैकं पद्यम्— ,, ,,

हिन्दी में—

(१) मेघदूत—एक दृष्टि[४]—डा. वासुदेवशरण अग्रवाल ।

(२) मेघदूत में पुरातत्त्व[५]—पं. लोचनप्रसाद पाण्डेय ।

(३) मेघदूत और कालिदास[६]—प्रो. शिवराम पराञ्जपे ।

---

१. संस्कृत साहित्य परिषत्पत्रिका, २० (१९३७-३८) १२, पृ० ३५५-६१ । इसमें मेघदूत के कलात्मक सौन्दर्य पर प्रकाश डाला गया है ।

,, २१ (३८-३९) १ पृ. ११-१२ । इसमें वेदान्तदेशिक के हंससन्देश को मेघदूत की अपेक्षा हीन सिद्ध किया गया है ।

२. पण्डितपत्रिका, वाल्यूम २ (१८६७-६८) पृ १८२, २०४, २५३, २७२

३. सहृदया १५, १, पृ. ५-८ । ,, ,, २, पृ. २६-२९ । ,, ,, ३, पृ. ५०-५३ । ,, ,, ४, पृ. ७४-७७ । ,, ,, ५, पृ. ९८-१०१ । ,, ,, ६, पृ. १२४,२७ । ,, ,, ७, पृ. १४६-५० ।

४. नागरीप्रचारिणीसभा-पत्रिका, १४ (सं. २००६) पृ० १४३-५९ । इस लेख में मेघ के स्वरूप की मीमांसा की गई है; तथा वैज्ञानिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, कृषक आदि की दृष्टियों से इसकी समीक्षा की गई है ।

५. माधुरी, वर्ष ११, खं. २ पृ. १५१-५३ । इसमें रामगिरि को सुरगुजा राज्य में स्थित सिद्ध किया गया है ।

६. साहित्यसंग्रह ।

(४) मेघदूत में शापावधि और चातुर्मास्य–डा. रेवाप्रसादद्विवेदी (सागरिकापत्रिका)।

(५) मेघदूत में कालिदास की भौगोलिक काव्यदृष्टि—डा श्यामारमण पाण्डेय (सम्मेलन पत्रिका, प्रयाग)

वंगला में—

(१) मेघदूत (आलोचना)–बङ्गदर्शन (पत्रिका), वङ्गवर्ष १२८९, फाल्गुन।

(२) मेघदूत— भारतवर्ष ,, ,, १३६२, आषाढ़-अग्रहायण

३. कुमारसम्भव :—

(१) कुमारसम्भवे काचिद् दृष्टिः[1]—पं. विनायकशास्त्री टिल्लू।

(२) कालिदासीय कुमारसम्भवम्[2]—करुणाकुमारशास्त्री।

(३) अलङ्कार विमर्शः[3]—डा. क्षितीशचन्द्र चट्टोपाध्याय।

(४) कुमारसम्भवपाठविमर्शः[4]— ,,

(५) कुमारसम्भवविमर्शः[5]—सुशीलचन्द्र चट्टोपाध्याय।

(६) कुमारसम्भवोत्तरखण्डवर्णनम्[6]—विट्ठलशास्त्री।

---

१. विक्रम, १९५९ (कालिदास विशेषाङ्क) पृ. १-४। (इस लेख में कुमारसम्भव के आध्यात्मिक सौन्दर्य का प्रतिपादन किया गया है।)

२. संस्कृतसाहित्यपरिषत्पत्रिका, ३३ (१९५०-५१), अं. ७, पृ. ७८-८४। इसमें कुमारसम्भव के काव्यतत्त्व का विवेचन है। यह लेख १९५१—५३ के विभिन्न अङ्कों में प्रकाशित है।

३. मञ्जूषा, १२ (१९५७-५८) पृ. २१-२५, पृ. ४५-४६, पृ. ८९-९२। इसमें कुमारसम्भव के 'असम्भृतं मण्डनमङ्गयष्टेः' इत्यादि श्लोक (१३१) में स्थित अलङ्कार का विवेचन है।

४. ,, ,, ३ पृ. ८३-८४। इसमें 'केनाभ्यसूया पदकाङ्क्षिणाते' इस श्लोक (कुमार ३) के अन्तर्गत 'यावद् भवत्याहितसायकस्य' के स्थान में 'असौभवत्याहितसायकस्य' यह पाठ स्वारसिक है, यह सिद्ध किया गया है।

५. संस्कृतभारती, १, (१९१८) १ (जन०-मार्च) पृ. १७-२३।

६. पण्डित पत्रिका, वाल्यूम १ (१८६६), २ पृ. ११। इसमें यह सिद्ध किया गया है कि कुमारसम्भव के १७ सर्गों तथा रघुवंश के १९ सर्गों का रचयिता एक ही व्यक्ति है और वह कालिदास ही हैं।

(७) कुमारसम्भवोत्तरखण्डोपसंहरणम्[७]— ,,

(८) कुमारसम्भवोत्तरखण्डोपसंहरणस्य शेषांशः[८]— ,,

(९) कुमारसम्भवोत्पत्तिविवेचनम्[९]—(A discussion on the origin of Kumra) रामनारायण शास्त्री।

(१०) कुमारसम्भवविमर्शः[१०]—

(११) कुमारसम्भवम्[११]—रा. च. वि. कृष्णमाचार्य।

(१२) कुमारसम्भवविमर्शः[१२]— ,,

(१३) कुमारसम्भवे कालिदासोद्भटाचार्ययोः संवादः—डा. रेवाप्रसाद द्विवेदी (सागरिका पत्रिका)

---

७. ,, ,, (१८६७), ९ पृ. १२८-३०। उपर्युक्त विषय का ही समर्थन है।

८. ,, ,, , १० पृ. १६२-६३। ,,

९. ,, ,, ३ (१८६८-६९) पृ. १९-२२। इसमें स्कन्द पुराणान्तर्गत शङ्करसंहिता के शिवरहस्य खण्ड के सम्भव काण्ड की कथा को कुमारसम्भव महाकाव्य का आधार माना गया है। शिवपुराण की कथा को नहीं, जैसा कि तारानाथ ने स्वमुद्रित कुमारसम्भव के विज्ञापनपत्र में लिखा है।

१०. सहृदया, ११ (old series) २, पृ. ३१-३३, ३, पृ. ५५-५७, ४-५ पृ. ८२-८४, ८-९ पृ. १५४-५५, १०-११ पृ. १९४-९६।

११. सहृदया, १९, ७, पृ. १५१-१६२। इसमें विभिन्न दोषों के आधार पर (अर्थात् काव्यसौन्दर्यापकर्ष के कारण) कुमारसम्भव के उत्तरार्द्ध ९ सर्गों को कालिदास-कृत नहीं माना गया है।

१२. ,, २०, १, पृ. ४-८ इसमें कुमारसम्भव के काव्यगत सौन्दर्य की समीक्षा की गई है।

,, २०, २, पृ. २६-३० ,, ,,

,, २०, ५, पृ. ७४-७६ ,, ,,

,, २० ६, पृ. ९०-९२ ,, ,,

,, २०, ७, पृ. १०६-१०९ ,, ,,

(बंगला में)—

(१) पार्वतीर परिणय—नारायण (पत्रिका,) बङ्गवर्ष १३२३, आषाढ़

४. रघुवंश :—

संस्कृत —

(१) रघुवंशे प्रकृतिवर्णनम्[1]—जयगोपाल शर्मा, रुड़की ।

(२) रघुवंशे हूणाचारस्य समुल्लेखः[2]—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ।

(३) रघुवंशपाठप्रसादः[3]—अ.ति. सिङ्गराचार्य, आन्ध्र ।

(४) रघुवंशे श्लोकः[4]—डा. सी. कुन्हनराजा ।

(५) रघुवंशे श्लोकविशेषो नैसर्गिको वा प्रक्षिप्तो वा[5]— ,,

(६) रघुवंशे श्लोकः[6]—आशुतोषशर्मा ।

(७) रघुवंशपाठविमर्शः[7]—डा. क्षितीशचन्द्र चट्टोपाध्याय ।

(८) हेमाद्रे रघुवंशदर्पणः—डा. रेवाप्रसादद्विवेदी (सागरिका पत्रिका)

(९) नन्दिनीविद्या— ,, ,,

(१०) रघुवंशस्य १३/१० पद्यम् ,, ,,

---

१. सारस्वती सुषमा, ९ (सं. २०११) पृ. २११-१८ । १० (सं. २०१२) पृ. १५५-६३ ।

२. ,, ,, पृ. २२५-२६ ।

३. संस्कृतम्, १९ (२६-७-४९) पृ. ४-६; (२-८-४९) पृ. ५; (१६-८-४९) पृ. ३-४ । इसमें रघुवंश के भाषा-सौन्दर्य और प्रसादगुणता की प्रशंसा की गई है ।

४. मञ्जूषा, ९ (५४-५५) पृ. १६०-६१ । इसमें 'तासुश्रिया राजपरम्परासु' (रघु.६) इस श्लोक के मल्लिनाथकृत अर्थ को अशुद्ध प्रतिपादित किया गया है ।

५. ,, १०, ,, पृ. २०८-९ । इसमें 'तेषां महार्हासनसंस्थितानाम्' (रघु.६) इस श्लोक को प्रक्षिप्त माना गया है ।

६. ,, ,, पृ. २१८-१९ । इसमें डा. कुन्हन राजा के लेख 'रघुवंशे श्लोकः' में प्रकटित विचार का खण्डन है ।

७. मञ्जूषा, ९, पृ. ३६ । इसमें 'गेये को नु विनीता वाम्' (रघु. १५/६९) यह मल्लिनाथ द्वारा स्वीकृत पाठ ही समीचीन है, 'गेये केन विनीतौ वाम्' यह अन्य टीकाकारों द्वारा स्वीकृत पाठ समीचीन नहीं है, यह सिद्ध किया गया है ।

(बंगला में)--

(१) रघुवंशेर गाँथुनी—नारायण (पत्रिका), वङ्गवर्ष १३२५ श्रावण ।
(२) रघुते नारायण— ,, ,, भाद्रपद ।
(३) रघुकाव्ये बड़ो किसे— ,, ,, अग्रहायण ।
(४) रघुवंशे बाल्यलीला— ,, ,, पौष ।
(५) रामेर छेलेवेला— ,, ,, फाल्गुन ।
(६) रघुवंशे प्रेम— ,, ,, चैत्र ।
(७) रघुवंशे प्रेमविरह— ,, ,, १३२६ ज्येष्ठ ।

५. मालविकाग्निमित्र :—

(बंगला में)—

(१) इरावती—नारायण (पत्रिका), वङ्गवर्ष १३२३, ज्येष्ठ ।
(२) अग्निमित्रेर भांड़— ,, ,, १३२५, वैशाख ।

६. विक्रमोर्वशीय :—

(१) विक्रमोर्वशीयनान्दीश्लोकानुभवः[1]—अ. वे. गोपालाचार्य ।

(बंगला में)—

(१) विरहे पागोल— ,, ,, १३२४, ज्येष्ठ
(२) उर्वशीविदाय — ,, ,, १३२३, फाल्गुन ।

७. अभिज्ञानशकुन्तल :—

(१) शाकुन्तल गतस्याभिज्ञानस्य मूलम्[2]—डा. क्षितीशचन्द्र चट्टोपाध्याय ।

---

१. महाराज संस्कृत पाठशाला-पत्रिका, २७ (१९५१) पृ. १-१९ । इसमें नान्दी-श्लोकों के औचित्य तथा नाटक की कथावस्तु के साथ उनके सामञ्जस्य का प्रतिपादन किया गया है ।

२. मञ्जूषा, १२ (१९५७-५८) पृ. ४० । (इस लेख में "ददौ तस्य ततः प्रीतः स्वनामाङ्कोपशोभितम् । अङ्गुलीयमभिज्ञानं राजपुत्र्याः परन्तपः" (वा. रा. कि. कां. ४४/१२) यह श्लोक शाकुन्तल के अभिज्ञान का मूल माना गया है ।

(२) शाकुन्तलविमर्शः[१]—के. एस. कृष्णन् ।

(३) रामायणम् अभिज्ञानशाकुन्तलञ्च[२]—

(४) शकुन्तला[३] (अनूदित)—मूल लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुर ।

(५) शाकुन्तलीयम्[४]—पं० मुकुन्दशास्त्री खिस्ते ।

(६) शाकुन्तलायाः सखीद्वयम्[५]–सुरेन्द्रमोहन ।

(७) शाकुन्तलकथासंक्षेपः[६]–सोमनाथशास्त्री ।

(८) शकुन्तला-स्वगतम्[७]–वि. सुब्रह्मण्यम् ।

(९) अभिज्ञानशकुन्तलपाठविमर्शः[८]–डा. क्षितीशचन्द्र चट्टोपाध्याय ।

(१०) शाकुन्तलगतस्य श्लोकस्य सरलार्थः[९]— ,,

---

१. उद्यानम्, (१९२९-३०) ५, पृ. १-२ । (इस लेख में कथानक का विवेचन है ।)

२. जरनल आफ श्रीवेङ्कटेश्वर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट तिरुपति, भाग २, (१९४१) पृ. ३०-३३ ।

३. मञ्जूषा, १३ (१९५८-५९) १ पृ. ४-७, पृ. ९९-१०१ । इसमें शेक्सपियर के नाटक 'टेम्पेस्ट' तथा शाकुन्तल के काव्यसौन्दर्य की तुलनात्मक समीक्षा की गई है ।) .

४. सारस्वती सुषमा, ५ (सं० २००७), ४ पृ. १३८-४४ ।

५. संस्कृतभारती, ६ (१९२४), ३ जुलाई पृ. २९-३१ । इसमें अनसूया और प्रियंवदा का चरित्र-चित्रण है ।

६. संस्कृतम्, १७ (१९-११-४६).

७. ,, १९ (९-८-४९) पृ. १ । इसमें शाकुन्तल की काव्यसौन्दर्य-विषयक पद्यात्मक रचना है ।

८. मञ्जूषा, १३ (१९५८-५९) ४, पृ. ८३-८४ । इस में शाकुन्तल के "कामं प्रिया न सुलभा' इत्यादि श्लोक में 'तद्भावदर्शनायासि' के स्थान में 'तद्भाव-दर्शनाश्वासि' पाठ को सङ्गत माना गया है ।

९. ,, ,, ,, ६, पृ. १२०-२२ । इसमें 'श्लोकचतुष्टयम्' की रमणीयता पर प्रकाश डाला गया है ।

(११) अमरबाधा[1]–डा. क्षितीशचन्द्र चट्टोपाध्याय

(१२) शकुन्तलाविमर्शः[2]– ,,

(१३) शाकुन्तले कास्यचिच्छ्लोकस्यौचित्यचर्चा[3]—डा. सी. कुन्हन राजा।

(१४) अभिज्ञानशकुन्तलेऽभिनवतरो द्वापरः[4]—के. ए. रामलिङ्गशास्त्री।

(१५) अभिज्ञानशकुन्तलेऽभिनवतरस्य द्वापरस्य प्रत्नतमः वृतान्तः[5]–टी. रामकृष्ण।

(१६) शकुन्तला वा कुसुमं वा[6]–ए. के. भट्ट।

(१७) कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञान शकुन्तलम्[7]–यतीशचन्द्रभट्टाचार्य।

(१८) शाकुन्तलविमर्शः[8]—आजि. रामानुजय्यंगर।

(१९) शाकुन्तलसंविधानरामणीयकम्[9]–शतावधान श्रीनिवासाचार्य।

---

१. मञ्जूषा १२ (१९५७-५८) पृ. ३०९। इसमें शाकुन्तल की एतत्सम्बन्धी कुछ पंक्तियों का वर्णन है।

२. ,, ९ (५४-५५) १ पृ. १०-१४, २ पृ. ३१-३२, ३ पृ. ४१, ४, पृ. ६७, ५, पृ. ८३-८४ ६ पृ. ८२-९३, १२ पृ. २०९-१०।

३. मञ्जूषा, ९ (५४-५५) ८ पृ. १११-१२। इसमें 'अन्तर्हिते शशिनि सैव' (अंक ४) इस श्लोक को कालिदासकृत नहीं माना गया है।

४. संस्कृतसाहित्यपरिषत्पत्रिका (कलकत्ता), १२, (१९२९-३०), ६ पृ. २०६-९। इस लेख में शाकुन्तल के कतिपय सन्दिग्ध स्थलों पर प्रश्नोत्तर के रूप में विचार किया गया है।

५. ,, १२ (१९२९-३०), ७ पृ. २९०-५०।

६. ,, १३ (१९३०-३१), ३ पृ. ८०-८२, ४ पृ. १०५-७। इसमें 'नायिका का उपमान पुष्प क्यों है, इस पर विचार किया गया है।

७. ,, १९ (१९३६-३७), ४ पृ. ९७-१०४।

८. महाराज संस्कृत पाठशाला-पत्रिका, मैसूर, सम्पुट २ (१९२६) २ पृ. ६८-७७।

९. सहृदया, १६, १, पृ. ९-१६ ,, ,, २, पृ. २५-२८ ,, ,, ४, पृ. ६१-६४। ,, ,, ५, पृ. ७७-८० ,, ,, ६, पृ. ८९-९२ ,, ,, ११, पृ. १७१-७४।

(बंगला में)—

(१) कोमले कठोर–नारायण (पत्रिका), वङ्गवर्ष १३२४, आषाढ़।

(२) कण्वेर कोमल मूर्ति ,, ,, ,, श्रावण।

(३) कण्वेर कठोर मूर्ति ,, ,, ,, आश्विन-कार्तिक।

(४) शकुन्तलार मा ,, ,, ,, ,,

(५) दुष्यन्तेर भाँड़ ,, ,, ,, अग्रहायण।

(६) दुर्वासार शाप ,, ,, ,, पौष

(७) शकुन्तलाय हिन्दुयानी ,, ,, ,, माघ।

विशेष :—कालिदास के व्यक्तित्व, कृतित्व आदि के सम्बन्ध में, विभिन्न स्थानों से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में, आलोचनात्मक एवं शोधपूर्ण निबन्ध बराबर लिखे जाते हैं। विक्रमविश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्य प्रदेश) में प्रतिवर्ष सम्पन्न होने वाले 'कालिदास-समारोह' के अवसर पर प्रकाशित होने वाली विक्रम-पत्रिका (कालिदास, विशेष अंक) में भी कालिदास के सम्बन्ध में विविध निबन्ध प्रकाशित होते हैं। इस प्रकार कालिदास-सम्बन्धी निबन्धों की इयत्ता एवम् इत्थंरूपता नहीं है। अतः उपर्युक्त विवरण दिग्दर्शन मात्र है।

कालिदास के ग्रन्थों का संग्रह

(कालिदास ग्रन्थावली)

(१) कालिदासेर ग्रन्थावली[1] उत्पलेन्द्रमुखोपाध्याय।

(२) कालिदासग्रन्थावली[2]–आचार्य सीताराम चतुर्वेदी।

(३) कालिदासग्रन्थावली[3]–हिमालय बुकडिपो, हरद्वार।

---

१. वसुमती कार्यालय, कलकत्ता, वङ्ग सं. १३७८। मूल ग्रन्थों के साथ बंगला अनुवाद-सहित, यह ग्रन्थावली सम्भवतः सर्वप्राचीन कालिदासग्रन्थावली है।

२. अखिलभारतीय विक्रमपरिषद् काशी के लिए भारतीय प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़ से सं. २००७ में प्रकाशित, चौ. सं. सी. वाराणसी से प्राप्य।

३. केवल हिन्दी-अनुवाद।

(४) सेलेक्शन्स फ्रॉम कालिदास[१]—संस्कृत अकादमी, मैलापुर, मद्रास १९३० ।

(५) कालिदास-नाटक-कथामंजरी[२]–

(६) कालिदासग्रन्थावली[3]—पं. रामप्रतापत्रिपाठी ।

(७) कालिदासग्रन्थावली[४]–डा. रेवाप्रसादद्विवेदी ।

(८) दि कम्पलीट वर्क्स आफ[५] कालिास–वी० पी० जोशी ।

---

1. Selectians from Kalidasa (With an English translation). Sanskrit Academy My lapore, Madras 193o.
2. Vadhyar and Sons Kalpathy, palghat 1942.
३. चौ. स. सी. वाराणसी से प्राप्य ।
४. गम्भीर गवेषणापूर्ण विस्तृत भूमिका, पाठान्तर तथा रूपान्तर के साथ सुसमीक्षित मूल पाठ । नवीनतम समीक्षापूर्ण ग्रन्थावली संस्करण है । १९७६, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रकाशित चौ. सं सी. वाराणसी से प्राप्य ।
5. Lakhani Book Depot. Girgawn, Bombay. 1976

उपसंहार

महाकवि कालिदास का साहित्य भारतीय साहित्य जगत् का महान् प्रभावशाली प्रकाशस्तम्भ है। अपने प्रभा-पुञ्ज को चतुर्दिक् विस्तारित करने वाले इस प्रकाशस्तम्भ का प्रभाव भारतीय तथा वैदेशिक साहित्यकारों पर व्यापक रूप से पड़ा है। ऊपर लिखे गए विवरणों से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि भारतीय तथा विदेशी वद्वानों ने भी कालिदास के साहित्य का गम्भीरतया अध्ययन किया है। उनके काव्य-नाटकों ने भारतीय तथा विदेशी साहित्य-रसिकों को समान भाव से आकृष्ट किया है।

ऋतुसंहार—ऋतुओं की समग्रता के मनोहर वर्णनों से युक्त कालिदास का 'ऋतुसंहार' संस्कृत साहित्य का अद्वितीय ऋतुकाव्य है। संस्कृत के कवियों के समान हिन्दी आदि अन्य भारतीय भाषाओं के कवि भी कालिदास के ऋतुवर्णन से प्रभावित हैं। अंग्रेजी, लैटिन, जर्मन, फ्रेंच, सिंहली आदि विदेशी भाषाओं में तथा संस्कृत, हिन्दी, तामिल आदि भारतीय भाषाओं में ऋतुसंहार के विभिन्न संस्करण हुए हैं और इन भाषाओं में इस पर आलोचनात्मक ग्रन्थ एवं निबन्ध भी लिखे गए हैं।

मेघदूत—उदात्त कल्पना, काव्यात्मक रमणीयता तथा वर्णन-वैचित्र्य की दृष्टि से कालिदास का मेघदूत भारतीय तथा विदेशी काव्य-रसिकों में लोकप्रिय रहा है। इसकी कमनीय कल्पना से प्रभावित होकर परवर्ती साहित्यकारों ने लगभग डेढ सौ वर्षों तक दूतकाव्य-रचना में अपनी विशेष अभिरुचि दिखाई है। अभी भी दूतकाव्य-रचना की परम्परा अविच्छिन्न है[1]। भारत की सभी साहित्यिक भाषाओं में इसके संस्करण, इसके गद्यात्मक-पद्यात्मक अनुवाद, और इस पर लिखे गए आलोचनात्मक ग्रन्थ एवं शोधपूर्ण निबन्ध प्रभूततया उपलब्ध है।

विदेशों में भी 'मेघदूत' की ख्याति व्यापक रूप में दृष्टिगोचर होती है। प्रायः सभी विदेशी साहित्यिक भाषाओं में 'मेघदूत' पर लिखी गई टीका-टिप्पणियाँ,

---

१. संस्कृत-दूतकाव्य-रचना की परम्परा के सम्बन्ध में मेरे 'प्लवङ्गदूतम्' (उत्तर-प्रदेश-शासन द्वारा १९७६ ई० में पुरस्कृत) की भूमिका द्रष्टव्य है।

इसके गद्यात्मक तथा पद्यात्मक अनुवाद और इस पर किए जारहे शोधकार्य इसकी अतिशय लोकप्रियता को व्यक्त करते है।

अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, इतालियन, रूसी, चीनी, जापानी, स्वेडिश, डेनिश, जेच तिव्वती, नेपाली, सिहली आदि विदेशी भाषाओं में तथा संस्कृत, हिन्दी, तेलगु, तामिल, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, उड़िया, बंगला, मैथिली, भोजपुरी, मगही आदि भारतीय भाषाओं में मेघदूत के विभिन्न संस्करण हुए हैं और इन भाषाओं में इस पर समीक्षात्मक ग्रन्थ एवं निबन्ध भी लिखे गए है।

कुमार सम्भव :—

कालिदास की प्रथम महाकाव्य-कृति 'कुमारसम्भव' के काव्यात्मक सौन्दर्य ने भी भारतीय तथा विदेशी विद्वानों को आकृष्ट किया है। फलतः कुमारसम्भव के भी भारतीय एवं विदेषी भाषा-संस्करणों तथा इस पर लिखे गए अलोचनात्मक ग्रन्थों और निबन्धों की बहुलता दीख पड़ती है।

कुमारसम्भव के विदेशी-भाषा-संस्करण अंग्रेजी, लैटिन रूसी एवं फ्रेंच भाषा में मिलते हैं और इसके भारतीय-भाषा संस्करण संस्कृत, हिन्ही, बंगला तथा मैथिली भाषा में उपलब्ध हैं।

कुमारसम्भव पर उपर्युक्त विदेशी तथा भारतीय भाषाओं में आलोचनात्मक ग्रन्थ एवं निबन्ध भी लिखे गए हैं।

रघुवंश---संस्कृत के महाकाव्यों में रघुवंश की महती ख्याति है। यह संस्कृत का सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है। भारतवर्ष के समीविश्वविद्यालयों में यह महाकाव्य (आंशिक रूप में) पाठ्यग्रन्थ के रूप में निर्धारित है। विदेशों में भी प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत-शिक्षार्थियों को यह (आंशिक रूप में) पाठ्यग्रन्थ के रूप में पढ़ाया जाता है। इसी लिए इसके भारतीय तथा विदेशी संस्करणों एवं इस पर लिखे गए आलोचनात्मक ग्रन्थों और निबन्धों का आधिक्य है। अंग्रेजी, लैटिन, रूसी, फ्रेंच, जर्मन आदि विदेशी भाषाओं में तथा संस्कृत, हिन्दी, बंगला, तामिल आदि भारतीय भाषाओं में रघुवंश के विभिन्न संस्करण हुए है और इन भाषाओं में इस पर समीक्षात्मक ग्रन्थ एव निबन्ध भी लिखे गए हैं।

मालविकाग्निमित्र—कालिदास की प्रथम नाट्यकृति मालविकाग्निमित्र एक विशिष्ट शैली के नाट्यसम्प्रदाय का प्रवर्त्तक है। नायक राजा की अन्तःपुर में रहने वाली किसी राजकन्या में आसक्ति, विवाहिता रानी द्वारा उस प्रणय-व्यापार में विघ्न उपस्थापित करना, पीछे राजकन्या का वास्तविक परिचय हो जाने पर उसके साथ राजा का रानी द्वारा अनुगृहीत विवाह; संक्षेप में यही मालविकाग्निमित्र का वस्तु-विन्यास है। संस्कृत की रत्नावली, प्रियदर्शिका, कर्पूरमंजरी, कर्णसुन्दरी आदि नाटिकाओं तथा भवभूति जैसे सर्वश्रेष्ठ परवर्त्ती नाटककार के मालतीमाधव पर भी कालिदास की कल्पना तथा वस्तु-विन्यास का स्पष्ट प्रभाव दीख पड़ता है। मालविकाग्निमित्र के भी विभिन्न भाषाओं में संस्करण और इस पर लिखे गए आलोचनात्मक ग्रन्थ एवं निबन्ध मिलते हैं।

मालविकाग्निमित्र के विदेशी संस्करण—अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, इतालियन आदि भाषाओं में हैं और भारतीय संस्करण संस्कृत, हिन्दी, बंगला, मैथिली तामिल आदि भाषाओं में हैं।

मालविकाग्निमित्र पर इन विदेशी तथा भारतीय भाषाओं में आलोचनात्मक ग्रन्थ एवं निबन्ध भी लिखे गए हैं।

विक्रमोर्वशीय—विक्रमोर्वशीय नाट्यशैली की एक महत्त्वपूर्ण विधा 'त्रोटक' की सर्वोत्कृष्ट रचना है। मालविकाग्निमित्र और विक्रमोर्वशीय तत्कालीन राजाओं के अन्तःपुर के छल-प्रपञ्चों का यथार्थ चित्र उपस्थापित करते हैं। मालविकाग्निमित्र नायक की कामुकता एवं विलासिता का नग्न चित्र प्रस्तुत करने में यदि अप्रतिम है तो विक्रमोर्वशीय विरही नायक के पागलपन को दिखाने में बेजोड़ है। विक्रमोर्वशीय की कथा ऋग्वेद[१], शतपथब्राह्मण[२], मत्स्यपुराण[3], विष्णुपुराण[४], भागवतपुराण[५] तथा अन्य पुराणों में भी मिलती है। विदेशी विद्वानों के अनुसार विक्रमोर्वशीय की कथा का आधार लोकप्रिय दन्तकथा है। यह नाटक भी भारतीय

---

१. ऋग्वेद, १०।९५।
२. श. ब्रा., ११।५।१।
३. म. पु., अ. २४।
४. वि. पु. ४।६।
५. भा. पु. ९।१४।

तथा विदेशी विद्वानों के आकर्षण का विषय रहा है फलतः इसके संस्करणों की भी बहुलता है।

विक्रमोर्वशीय के विदेशी संस्करण—अंग्रेजी, लैटिन, फ्रेंच, जर्मन, जेंच, रूसी, स्वेडिश, इतालियन, स्पैनिश आदि भाषाओं में और भारतीय संस्करण संस्कृत, हिन्दी, तामिल, बंगला आदि भाषाओं में हुए हैं इन विदेशी तथा भारतीय भाषाओं में विक्रमोर्वशीय पर आलोचनात्मक ग्रन्थ एवं निबन्ध भी लिखे गए हैं।

अभिज्ञान शकुन्तल---मेघदूत के समान अभिज्ञानशकुन्तल की लोकप्रियता भी विश्व-साहित्य-जगत् में व्याप्त है। यूरोप में इस नाटक की ख्याति १८ वीं शताब्दी में हुई। उस समय वङ्ग प्रदेश के उच्चतम न्यायाधीश सरविलियमजोन्स ने १७८३ ई० में शाकुन्तल का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। विलियम ने कालिदास को भारत का शेक्सपीयर कहा है। इस अनुवाद के माध्यम से समस्त यूरोप भारतीय नाट्यकला से परिचित हुआ और उस पर विस्मय-विमुग्ध हुआ। विलियम के अनुवाद से आकृष्ट होकर विदेशी विद्वान् इस नाटक के अनुशीलन में प्रवृत्त हुए। १७९१ ई० में जार्ज फॉर्स्टर (Gearge Forster) ने विलियमजोन्स के अनुवाद का गद्यानुवाद जर्मन भाषा में प्रकाशित किया और उसकी एक प्रति उसने अपने मित्र जर्मन कवि गेटे ((Goethe) के पास भेज दी। विद्वान् कवि गेटे उस अनुवाद को पढ़ कर खुशी से नाच उठा था। उसने स्वयं जर्मन भाषा में शाकुन्तल का अनुवाद (१९७१ ई० में) किया और शाकुन्तल से प्रेरणा ग्रहण कर उसने अपने सुप्रसिद्ध नाटक 'फॉस्ट, (Faust) की रचना की[1]। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के

---

१. एच. एस. स्तेनबर्ग ने 'कैशलस इनशाइक्लोपीडिया' (द्वितीय भाग, पृ. १०९६) में लिखा है—"शकुन्तला फर्निश्ड गोयथे (गेटे) विथ सजेसन्स फौर दि प्रोलोग ऑफ फॉस्ट' ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत-प्राध्यापक मैक्डोलेन ने भी लिखा है कि यूरोपीय नाटकों में सुप्रसिद्ध फॉस्टनामक नाटक की भूमिका संस्कृत के विख्यात नाटक शाकुन्तल का आधार ग्रहण कर लिखी गई है।'

हेन (Hein) ने भी लिखा है—"Goethe made use of Shakuntala at the beginnging of Faust and that the idea of "Vorspiel auf dem theater" in Faust is taken from the prologue to ,Shakuntala". (Kalidasa by R. D. Karmakar, Lecture Series 4, P. 166.

संस्कृत-प्राध्यापक एच. एच. विलसन ने १८२७ ई० में मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशकुन्तल का अंग्रेजी अनुवाद कर इन तीनों नाटकों से यूरोप को परिचित कराया।

रूसी विद्वान् भी १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कालिदास की रचनाओं से परिचित हुए। रूसी भाषा में शाकुन्तल का प्रथम अनुवाद (चार अङ्कों तक) १७९२ ई० में हुआ। अनुवादकर्ता थे श्री एन. एम. करैमजिन। करैमजिन ने अपने अनुवाद की भूमिका में कालिदास की प्रशस्ति में लिखा है—कालिदास यूनान देश के सुप्रसिद्ध कवि होमर के समान महान थे।" रूस देश में कालिदास के साहित्य के अध्ययन में लोगों की प्रवृत्ति बढ़ रही है। लेनिनग्राड विश्वविद्यालय में कालिदास की कृतियों के व्यापक अध्ययन तथा अनुसन्धान की व्यवस्था की गई है। चीनी भाषा में शाकुन्तल के सात अनुवाद प्रकाशित हो चुके है; और १९५७ ई० में पेकिंग के रङ्गमञ्च पर शाकुन्तल का सफल मञ्चन भी हुआ है। अमेरिका में भी शाकुन्तल का प्रचार है। अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रदेश में सैक्रेमेंटो नामक स्थान में स्थित नाटकसमिति ने शाकुन्तल का सफल अभिनय प्रस्तुत किया है।

विदेशों में कालिदास की कृतियों का व्यापक अनुवाद हुआ है और अभी भी हो रहा है। गत तीन शताब्दियों से विदेशी विद्वान् कालिदास की कृतियों का अध्ययन, उनका रसास्वादन, उनकी आलोचना तथा उन पर गवेषणात्मक कार्य करने में लगे हुए हैं।

अभिज्ञानशकुन्तल के अंग्रेजी, लैटिन, जर्मन, रूसी, फ्रेंच, चीनी, जेच आदि विदेशी भाषाओं में तथा संस्कृत, हिन्दी, बंगला, मैथिली, गुजराती, मराठी, तामिल, तेलगु, कन्नड़, उड़िया, उर्दू आदि भारतीय भाषाओं में विभिन्न संस्करण हुए हैं और इन भाषाओं में अभिज्ञानशकुन्तल पर समीक्षात्मक ग्रन्थ एवं निबन्ध भी लिखे गए हैं।

विशेष—कालिदास की कृतियों के विभिन्न भाषीय संस्करणों तथा कालिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विभिन्न भाषाओं में लिखे गए समीक्षात्मक ग्रन्थों एवं निबन्धों की संख्या आदि के विस्तृत विवरण के ज्ञान के लिए इस ग्रन्थ के तत् तत् प्रकरण द्रष्टव्य हैं।

इस सन्दर्भ में वाराणसी के 'सार्वभौम-संस्कृत-प्रचार-कार्यालय' हौंजकटोरा काशी, के सञ्चालक विद्वद्वर पं० श्रीवासुदेवद्विवेदी से प्राप्त कालिदास का साहित्यिक विवरण भी उल्लेख्य है। उसके अनुसार कालिदास-सम्बन्धी ग्रन्थों की भाषानुसारिणी संकलित संख्या इस प्रकार है—

भारतीय भाषाओं में—असमिया ४, तेलगु १५, तामिल १०, कन्नड़ १४, गुजराती ५, मराठी ७, मणिपुरी २, मलयालम् १५, उड़िया ५, बंगला १७, मैथिली ३, हिन्दी ५५, उर्दू ३, पंजाबी १।

विदेशी भाषाओं में—अंग्रेजी ५२, जर्मन ६, परसियन १, रसियन १, चीनी १, तिब्बती १, लैटिन ३, इटालियन १, डेनिश १, पोलिश १, हंगेरियन १, इरानी २, फ्रेंच १०, सिंहली २।

श्रीद्विवेदी ने वाराणी में १६७७ ई० में आयोजित कालिदास-प्रदर्शनी में कालिदास-सम्बन्वी ग्रन्थों का प्रदर्शन किया था। दुर्लभ ग्रन्थों के प्राप्ति-स्थान, मूल्य आदि भी उन्होंने सूचनापट्टों पर सूचित किए थे। उस प्रदर्शनी में प्रदर्शनार्थ विभिन्न स्थानों से संगृहीत कालिदास-सम्बन्धी ग्रन्थों (भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में लिखित) की संख्या इस प्रकार थी—

अभिज्ञानशकुन्तल के विषय में ४५, मालविकाग्निमित्र के विषय में १२, विक्रमोर्वशीय के विषय में ६, मेघदूत के विषय में ६४, रघुवंश के विषय में २७, कुमारसम्भव के विषय में २४ तथा ऋतुसंहार के विषय में १२; कालिदासग्रन्थावली के नाम से भी कालिदास के काव्यनाटकों के संग्रह-ग्रन्थ १०; इनके अतिरिक्त कालिदास-विषयक आलोचनात्मक ग्रन्थ ५७, निबन्ध ग्रन्थ ३०, जीवनवृत्त-सम्बन्धी ग्रन्थ २० और कालिदास के जीवन एवं कृतित्व पर आधारित लघुकृतियां १५; इस प्रकार लगभग ३०० पुस्तकें उस प्रदर्शनी में संगृहीत थीं[1]।

कालिदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के सम्बन्ध में निम्नलिखित ग्रन्थ विशेषतया द्रष्टव्य हैं —

विदेशी विद्वानों के—(१) डा. वाल्टररूबेन-कालिदास (ह्यूमन मीनिंग्स आफ हिज वर्क्स और (२) प्रो. ए. शार्प 'कालिदासलेक्सिकों'।

---

१. मैं (लेखक) स्वयं उस प्रदर्शनी में उपस्थित था और मैंने श्रीद्विवेदीजी के कार्यालयीय पुस्कालय में प्राप्य पुस्तकों का विवरण आकलित किया था।

भारतीय विद्वानों के—(१) भगवतशरणउपाध्याय–कालिदास (जीवन और साहित्य), कालिदास और उनका युग, (२) डॉ. के. सी. पाण्डेय–ए हिस्टॉरिकल ऐण्ड फिलॉसोफिकल स्टडी ऑफ कालिदास, (३) डॉ. चन्द्रबलीपाण्डेय-कालिदास, (४) डॉ. रमाशंकरतिवारी—कालिदास, (५) प्रो. वासुदेवविष्णुमिराशी–कालिदास, (६) डॉ. रामजी उपाध्याय–कालिदास:, (७) डॉ. आद्याप्रसादमिश्र–कालिदास-साहित्यम्; (८) डा. रेवाप्रसादद्विवेदी-कालिदासग्रन्थावली; (९) डॉ. सत्यपालनारङ्ग बिब्लिओग्राफी आफ कालिदास। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'प्राचीनसाहित्य-काव्येर उपेक्षिता' से कालिदास का आलोचनात्मक परिचय तथा मेरुतुङ्गाचार्य की 'प्रबन्ध चिन्तामणि' एवं बल्लालसेन के 'भोज-प्रबन्ध' से कालिदास के दन्तकथा पर आधारित जीवन चरित का किञ्चित् परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

o: —— :o